पुरोहित सहायक

व्यावसायिक पाठ्यक्रम स्तर 3.0

राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त

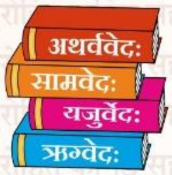

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - 456006 (म.प्र.)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in

पुरोहित सहायक

प्रधान सम्पादक

प्रो. विरूपाक्ष वि जड्डीपाल्

सचिव

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

लेखकगण

श्री सौरभ बंडोपन्त शास्त्री
घनान्त (शिक्षक शुक्लयजुर्वेद काण्व)

श्री राकेश शर्मा
क्रमान्त (शिक्षक शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिन)

डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा
एम०ए०, एम० फिल०, पी०एचडी०(शैक्षिक सहायक)

प्रधान संयोजक

डॉ.अनूप कुमार मिश्र

सहायक निदेशक, प्रकाशन एवं शोध अनुभाग

आवरण एवं सज्जा : श्री शैलेन्द्र डोडिया

तकनीकी सहयोग : सौ. मिताली

© महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जयिनी

ISBN : मूल्य :

संस्करण : 2024 प्रकाशित प्रति : PDF

प्रकाशक : महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेदविद्या प्रतिष्ठान
(शिक्षामन्त्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था)
वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - 456006 (म.प्र.)
Email: msrvvpujn@gmail.com, Web: msrvvp.ac.in
दूरभाष (0734) 2502255, 2502254

भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की पाठ्यचर्या एवं राष्ट्रीय कौशल भारत मिशन का उद्देश्य शिक्षण विकास एवं प्रशिक्षण के द्वारा शिक्षार्थियों का सर्वांगीण विकास कर रोजगार प्रदान करना है। महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान उज्जैन सदैव शैक्षिक नवाचार के क्षेत्र में अग्रसर रहा है अतः आदर्श वेद विद्यालयों, पाठशालाओं एवं भारत के विद्यालयों में वैदिक कौशल विकास शिक्षण एवं प्रशिक्षण के द्वारा अनेकानेक गतिविधियों के माध्यम से शिक्षार्थियों को रोजगार के अवसर प्रदान कर रहा है, जिससे शिक्षार्थी प्रशिक्षण के ज्ञानार्जन द्वारा स्वयं को अद्यतन एवं जागृत कर सकेंगे तथा इसके विषय ज्ञान का लाभ अपने दैनन्दिन जीवन के साथ-साथ आजीविका प्राप्त कर राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे।

पुरोहित सहायक पाठ्यपुस्तक में इकाईयों के विषयों को विविध आयामों के साथ सहज एवं प्रभावी तरह से प्रस्तुत किया गया है लेकिन फिर भी कोई दोष हों तो हमें सूचित अवश्य करें क्योंकि हमारा परम उद्देश्य वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर वैदिक ज्ञान को कौशल विकास के माध्यम से जन-जन पहुँचाना है। अतः पाठ्य पुस्तकों की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए विद्वानों के समस्त सुझावों का स्वागत है।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

भूमिका

ॐ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेयनाय॥ (शु.य.का.३५/१८)

प्रत्येक जीवमात्र को अपने-अपने पुण्य तथा पाप कर्मानुसार नाना प्रकार की योनियों में जन्म प्राप्तकर सुख-दुःख प्राप्त होता है। परमात्मा की कृपा से ही आत्मकल्याणार्थ मनुष्य जन्म प्राप्त होता है। **जन्तुनां नरजन्म दुर्लभमतः पुंसत्वं ततो विप्रता।तस्माद्वैदिकधर्ममार्गपरता विद्वत्त्वमस्मात्परम्। आत्मानात्मविवेचनं स्वनुभावो ब्रह्मात्मना संस्थितिः। मुक्तिर्नो शतजन्मकोटिसुकृतैः पुण्यैर्विना लभ्यते॥ (विवेकचूडामणि)**

प्रत्येक जीव को धर्माचरणपूर्वक अपने आत्मकल्याणार्थ प्रयत्न करना चाहिए। तदर्थ वेद,पुराणादि ग्रन्थों मे अनेक प्रकार के मार्ग प्रदर्शित किए हैं, जिनके अवलम्बन,अनुष्ठान करने से निश्चित ही हम अपना तथा समाज का कल्याण कर सकते है। स्वभावतः प्रत्येक अंश अपने अंशी की ओर आकृष्ट होता है , जैसे- दीपक जलाने पर स्वभावतः उसकी लौ (ज्वाला) आकाश मण्डल मे स्थित भगवान् सूर्य की ओर आकृष्ट होती है।तद्वत ही प्रत्यक जीव का भी कल्याण अपने अंशी परब्रह्म परमात्मा की ओर अनुगमन धर्मकर्म का अवलम्बन करने से होता है। वैदिक ऋषियों ने इस सन्दर्भ में वेद, पुराण, आगम आदि ग्रन्थों से अनेक प्रकार के पूजन, व्रतानुष्ठान आदि के अनेक कर्मकाण्ड ग्रन्थों की रचना की जिसके सम्यक आचरण से हम आधिदैविक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक त्रिविध प्रकार के तापोपशमनपूर्वक ऐहिक–आमुष्मिक पुण्यफलों की प्राप्ति कर सकते हैं।

पुरोहित शब्द हमें सर्वप्रथम विश्व के आद्यग्रन्थ ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र से प्राप्त होता है।

ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥ (ऋग्वेद 1.2)

धार्मिक अनुष्ठान के निर्वहन के लिए पुरोहित की आवश्यकता होती है, कर्मकाण्डीय पूजानुष्ठान से पापक्षयपूर्वक पुण्यार्जन द्वारा यजमान का हित साध्य कराने वाले को पुरोहित कहते है। पुरोहित वह होता है जो उत्तम प्रकार से वेदादि अध्ययन किया हुवा हो और धर्मशास्त्रादि ग्रन्थों का सम्यक ज्ञाता हो तथा स्वयं धर्माचरण से रहता हो।

इस पाठ्यपुस्तक को सर्वसामान्य पौरोहित्य कर्म को जानने की दृष्टी से निर्माण किया गया हैं। किसी भी व्रताचरण,अनुष्ठान,पूजन आदि करने के लिए पञ्चाङ्ग का ज्ञान होना नितान्त आवश्यक होता है। जिससे हम उससे हम उस कर्म का संपूर्ण फल प्राप्त कर सकते हैं। इस ग्रन्थ की प्रथम इकाई में कौशल भारत मिशन एवं पुरोहित सहायक की भूमिका का वर्णन किया गया है, जिससे हम कौशल प्राप्त आजीविका प्राप्त कर सकें। द्वितीय इकाई में पीठनिर्माणका परिचय तथा उसके विधि-विधान को संक्षिप्तरूप मे वर्णित किया गया हैं। तृतीय इकाई में पञ्चाङ्गपूजन के पूर्वार्ध के अन्तर्गत गणपतिपूजन तथा पुण्याहवाचनसामान्य के विधान का प्रयोग है। चतुर्थ इकाई के अन्तर्गत पञ्चाङ्गपूजन उत्तरार्ध में मातृकापूजन, नान्दीश्राद्ध एवं ऋत्विग्वरणपूजन की प्रयोग विधि का ज्ञान है। पञ्चम इकाई में वैदिक आरम्भिक यज्ञ विधान की पद्धति के अनुसार प्रयोग विधि। छठी इकाई में नैमित्तिक पूजन के हेतु नवग्रहपूजाविधान एवं सत्यनारायणव्रतकथाविधि को दिया गया हैं। सप्तम इकाई में परायण विधि का परिज्ञान। अष्टम इकाई में देवताओं के वैदिक सूक्त तथा नवम इकाई में देवताओं के स्तोत्रों को दिया गया हैं।

भारतसरकार के आत्मनिर्भर भारत मिशन को कौशल विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत इस पाठ्यक्रम का NCEVT तथा महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान,उज्जैन के द्वारा संचालन किया जा रहा है, जिससे वेदाध्यायी छात्रों को एक कुशल पुरोहित बनकर पौरोहित्य कर्म के द्वारा हमारी वैदिक आर्ष परम्परा का निर्वाहक बनने का अवसर प्राप्त हों।

श्री सौरभ बंडोपन्त शास्त्री

विषयानुक्रमणिका

इकाई	पृष्ठसंख्या
इकाई 1 : कौशल भारत मिशन एवं पुरोहित सहायक की भूमिका का परिचय	1-13
1.1. राष्ट्रीय कौशल भारत मिशन	1
1.2. राष्ट्रीय कौशल भारत मिशन के उद्देश्य	1
1.3. कौशल विकास और उद्यमशीलता मन्त्रालय	2
1.4. मंत्रालय का उद्देश्य	2
1.5. एनएसडीए की स्थापना	3
1.6. राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण परिषद(एनसीवीईटी)	4
1.7. एनसीवीईटी की विशेषताएँ	5
1.8. राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीवीईटी) के उद्देश्य	6
1.9. एनसीवीईटी के मुख्य कार्य	11
इकाई 2 - पीठनिर्माण	14-21
2.1 गणपति	14
2.2 पुण्याहवाचन	15
2.3 षोडशमातृका	15
2.4 नवग्रहमण्डल पीठनिर्माण, पूजन एवं पूर्व सज्जता	17
2.5 पूजनपूर्व सज्जता - सामान्य पूजा विधि	20
इकाई 3 - पञ्चाङ्गपूजन पूर्वार्ध	22-48
3.1 गणपतिपूजन	22
3.2 पुण्याहवाचन	37
इकाई 4 - पञ्चाङ्गपूजन उत्तरार्ध	49-62

4.1	मातृ का पूजन प्रयोग	49
4.2	नान्दीश्राद्ध	52
4.3	आचार्यादि ऋत्विक् वरण	57
इकाई 5 - आरम्भिक यज्ञ विधान		63-75
5.1	दिग्रक्षण	63
5.2	पञ्चगव्यकरणम्	64
5.3	पञ्चभूसंस्कारपूर्वक अग्निस्थापन	66
5.4	कुशकण्डिका (स्थालीपाक)	69
इकाई 6 - नैमित्तिक पूजन		76-108
6.1	नवग्रहपूजाविधान	76
6.2	सत्यनारायणव्रतकथाविधि	84
इकाई 7 - पारायणविधि		109-111
7.1	सप्तशतीपारायणविधि	109
इकाई 8 - वैदिक सूक्त		112-119
8.1	प्रातःसूक्त	112
8.2	त्रिसुपर्णसूक्त	113
8.3	स्वस्तिवाचन	115
8.4	श्रीसूक्तम् (स्वशाखानुसार)	116
इकाई 9 - स्तोत्र		120-133
9.1	नवग्रहस्तोत्र	120
9.2	श्री विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र	122
9.3	अन्नपूर्णा स्तोत्र	120

इकाई 1 :

कौशल भारत मिशन एवं पुरोहित सहायक की भूमिका का परिचय

1.1. राष्ट्रीय कौशल भारत मिशन – 15 जुलाई, 2015 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रीय कौशलभारत मिशन का शुभारंभ किया। कुशल भारत, भारत सरकार की एक पहल है जो कौशल प्रशिक्षण के द्वारा देश के युवाओं का व्यक्तिगत विकास कर उनको सशक्त उद्यमी और अधिक उद्यमशील बनाकर उनका तथा देश के आर्थिक विकास को उन्नत करके कुशल भारत और समृद्ध भारत बनाने के लिए शुरू किया गया है। राष्ट्रीय कौशल मिशन के अध्यक्ष माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी हैं।

भारत की 65% युवा आबादी को कौशल विकास के माध्यम से उद्यमशील बनाकर देश को एक वैश्विक शक्ति बना सकते हैं। अतः कुशल भारत सम्पूर्ण देश के 40 क्षेत्रों में पाठ्यक्रम प्रदान करता है जो राष्ट्रीय कौशल अर्हता मानक के तहत उद्योग और सरकार दोनों द्वारा मान्यता प्राप्त मानकों सहित हैं। यह पाठ्यक्रम एक शिक्षार्थी को कार्य के व्यावहारिक समन्वय के साथ-साथ उसको तकनीकी रूप से उद्यम करने में सक्षम बनाता है।

1.2. राष्ट्रीय कौशल भारत मिशन के उद्देश्य

- कौशल विकास का उद्देश्य युवाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण के द्वारा आजीविका प्रदान करना है।
- यह कौशल औपचारिक शिक्षा के साथ कौशल प्रशिक्षण के द्वारा उद्यमिता क्षमता में गुणवत्तापूर्ण परिणाम लाता है।

- कौशल विकास राष्ट्रीय मानकों के तहत प्रौद्योगिकी के माध्यम से कार्य क्षमता को बढ़ाना है।
- युवाओं का व्यक्तिगत विकास के साथ- साथ देश की आर्थिक वृद्धि को शिखर पर ले जाना है।

1.3. कौशल विकास और उद्यमशीलता मन्त्रालय-

कौशल विकास के द्वारा युवाओं की आजीविका क्षमता को बढ़ाने हेतु केन्द्र सरकार ने कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय (एमएसडीई) का 26 मई 2014 को गठन किया। यह मन्त्रालय कौशल विकास के समस्त प्रयासों का समन्वय करने, कुशल जनशक्ति की मांग और आपूर्ति के बीच के अन्तर को दूर करने, व्यावसायिक और तकनीकी प्रशिक्षण ढांचे का निर्माण करने, कौशल उन्नयन करने, न केवल मौजूदा रोजगारों हेतु, बल्कि सृजित की जाने वाली नौकरियों के लिए भी नए-नए कौशलों का निर्माण करने के लिए अहर्निशम प्रयासरत है।

1.4. मंत्रालय का उद्देश्य- 'कुशल भारत' के दृष्टिकोण के लक्ष्यों को प्राप्त करने और उच्च मानकों के साथ बड़े पैमाने पर कुशल बनाना है। इन पहलों में इसकी सहायता करने के लिए निम्न संस्थाएँ कार्यरत हैं - प्रशिक्षण महानिदेशालय (डीजीटी), राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण परिषद (एनसीवीईटी), राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी), राष्ट्रीय कौशल विकास निधि (एनएसडीएफ़) और 37 क्षेत्र कौशल परिषदें (एसएससी) के साथ-साथ 33 राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान [एनएसटीआई/एनएसटीआई (महिला)], डीजीटी के अंतर्गत लगभग 15000 औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) और एनएसडीसी के साथ 187 प्रशिक्षण

भागीदार पंजीकृत हैं। मंत्रालय ने कौशल विकास केंद्रों, विश्वविद्यालयों और इस क्षेत्र के अन्य गठबन्धनों के साथ कार्य कर रहा है। इनके अतिरिक्त, संबंधित केंद्रीय मन्त्रालयों, राज्य सरकारों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, उद्योग एवं गैर-सरकारी संगठनों के साथ कौशल विकास को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए कार्य कर रहा है तथा देश के कार्यबल को पुन: सुदृढ़ और सक्रिय कर रहे हैं; तथा युवाओं को घरेलु उद्यमों से लेकर अंतरराष्ट्रीय रोजगार और विकास के हेतु तैयार कर रहें हैं।

1.5 एनएसडीए की स्थापना- जून 2013 में सरकार और निजी क्षेत्र के कौशल विकास प्रयासों में समन्वय एवं सामंजस्य स्थापित करने तथा राष्ट्रीय कौशल योग्यता ढांचे (एनएसक्यूएफ) को संचालित करने के लिए की गई थी, जिससे कि यह सुनिश्चित किया जा सके कि गुणवत्ता और मानक क्षेत्र विशेष की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। इसके अतिरिक्त एकल एकीकृत योग्यता-आधारित ढांचे को अधिसूचित किया गया, राष्ट्रीय कौशल योग्यता ढांचे (एनएसक्यूएफ) को 27 दिसंबर 2013 को अधिसूचित किया गया। परन्तु इनमें अनेक हितधारक विभिन्न मानकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे थे, जिनमें मूल्यांकन और प्रमाणन प्रणालियों की बहुलता थी, जो तुलनीय नहीं थे, तथा इससे व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रणाली पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा था, तथा इस प्रकार देश के युवाओं की रोजगार क्षमता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा था। व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रणाली और देश के युवाओं की रोजगार क्षमता पर भी प्रतिकूल प्रभाव न पड़े इसलिए राष्ट्रीय व्यावसायिक प्रशिक्षण परिषद (एनसीवीटी) की स्थापना हुई। जो 1956 के एक प्रस्ताव के माध्यम से औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) को विनियमित करने के लिए की गई थी, जो दीर्घकालिक प्रशिक्षण

प्रदान करते हैं। अल्पकालिक कौशल पारिस्थितिकी तंत्र को राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी), सेक्टर कौशल परिषदों (एसएससी), कौशल विकास मंत्रालय और अन्य कौशल मंत्रालयों के माध्यम से विनियमित किया गया।

1.6 राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण परिषद(एनसीवीईटी) - राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण परिषद की स्थापना भारत सरकार द्वारा 05 दिसंबर, 2018 के माध्यम से पूर्ववर्ती राष्ट्रीय कौशल विकास एजेंसी (एनएसडीए) और राष्ट्रीय व्यावसायिक प्रशिक्षण परिषद (एनसीवीटी) के कार्यों एवं जिम्मेदारियों को समाहित करके एक नियामक निकाय के रूप में की गई है और इसे 1 अगस्त 2020 से प्रारंभ कर मानकों को स्थापित करने, व्यापक नियमों को विकसित करने और व्यावसायिक शिक्षा, प्रशिक्षण और कौशल पारिस्थितिकी संस्थाओं, मूल्यांकन एजेंसियों और कौशल सूचना प्रदाताओं को मान्यता देने और उनके कामकाज की निगरानी करना है।

यह एक व्यापक राष्ट्रीय विनियामक के रूप में कार्य करता है, जिसका कार्य व्यावसायिक शिक्षा, प्रशिक्षण एवं कौशल (वीईटीएस) पारिस्थितिकी तन्त्र के लिए मानक स्थापित करना तथा व्यापक विनियम एवं दिशानिर्देश तैयार करना है, साथ ही सभी स्तरों पर शैक्षणिक शिक्षा में इसके एकीकरण को सुनिश्चित करना है। इसकी भूमिका मजबूत उद्यमिता सहभागिता सुनिश्चित करना तथा गुणवत्ता बढ़ाने और उच्च परिणाम प्राप्त करने के उद्देश्य से बहु-स्तरीय विनियमों को लागू करना है।

राजपत्र अधिसूचना के अनुसार 5 दिसंबर, 2018 राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण परिषद के रूप में गठित परिषद का नेतृत्व अध्यक्ष करता है और इसमें अध्यक्ष के अतिरिक्त,

दो (2) कार्यकारी सदस्य, तीन (3) गैर-कार्यकारी सदस्य और एक (1) मनोनीत सदस्य होता है। इन सदस्यों का चयन कैबिनेट सचिव की अध्यक्षता वाली खोजसह चयन समिति की सिफारिशों के आधार पर किया जाता है, यही आम सभा में भी शामिल होते है, जिसकी अध्यक्षता कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई) के मंत्री करते हैं और एनसीवीईटी को समग्र मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए राज्यों और उद्योग के प्रतिनिधि शामिल होते हैं।

1.7 एनसीवीईटी की विशेषताएँ

- कौशल पारिस्थितिकी तंत्र में लगे निकायों के कामकाज के लिए एक समान मानक बनाने हेतु दिशानिर्देश तैयार करने तथा उनकी निगरानी और पर्यवेक्षण के लिए तंत्र विकसित करने के लिए एक एकल नियामक निकाय की आवश्यकता महसूस की गई, जिससे कौशल में गुणवत्ता सुनिश्चित हो सके।
- खंडित विनियामक प्रणाली को एकीकृत करना और व्यावसायिक शिक्षा, प्रशिक्षण और कौशल मूल्य श्रृंखला में गुणवत्ता आश्वासन को शामिल करना है। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य उच्च-स्तरीय कौशल वाले कार्यबल का निर्माण करना, रोजगार क्षमता में सुधार करना और भारतीय अर्थव्यवस्था के तेज़ विकास में योगदान देना और भारत को दुनिया की कौशल राजधानी बनाना है। एनसीवीईटी यह सुनिश्चित करने के लक्ष्य के साथ काम करता है कि भारत में व्यावसायिक शिक्षा, प्रशिक्षण और कौशल (वीईटीएस) उच्च गुणवत्ता वाले हों, उद्योग की ज़रूरतों को पूरा करें और सभी के लिए सुलभ हों।

- सहायक विनियामक ढाँचा स्थापित करने के अलावा, एनसीवीईटी ने अपने अधिकार क्षेत्र में विभिन्न दिशा-निर्देश और नीतियाँ तैयार और अधिसूचित की हैं। इनमें व्यावसायिक शिक्षा, प्रशिक्षण और कौशल (VETS) मूल्य श्रृंखला में आवश्यक प्रक्रियाएँ और हितधारक शामिल हैं, जिनका उद्देश्य गुणवत्ता को बनाए रखना है। इन पहलों का उद्देश्य व्यावसायिक शिक्षा, प्रशिक्षण और कौशल ढाँचों और प्रक्रियाओं के लचीलेपन को बढ़ाना, उद्योग और व्यापक कौशल पारिस्थितिकी तंत्र की उभरती ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उनकी प्रभावशीलता और दक्षता को बढ़ाना है, साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय ऋण ढाँचे (NCF) के अनुरूप सरकार के व्यापक दृष्टिकोण में योगदान देना है।

1.8 राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीवीईटी) के उद्देश्य-

- माननीय प्रधानमंत्री के विजन के साथ संरेखित करना।
- व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण में उत्कृष्टता और नवीनता सुनिश्चित करके भविष्य के कार्यबल को सशक्त बनाना है, जिससे कि व्यक्ति अपनी पूर्ण क्षमता प्राप्त कर सकें और वैश्विक अर्थव्यवस्था की गतिशील आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।
- व्यावसायिक प्रशिक्षण और शिक्षा के लिए मजबूत मानकों और गुणवत्ता ढांचे की स्थापना और क्रियान्वयन करके भारत में एक सुसंगत, सुसंगत और एकीकृत कौशल विकास पारिस्थितिकी तंत्र बनाना है, ताकि देश में संपूर्ण व्यावसायिक शिक्षा प्रशिक्षण और कौशल (वीईटीएस) प्रणाली और मूल्य श्रृंखला में स्थिरता, जवाबदेही और

उत्कृष्टता सुनिश्चित की जा सके और बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकें और भारत को 'विश्व की कौशल राजधानी' बनाया जा सके।

- सशक्तिकरण, परिवर्तन, उत्कृष्टता और नवाचार पर जोर देता है, कौशल बढ़ाने, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने और उद्योग की आवश्यकताओं को पूरा करने के लक्ष्यों के साथ संरेखित करता है, जो उद्योग की जरूरतों के अनुरूप कार्यबल को प्रशिक्षित करके उद्योग की आवश्यकताओं को पूरा करता है, जिससे कार्यबल की रोजगार क्षमता में सुधार होता है और देश के आर्थिक विकास में योगदान मिलता है। यह वैश्विक नौकरी बाजार के लिए व्यक्तियों को तैयार करने के महत्व पर भी प्रकाश डालता है, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय रोजगार प्रवृत्तियों और जरूरतों को संबोधित करता है।
- व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र में मान्यता, विनियमन और निगरानी के लिए गतिशील, गुणवत्ता-केंद्रित प्रणालियाँ स्थापित करना है।
- सम्पूर्ण देश में उच्च गुणवत्ता वाली व्यावसायिक शिक्षा, प्रशिक्षण और कौशल प्रदान करना। यह सुनिश्चित करता है कि बुनियादी ढांचा, प्रशिक्षक, पाठ्यक्रम और सामग्री उद्योग की मांगों को पूरा करती है।
- आजीवन सीखने के अवसर पैदा करना, व्यक्तियों को रोजगार और उद्यमिता के लिए आवश्यक कौशल और योग्यता प्रदान करना।

- प्रशिक्षण, मूल्यांकन और प्रमाणन के लिए मानक और दिशा-निर्देश निर्धारित करने, व्यावसायिक शिक्षा को उद्योग की जरूरतों के साथ जोड़ने और निरंतर और आजीवन सीखने और कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है।
- उद्योग और अर्थव्यवस्था की उभरती जरूरतों के लिए प्रासंगिकता बनाए रखना और इसकी रणनीति को रेखांकित करता है।
- भारत को "विश्व की कौशल राजधानी" के रूप में स्थापित करने के लिए, युवाओं को वैश्विक रूप से मानक कौशल से लैस करने पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। यह पहल पूर्ण जनसांख्यिकीय लाभांश की प्राप्ति और 'आत्मनिर्भर भारत' के क्रियान्वयन का समर्थन करती है।
- वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता: सभी स्तरों पर वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी कुशल कार्यबल का विकास करना, वर्तमान और भविष्य की कौशल आवश्यकताओं और वैश्विक कार्यबल की आवश्यकताओं को संबोधित करते हुए कौशल भारत पहल के तहत राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (एनएसक्यूएफ) के साथ व्यावसायिक और कौशल शिक्षा को संरेखित करना।
- गतिशील संरेखण: उभरते उद्योग की जरूरतों को पूरा करने के लिए एनएसक्यूएफ को समायोजित करना, युवाओं को सशक्त बनाना और कौशल, अपस्किलिंग, री-स्किलिंग और पूर्व शिक्षण की मान्यता (आरपीएल) के माध्यम से कार्यबल उत्पादकता को बढ़ाना।

- आकांक्षी व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण (VET) को एक सम्मानित, आजीवन कैरियर विकल्प के रूप में आगे बढ़ाना, तथा इसे मुख्यधारा की शिक्षा के साथ एकीकृत करना, ताकि व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ जुड़ी सामाजिक पदानुक्रम को समाप्त किया जा सके।

- आकांक्षी व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण (VET) को एक सम्मानित, आजीवन कैरियर विकल्प के रूप में आगे बढ़ाना, तथा इसे मुख्यधारा की शिक्षा के साथ एकीकृत करना, ताकि व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ जुड़ी सामाजिक पदानुक्रम को समाप्त किया जा सके।

- एकीकृत शिक्षा प्रणाली: व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली (वीईटीएस) को स्कूल, उच्च, तकनीकी और विश्वविद्यालय शिक्षा के साथ मिलाना।
- क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर गतिशीलता, जिससे कई प्रवेश और निकास बिंदु सक्षम होते हैं। विश्लेषण, मूल्यांकन, संश्लेषण, रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान और नवाचार जैसे उन्नत कौशल पर विशेष जोर देंना।
- राष्ट्रीय ऋण ढांचा: व्यावसायिक और सामान्य शिक्षा क्षेत्रों के बीच प्रशिक्षुओं की गतिशीलता में सुधार करने के लिए एक मजबूत राष्ट्रीय ऋण ढांचा विकसित और कार्यान्वित करना।
- परिणाम-केंद्रित कौशल से रोजगार, स्वरोजगार, उद्यमशीलता और विदेश में नौकरी के अवसरों को बढ़ावा देता है।

- कौशल प्रणाली की अखंडता, पारदर्शिता और दक्षता सुनिश्चित करने, स्वायत्तता, सुशासन और सशक्तिकरण के माध्यम से नवाचार और रचनात्मक समाधान को बढ़ावा देने के लिए एक "हल्का लेकिन सख्त" नियामक ढांचा लागू करना।
- उद्योग और कौशल परिवेश की गतिशील आवश्यकताओं के अनुरूप उनकी प्रभावकारिता और अनुकूलनशीलता को बढ़ाने के लिए कौशल रूपरेखा और प्रक्रियाओं में सुधार करना।
- बहु-कौशल और अंतर-क्षेत्रीय कौशल को बढ़ावा देने के लिए उद्योग 4.0 सहित उभरती प्रौद्योगिकियों और भविष्य के कौशल में कौशल की पहचान करना और सुविधा प्रदान करना, कार्यबल की रोजगार क्षमता और कमाई की क्षमता में सुधार के लिए अंतर्राष्ट्रीय नौकरी बाजारों के साथ संरेखित करना।
- पारंपरिक कौशल के द्वारा योग्यताएँ, राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक (एनओएस) और माइक्रो-क्रेडेंशियल्स (एमसी) विकसित करना, जो क्षेत्रीय योग्यता ढांचे के साथ-साथ विरासत ज्ञान और पारंपरिक भारतीय कौशल, जैसे हस्तशिल्प और हथकरघा को शामिल करते हैं।
- मिश्रित शिक्षा, कौशल और मूल्यांकन के तरीकों को बढ़ावा देना
- जहां संभव हो, पहुँच का विस्तार करना, लागत कम करना, सीखने के संसाधनों को मानकीकृत करना, और तेजी से और प्रभावी व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण वितरण के लिए उच्च गुणवत्ता वाली ई-सामग्री सुनिश्चित करना एनसीवीईटी भारत में

व्यावसायिक शिक्षा, प्रशिक्षण और कौशल पारिस्थितिकी तंत्र के विकास और गुणात्मक सुधार के लिए एक सक्षम नियामक वातावरण बनाना।

1.9. एनसीवीईटी के मुख्य कार्य --

- मूल्यांकन एजेंसियों (एए) और कौशल सम्बन्धित सूचना प्रदाताओं (एसआईपी) को मान्यता देना, अनुशासन सुनिश्चित करना और उनका विनियमन करना।
- राष्ट्रीय कौशल योग्यता ढांचे (एनएसक्यूएफ) को स्थापित करना, एम योग्यता रजिस्टर (एनक्यूआर) को बनाए रखना
- एनएसक्यूएफ संरेखित योग्यता और राष्ट्रीय व्यावसायिक मानकों और माइक्रो क्रेडेंशियल्स (एमसी) का अनुमोदन, जो कि सेक काउंसिल (एसएससी) सहित पुरस्कार देने वाली निकायों द्वारा विकसित करना।
- अनुसंधान एवं सूचना प्रसार और मान्यता प्राप्त संस्थाओं की निगरानी, मूल्यांकन और पर्यवेक्षण।
- एमएसडीई के परामर्श से बीओ मूल्यांकन एजेंसियों के रूप में कौशल विश्वविद्यालयों के लिए विनियम तथा दिशानिर्देश स्थापित करना।
- व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थानों के अप्रत्यक्ष विनियमन के लिए दिशानिर्देश स्थापित करना।
- विभिन्न हितधारकों की समस्याओं का निवारण।

1.9 पुरोहित सहायक की भूमिका का परिचय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य व्यक्ति का सर्वाङ्गीण विकास करना है। देशों को इस समय कुशल एवं सक्षम जनशक्ति की आवश्यकता है। जिस आवश्यकता को इस इकाई योग्यता आधारित पाठ्यक्रम से पूर्ति की जा सकती है। 64 कलाओं में से एक वास्तुशास्त्र कौशल न केवल भारतीय शिल्पकला के सांस्कृतिक आवासादि से सम्बन्धित विभिन्न विषयों, भौतिक तत्त्वों, वासयोग्य भूमि के सिद्धान्तों एवं दैनिक समस्याओं की प्रक्रियाओं और प्रथाओं की मूल समझ प्रदान करने के लिए शुरू किया गया है, बल्कि यह छात्रों के कौशल और व्यावसायिक आवश्यकताओं को भी पूरा करेगा तथा कौशल आधारित शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से रोजगार क्षमता में सुधार भी करेगा।

सहायक की भूमिका-

यह स्वास्थ्य, सुख, ऋद्धि, सन्तति और दैनिक जीवन की दृष्टि से आधार पाठ्यक्रम है जहाँ छात्रों को समाज में काम करने का अनुभव मिलेगा। यह पौरोहित्य उन्हें शास्त्रीय और समकालीन पहलुओं की विशाल और विस्तृत जानकारी देगा। छात्रों को **सहायक** के मूल कर्तव्यों को समझने में मदद् करने के लिए कर्मकाण्ड के व्यावहारिक ज्ञान के साथ-साथ मूल सिद्धान्तों का ज्ञान कराया जाएगा।

कनिष्ठ सहायक के उद्देश्य-

- इस पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य अन्य विषयों के साथ-साथ कौशल विषय चुनने वाले छात्रों की रोजगार क्षमता और कौशल दक्षता विकसित करना हैं।

- कर्मकाण्ड लोगों के मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करेगा।
- समाज को गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदान करने के लिए पुरोहित प्रशिक्षित करना।
- कर्मकाण्ड के सैद्धान्तिक कर्तव्यों को समझना, जिसमें महत्त्वपूर्ण मापदण्डों को लेना और रिकॉर्ड करना, सामग्री की जाँच करना और मन्त्रों के द्वारा समाज को सुखी- समृद्ध बनाना है।

आजीविका के अवसर -

पुरोहित का पाठ्यक्रम छात्रों को लोगों की माँग का विश्लेषण करेगा और समाज में शिक्षार्थियों को अच्छे से **वैदिक कर्मकाण्ड** का प्रबन्धन करना सिखाएगा। यह पाठ्यक्रम छात्रों को **पीठनिर्माण, पञ्चाङ्गपूजन एवं आरम्भिक यज्ञ विधान, नैमित्तिक पूजन, सप्तशतीपारायणविधि एवं प्रात:सूक्त, त्रिसुपर्णसूक्त, स्वस्तिवाचन, श्रीसूक्तम् नवग्रहस्तोत्र, श्री विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र, अन्नपूर्णा स्तोत्रादि** क्षेत्रों में काम करने की अनुमति देगा। यह पाठ्यक्रम छात्रों को उनके **कर्मकाण्ड** को प्रभावी ढंग से तैयार करने के विशेष उद्देश्य से तैयार किया गया है।

सक्रिय गतिशीलता-

इस पाठ्यक्रम में भाग लेकर छात्र आगे की शिक्षा को अद्यतन कर सकेंगे, विभिन्न संस्थाओं एवं विश्वविद्यालयों के वेद-वेदांग विभाग तथा समाज और पौरोहित्य के लिए सहायक होंगे।

इकाई: 2

पीठनिर्माण

2.1 पीठनिर्माण - प्रत्येक पूजन के आरम्भ से पूर्व जिस कार्य के उद्देश्य से हम जिस देवता के पूजन का संकल्प करते है उनके पूजनार्थ तत् तत् देवता के प्रतीक स्वरूप का पीठ निर्माण किया जाता है। सामान्यतया सभी प्रकार के पूजन का आरम्भ पञ्चाङ्ग पूजन से होता है।

गणपतिपूजन, पुण्याहवाचन, मातृकापूजन, नान्दीश्राद्ध, ऋत्विग्वरण इन पाँच प्रकार के पूजन क्रम को पञ्चाङ्ग पूजन कहा जाता हैं। उपरोक्त कथनानुसार सर्वप्रथम पीठ निर्माण श्री गणपति पीठ से होता हैं।

श्री गणपति पीठ - प्रत्येक प्रान्तानुसार गणपति पूजन पीठ भिन्न-भिन्न प्रकार से निर्माण किया जाता हैं । पूर्वभारत, दक्षिण भारत में रंगवल्ली से भूमि पर गणपति का चित्र बनाकर अथवा गणेशयंत्र निर्माण कर, तथा पश्चिम भारत , मध्य भारत, उत्तर भारत में तण्डुल (चावल) को रंगीत कर चौकी पर अक्षत पुञ्ज रखकर तदुपरि सुपारी को मौली बन्धनपूर्वक पूजन किया जाता हैं। कतिपय स्थानों में गणेश प्रतिमा (मूर्ति) को रखकर भी पूजन किया जाता हैं।

निम्न चित्रानुसार गणपति मण्डल बनाए जाते हैं।

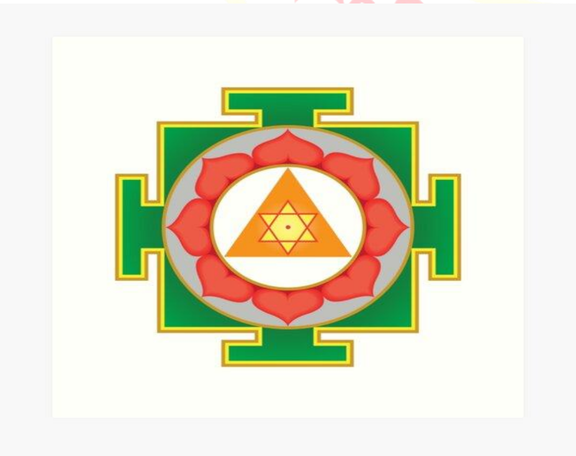

2.2 पुण्याहवाचन मण्डल-

गोमयेनोपलिप्योर्वीं रङ्गवल्लिकयार्चयेत् । प्रस्थधान्योपरि स्थाप्यं पूर्णं हि कलशद्वयम्॥ दक्षिणे चोत्तरे चैव उत्तरे तु निधापयेत् । पात्रमक्षतपूर्णन्तु फलपुष्पसमन्वितम्॥

पुण्याहवाचन मण्डल निर्माण विधि - गोमय से लिप्त भूमि पर रङ्गवल्ली से अष्टदल पद्म बनाकर अथवा काष्ठ के पीठ (चौकी) पर वस्त्र प्रसारित कर मौली धागे से वस्त्र बान्धे तण्डुल अथवा गोधूम(गेहूँ) से अष्टदलपद्म बनाए तदुपरि सूत्र वेष्टित स्वर्ण, रजत अथवा ताम्र कलश का स्थापन करें। कलश में जल भरकर पंचपल्लव प्रक्षेप करें तदुपरि पूर्णपात्र के लिए पात्र में तण्डुल भरकर सुपारी रखें एवं वरुण का आवाहन ,पूजन करें। कतिपय स्थानों में एक अथवा तीन कलशों को रखकर भी पुण्याहवाचन करने का विधान हैं। ऋग्वेदी शाखियों में दो कलश एवं यजुर्वेदीयों में एक कलश रखकर पुण्याहवाचन किया जाता हैं।

2.3 षोडशमातृका पूजन -

कर्मादिषु च सर्वेषु मातर: स गणाधिपा:। पूजनीया: प्रयत्नेन पूजिता: पूजयन्ति ता:॥

प्रतिमासु च शुभ्रासु लिखित्वा वा पटादिषु । अपि वाऽक्षत पुञ्जेषु नैवेद्यैश्च पृथग्विधै:॥

सभी प्रकार के शांतिक-पौष्टिक तथा संस्कार कर्मों के आरम्भ में पञ्चाङ्ग पूजनान्तर्गत मातृका पूजन किया जाता हैं, जिसमें गौर्यादि षोडश मातृका, स्थलमातृका एवं घृतमातृकाओं का पूजन होता हैं। श्रीमद् देवी भागवत के अनुसार हमारे दैनन्दिन व्यवहार में हमसे ज्ञाताज्ञात अनेक प्रकार के जन्तुओं,कृमि-कीटकों का हनन होता हैं जिसके दोष निवृत्ति के लिए भी मातृकाओं का पूजन किया जाता हैं।मातृकाए अनेक प्रकार की होती हैं जैसे- **१.गौर्यादि षोडश मातृका २.घृतमातृका ३.स्थलमातृका ४.मण्डपमातृका ५.द्वारमातृका ६.जलमातृका ।** प्रायः सभी शांतिक-पौष्टिक कर्मों में षोडशमातृका, घृतमातृका व स्थलमातृकाओं का पूजन होता हैं। मातृकाओं की संख्या के विषय में कतिपय स्थानों में षोडशमातृकाओं की संख्या चतुर्दश(१४) , अष्टादश(१८) भी विद्वानों द्वारा बाताई जाती हैं ।

मातृका पूजन मण्डल निर्माण - गोमय से लिप्त भूमि पर रङ्गवल्ली से अष्टदल पद्म अथवा षोडश कोष्टक बनाकर अथवा काष्ठ के पीठ (चौकी) पर वस्त्र प्रसारित कर मौली धागे से वस्त्र बांधे पश्चात् वस्त्रपर तण्डुल से षोडश कोष्टक बनाये उसपर सुपारियाँ रखकर षोडशमातृकाओं का आवाहन-पूजन करें।

कुड्यलग्ना वसोर्द्धारा पञ्चधारा घृतेन तु । कारयेत् सप्तधाराश्च नातिनीचा नचोच्छ्रिता ॥

(छन्दोग परिशिष्ट)

घृतधारा उदक् संस्था: कुर्याद् गुडघृतेन च। (रुद्रकल्पद्रुम)

घृतमातृकाओं का पूजन अनेक प्रकार से होता हैं, छन्दोग परिशिष्ट में कुड्यलग्नात् यानी दिवाल पर घृतधारा कर के मातृकाओं का पूजन करने के लिए कहा गया हैं। कतिपय स्थानों में आम के पत्ते पर घृत तथा सिन्दूर लगाकर किया जाता हैं ।मध्य तथा उत्तरभारत में लकडी के पाटे पर श्वेत वस्त्र लगाकर घृतमातृकाओं का पूजन किया जाता हैं ।

फोटो ....

2.4 नवग्रह मण्डल -

आधिदैविक,आधिभौतिक,आध्यात्मिक इन तीन प्रकार के तापों के उपशमन पूर्वक ऐहिक-अमुष्मिक फल तथा समस्त प्रकार के ऐश्वर्यादि प्राप्ती के लिए नवग्रहों का पूजन किया जाता हैं। ग्रहों के पूजन से या उनकी कृपा से मनुष्य अत्यन्त कठिनतम कार्य भी सहजता से कर सकते हैं तथा ग्रहों के प्रतिकूल होने से सहज कार्य भी कठिनतम हो जाते हैं । इसलिए हमारे दैनन्दिन जीवन में नवग्रहों की अनुकुलता अत्यन्त आवश्यक ज्ञात होती हैं ।

नवग्रह मण्डल पीठनिर्माण एवं पूजन –

नवग्रहों के मण्डल पीठ निर्माण में चार प्रमुख विषय ध्यान रखने चाहिये ग्रहों के वर्ण, ग्रहों की आकृती, ग्रहों के मुख एवं स्थान।

ग्रहों के वर्ण – भास्कराङ्गारकौ रक्तौ शुक्लौ शुक्रनिशाकरौ । सोमपुत्रो गुरुश्चैव तावुभौ पीतकौ स्मृतौ॥ कृष्णं शनैश्चरं विद्यात् चित्रा राहुश्च केतवः॥ (संस्कारगणपति)

ग्रहों की आकृती - वृत्तमण्डलमादित्ये चतुरस्रं निशाकरे । भूमिपुत्रे त्रिकोणं स्याद् बुधे वै बाणसन्निभम्॥

गुरौ तु पट्टिशाकारं पञ्चकोणं च भार्गवे । शनौ स्याद्धनुषाकारं शूर्पाकारं तु राहवे ॥

केतोश्चैव ध्वजाकारं मण्डलानि यथाक्रमम् ॥ (संस्कारगणपति)

ग्रहों के मुख – शुक्रार्कौ प्राङ्मुखौ ज्ञेयौ गुरुसौम्यावुदङ्मुखौ ।प्रत्यङ्मुखः शनिः सोमः शेषा दक्षिणतोमुखाः॥

ग्रहों के स्थान - मध्ये तु भास्करं विद्याच्छशिनं पूर्व दक्षिणे ।

दक्षिणे लोहितं विद्याद्बुधं पूर्वोत्तरेण तु॥

उत्तरे तु गुरुं विद्यात्पूर्वतो भार्गवं न्यसेत् । पश्चिमेन शनिं विद्याद्राहुं दक्षिणपश्चिमे ॥

पश्चिमोत्तरतः केतुः स्थाप्यो वै शुक्लतण्डुलैः ॥ (संस्कारगणपति)

ग्रह	वर्ण	आकृति	मुख	स्थान
सूर्य	रक्त	वृत्त	प्राङ्मुख	मध्य
चन्द्रमा	शुक्ल	चतुरस्र	प्रत्यङ्मुख	आग्नेय
मङ्गल	रक्त	त्रिकोण	दक्षिणमुख	दक्षिण
बुध	पीत/हरित	बाण	उदङ्मुख	ईशान्य
बृहस्पति	पीत	पट्टिशाकार	उदङ्मुख	उत्तर
शुक्र	शुक्ल	पञ्चकोण	प्राङ्मुख	पूर्व
शनि	कृष्ण	धनुषाकार	प्रत्यङ्मुख	पश्चिम
राहु	चित्रविचित्र/ कृष्ण	शूर्पाकार	दक्षिणमुख	नैर्ऋत्य
केतु	चित्रविचित्र	ध्वजाकार	दक्षिणमुख	वायव्य

अन्य मण्डलों की भांति नवग्रह निर्माण के अनेक प्रकार हैं जैसे –

१.रंगवल्ली से मण्डल निर्माण

२.रंगीन तण्डुल/धान्यों से ग्रहों की आकृति निर्माण

३. धान्यराशी पर ग्रहों की प्रतिमा रखकर ।

१.रंगवल्ली से मण्डल निर्माण - ग्रहों के वर्णानुसार रंगवल्ली ले कर ग्रहों के एक चतुरस्र मण्डल बनाकर उसमें एकसमान नौ खण्ड बनाये व नवग्रहों के मुख,स्थान को ध्यान में रखते हुवे आकृति का निर्माण करें। धान्यराशी पर कलश स्थापन कर नवग्रहों का आवाहन करें।

रंगीन तण्डुल/धान्यों से ग्रह मण्डल निर्माण – सर्वप्रथम ग्रहों के वर्णानुसार तण्डुल रंगीन करें। तण्डुल रंग करने के लिए खाने के रंग(फूडकलर) ले आवश्यकतानुसार एक पात्र में तण्डुल लेकर किञ्चित रंग तथा एक आचमनी जल डालकर मिला लें, एक पेपर पर सुखाने के लिए रखें। दस मिनट सूखनेपर प्रयोग करें।मण्डल निर्माण के लिए एक समचतस्र चौकी पर श्वेतवस्त्र बांधकर नौ कोष्टक बनाकर नवग्रहों के मुख,स्थान को ध्यान में रखते हुवे आकृति का निर्माण करें।नवग्रहों के साथ उनके दाएँ एवं बाएँ ओर अधिदेवता, प्रत्यधिदेवताओं का भी निर्माण किया जाता हैं। उनके लिए नवग्रहों के आकृतियों पर ही सुपारी रखकर आवाहन किया जाता हैं। इसी मण्डलपर पंचलोकपालों का तथा दशदक्पालों का भी आवाहन किया जाता हैं।

धान्यराशी पर ग्रहों की प्रतिमा रखकर मण्डल निर्माण – समचतस्र चौकी पर श्वेतवस्त्र बांधकर धान्यराशी रखें।नवग्रहों की प्रतिमाओं के मुख,स्थान को ध्यान में रखते हुए स्थापना करें।

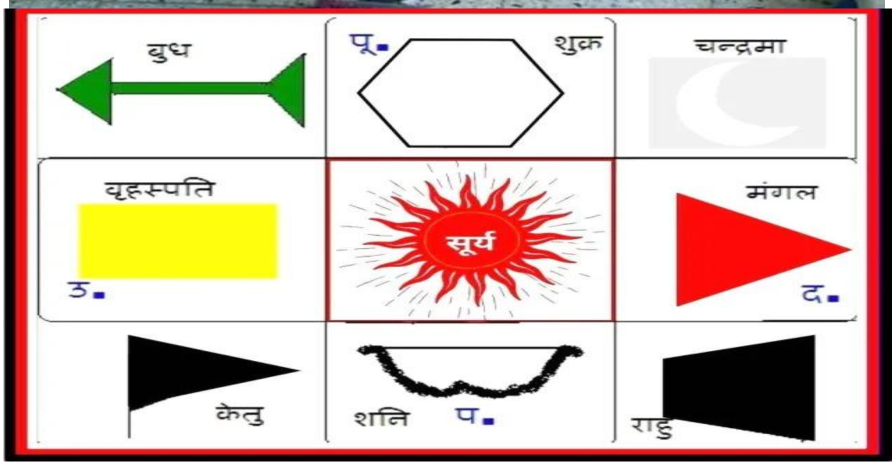

2.5 पूजनपूर्व सज्जता - सामान्य पूजा विधि

देव पूजन की प्रविधि सामान्यतया अतिथि सत्कार की पुरातन परंपरा के समान है। इसके अन्तर्गत हम भगवान का आवाहन करते हुए विभिन्न सामग्री से उनकी सेवा सत्कार की भावना करते हैं।

इसी के समानांतर दो अन्य बिन्दु भी जुड़ जाते हैं-

प्रथम- स्वयं का शुद्धीकरण या पवित्रीकरण तथा ध्यान-प्रार्थना

द्वितीय- जिस सामग्री से हम भगवान का पूजन अर्चन करते हैं, उस पूजन सामग्री का भी शुद्धीकरण या पवित्रीकरण

इसके अतिरिक्त स्वयं व वस्तु दोनों में ही दिव्य भाव के आवाहन हेतु भी उसके पूजन का विधान करते हैं। कर्मकाण्ड के साथ-साथ सामान्य तौर पर जो मन्त्रों के पाठ की प्रक्रिया है, उसमें वैदिक ,पौराणिक एवं लौकिक मन्त्र पढ़े जाते हैं।

कर्मकाण्डीय दृष्टि से पूजन की विभिन्न एवं विशेष परम्पराएँ होती हैं, जिनमें पञ्चोपचार तथा षोडशोपचार पूजन पद्धति सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं।

पूजन विधि के लिए कोई एकरूप प्रक्रिया निर्धारित नहीं की जा सकती, क्योंकि अवसर व देव के अनुसार प्रक्रिया परिवर्तित हो सकती है। विद्वानों का मतैक्य और भक्ति के भाव से विधानीकरण किया जा सकता है।

फिर भी जनसामान्य के पूजन-अर्चन के लिए पूजा पद्धति की सामान्य रूपरेखा निर्धारित की जा सकती है। इसके साथ ही कुछ जनसुविधार्थ सामान्य दिशानिर्देश भी बनाए जा सकते हैं, जैसे-

- प्रत्येक पूजारम्भ के पूर्व निम्नांकित आचार-अवश्य करने चाहिए- आत्मशुद्धि, आसन शुद्धि, पवित्री धारण, पृथ्वी पूजन, संकल्प, दीप पूजन, शंख पूजन, घण्टा पूजन, स्वस्तिवाचन आदि।
- भूमि, वस्त्र आसन आदि स्वच्छ व शुद्ध हों।
- आवश्यकतानुसार चौक रंगोली एवं मण्डप बना बनाएँ।
- मान्यता अनुसार मुहूर्त आदि का विचार किया जा सकता है।
- यजमान पूर्वाभिमुख बैठे, पुरोहित उत्तराभिमुख।
- विवाहित यजमान की पत्नी पति के साथ ग्रंथिबन्धन कर पति के दक्षिण भाग में बैठे।
- पूजन के समय शरीर शुद्धि के लिए अंगन्यास, करन्यास, मुद्रा आदि किया जाता है.
- औचित्यानुसार विविध देव प्रतीक भी बनाए जाते हैं, ध्यातव्य है कि पूजन के इस प्रकरण के अभ्यास से संकल्प विशेष का परिवर्तन करके विविध पूजा के आयोजन सामान्य रूप से करा सकते हैं।

इकाई:3

पञ्चाङ्गपूजन पूर्वार्ध

3.1. गणपतिपूजन -

तिलक धारणम् – ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ॥ स्वस्ति नस्ताक्ष्र्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।25.19॥

आचमनम् -

ॐ केशवाय नम: स्वाहा।

ॐ नारायणाय नम: स्वाहा।

ॐ माधवाय नम:स्वाहा।

तीन बार आचमन कर निम्नलिखित मन्त्र को पढ़कर हाथों को धो लें।

ॐ गोविन्दाय नम:।।

पवित्रकरणम् - बाएँ हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से अपने ऊपर और पूजा सामग्री पर निम्न श्लोक पढ़ते हुए जल छिड़कर पवित्रीकरण करें।

ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि:।।

ॐ पुण्डरीकाक्ष: पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्ष: पुनातु ॐ पुण्डरीकाक्ष: पुनातु।

आसन शुद्धि: -

नीचे लिखे हुए मन्त्र का उच्चारण कर आसन को जल से पवित्रीकरण करें-

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि! पवित्रां कुरु चासनम्।।

शिखाबन्धनम् -

ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः । मा नो व्वीरान्रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।।

ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेज: समन्विते।

तिष्ठ देवि शिखाबद्धे तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥

कुश पवित्र धारणम् -

निम्न मन्त्र से बाएँ हाथ में तीन कुश तथा दाहिने हाथ में दो कुश धारण करें।अथवा कुशपवित्र से पवित्री बनाकर धारण करें।

ॐ पवित्रे स्त्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्प्रसवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः॥ देवीरापोऽअग्ग्रेगुवोऽअग्ग्रेपुवोग्ग्रऽइममद्य यज्ञन्नयताग्ग्रे यज्ञपतिः सुधातुँय्यज्ञपतिन्देवयुवम् ॥1.12॥ चित्तपतिर्म्मा पुनातु व्वाक्पतिर्म्मा पुनातु देवो मा सविता पुनात्त्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः॥ तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥4.4॥

शान्तिसूक्त पाठः – ॐ आ नो भद्राः क्क्रतवो यन्तु व्विश्श्वतोदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः। देवानोयथा सदमिद् वृधेऽअसन्नप्प्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥25.14॥ देवानाम्भद्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवानाँ रातिरभि नो निवर्त्तताम्। देवानाँ सक्ख्यमुपसेदिमा व्वयन्देवा नऽआयुः प्प्रतिरन्तु जीवसे॥25.15॥ तान्पूर्व्वया निविदा हूमहे व्वयम्

भगंम्मित्रमदितिन्दक्षम्स्रिधम्। अर्य्यमणँ व्वरुणꣳ सोमम्श्विना सरस्वतीनꣳ सुभगा मयस्करत्

॥25.16॥ तन्नो व्वातो मयोभु व्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ॥ तद्ग्रावाणः सोमसुतो

मयोभुवस्तदश्विनश्रृणुतधिष्ण्या युवम् ।।25.17।।

तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्

वृधेरक्षितापायुरदब्धꣳ स्वस्तये ।।25.18।। स्वस्ति नऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाꣳ स्वस्ति नः पूषा

व्विश्ववेदाꣳ। स्वस्ति नस्ताक्र्ष्योऽअरिष्टनेमिꣳ स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥25.19॥

पृषदश्वामरुतꣳ पृश्निमातरꣳ शुभँय्यावानो व्विदथेषुजग्मयꣳ।अग्निजिह्वा मनवꣳ

सूरचक्षसो व्विश्वे नो देवाऽअवसागमन्निह॥25.20॥ भद्रङ्कर्णेभिꣳ शृणुयाम देवा

भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राꣳ। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितँ

य्यदायुः॥21.25॥ शतमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम्। पुत्रासो यत्र

पितरो भवन्ति मा नो मद्ध्या रीरिषतायुर्गन्तोꣳ॥22.25॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति

र्म्माता स पिता स पुत्रः। व्विश्वे देवाऽअदितिꣳ पञ्च

जनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम्॥23.25॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी

शान्तिरापꣳ शान्तिरोषधयꣳ शान्तिः ॥ व्वनस्पतयꣳ शान्तिर्व्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिꣳ

सर्वꣳ शान्तिꣳ शान्तिरेव शान्तिꣳ सा मा शान्तिरेधि॥36.17 ॥ ॐ यतोयतः समीहसे ततो

नोऽअभयङ्कुरु॥ शन्नः कुरु प्प्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः ।।36.22।।सुशान्तिर्भवतु।।

गणेशादि स्मरणम् -

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ एतत् कर्मप्रधान देवताभ्यो नमः। ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु॥

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।1।।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।। 2।।

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।। 3।।

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।। 4।।

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः ।सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।। 5।।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके !। शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि !नमोऽस्तु ते।। 6।।

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः।। 7।।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।विद्यावलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥8॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।9।।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।10।।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।11।।

स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते ।पुरुषं तमजं नित्यं ब्रजामि शरणं हरिम्।।12।।

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः।।13।।

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्।।14।।

आपदामपहर्तारं दातारं सर्व सम्पदाम् । लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥15।।

सङ्कल्पः- (हस्ते गन्धाक्षतपुष्पं गृहीत्वा सङ्कल्पं कुर्यात्) दाहिने हाथ में गन्धाक्षत पुष्प ले कर सङ्कल्प करें

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोन्हि द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे जम्बूद्वीपे अस्मिन्वर्तमाने अमुक नामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अनुकमासे अमुकपक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवराजगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थान स्थितेषु सत्सु एवंगुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक नाम्नः (शर्मा,वर्मा,दास,गुप्तः) अहम् ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थम् मम समस्त ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् अप्राप्तलक्ष्मी प्राप्त्यर्थम् प्राप्तलक्ष्म्याश्चिरकालसंरक्षणार्थं सकलमनेप्सितकामनासंसिद्ध्यर्थं लोके सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादिप्राप्त्यर्थम् मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपशमनार्थं मम सभार्यस्य सपुत्रस्य सबान्धवस्य अखिलकुटुम्बसहितस्य सपशोःसमस्तभयव्याधिजरापीडामृत्युपरिहारद्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं मम जन्मराशेः अखिलकुटुम्बस्य वा जन्मराशेः सकाशात् येकेचित् विरुद्धचतुर्थाष्टमद्वादशस्थानस्थित क्रूरग्रहाः तैः सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशद्वारा एकादशस्थानस्थितवत् शुभफलप्राप्त्यर्थं पुत्रपौत्रादिसन्ततेः अविच्छिन्नवृद्ध्यर्थम्

आदित्यादिनवग्रहानुकूलतासिद्ध्यर्थम् इन्द्रादिदशदिक्पाल प्रसन्नतासिद्ध्यर्थम् आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक त्रिविधतापोपशमनार्थम् धर्मार्थकाममोक्षफलावाप्त्यर्थं च श्री................देवताप्रीत्यर्थं यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः ध्यानावाहनादिषोडशोपचारैः अन्योपचारैश्च यथाशक्ति अमुक पुजनञ्च करिष्ये॥

पुनर्जलमादाय – तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणपतिपूजनं स्वस्तिपुण्याहवाचनम् मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनम् आयुष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धं च करिष्ये। तदङ्गत्वेन निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं श्रीगणपति स्मरणं भूमिपूजनम् कलशपूजनम् दीपपूजनम् शङ्खघण्टार्चनं च करिष्ये।

गणपति स्मरणम् –

ॐ वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटी समप्रभ।

निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः निर्विघ्नं कुरु॥

भूमिपूजनम् -

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छा नः शर्मसप्रथाः ॥यजुर्वेद 36.13॥

वरुणपूजनम् - (जलपात्र का पूजन)

इसके बाद कर्मपात्र में थोड़ा गंगाजल डालकर गन्धाक्षत, पुष्प से पूजा करें।

ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॥21.1॥ अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गसपरिवारं स्थापयामि। वं वरुणाय नमः। नमस्करोमि। प्रार्थना करें।

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि! सरस्वति! ।नर्म्मदे! सिन्धु कावेरि! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

कर्मपात्र का पूजन करके उसके जल से सभी पूजा वस्तुओं पर छिड़कें.

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

दीपपूजनम् - घी/तेल का दीपक जलाकर अक्षत के ऊपर रखकर पूजन करें।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥3.9॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दीपस्थदेवतायै नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नमस्करोमि। **भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।यावत्पूजासमाप्तिः त्वं सुस्थिरो भव।।**

शंखपूजनम् –

ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः ॥ तमीमहे महागयम् ॥ उपयामगृहीतोस्यग्नये त्वा वर्चसऽएष ते योनिरग्नये त्वा वर्चसे ॥25.9॥

ॐ भूर्भवः स्वः शंखस्थदेवतायै नमः

शंखस्थदेवतामावाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

शंख को चन्दन से लेपकर देवता के बाईं ओर पुष्प पर रखकर शंख मुद्रा करें।

ॐ शङ्खं चन्द्रार्कदैवत्यं वरुणं चाधिदैवतम् ।पृष्ठे प्रजापतिं विद्यादग्रे गङ्गासरस्वती।।

त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया।शंखे तिष्ठन्ति वै नित्यं तस्माच्छंखं प्रपूजयेत्।।

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृत: करे। नमित: सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य! नमोऽस्तुते।।

पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि। तन्न: शंख: प्रचोदयात्।

घण्टा पूजन-

ॐसुपुर्णोसि गुरुत्क्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायुत्रञ्चक्षुर्बृहद्रथन्तुरे पुक्षौ॥ स्तोमंऽआत्क्माच्छन्दाᳬंस्यङ्गानि यजूᳬंषि नामं॥

सामं ते तुनूर्वामदेव्यँय्यंज्ञायुज्ज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्यां शुफाः॥

सुपुर्णोसि गुरुत्क्मान्दिवङ्गच्छ स्वः पत ॥ 12.4।।

आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम्।कुरु घण्टे वरं नादं देवतास्थानसन्निधौ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्थाय गरुडाय नमः।गरुडमावाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गरुडमुद्रा दिखाकर घण्टा बजाएँ।

गणपतिपूजनम्

(गणेशाम्बिका पूजनम्)

ध्यानम्- गुणानांन्त्वा गुणपंतिᳬं हवामहे प्रियाणांन्त्वा प्रियपंतिᳬं हवामहे निधीनान्त्वां निधिपतिᳬं हवामहे व्वसो मम॥ आहमंजानि गर्ब्भधमा त्वमंजासि गर्ब्भधम्॥ 23.19

सुहस्रंशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सुहस्रंपात्॥

स भूमिꣳ सुर्व्वतं स्पृत्वात्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ 31.1।।

ॐभूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहितमहागणपतये नमः ध्यायामि।।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेम्बालिके न मां नयति कश्चन॥

ससंस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् ॥१८॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः ध्यायामि॥

आवाहन- हाथ में अक्षत लेकर श्रद्धापूर्वक गणेशजी का आवाहन करें।

पुरुष एवेदꣳ सर्व्वंꣳय्यद्भूतंय्यच्च भाव्व्यम् ॥ उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ 31.2।। रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्। आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।। ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीशिवपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः आसनं समर्पयामि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आवाहयामि, स्थापयामि।

पुनः अक्षत लेकर गणेशजी की दाहिनी ओर गौरी जी का आवाहन करें।

आसनम्-वर्ष्मोऽस्मिसमानानायुध्यतामिवसूर्यः। इमन्तमभितिष्ठामियोमाश्चाभिदासति।

ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आसनं समर्पयामि।।

पाद्यम्- ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ॥ पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ ३ ।।31.3॥ ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पाद्यं समर्पयामि।।

अर्घ्यम्- ॐ त्रिपादूर्द्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः ॥ ततो विष्ष्वङ्व्व्यक्क्रामत्साशनानशनेऽअभि ।। 31.4।।

ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अर्घ्यं समर्पयामि॥

आचमनीयम्- ॐ ततो॑ व्विराड॑जायत व्विराजो॒ऽअधि॒ पूरु॑षः ॥ स जा॒तोऽअत्त्य॑रिच्यत प॒श्चाद्भूमि॒मथो॑ पु॒रः ॥ 31.5 ॥ ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आचमनीयं समर्पयामि।

स्नानम् - ॐ तस्म्मा॑द्यज्ञात्स॑र्व्वहुतः॒ सम्भृ॑तम्पृषदा॒ज्ज्यम् ॥ पशूँस्ताँश्च॑क्रे व्वायव्व्या॒नार॒ण्ण्या ग्ग्रा॒म्म्याश्च॒ ये ॥ 31.6।

ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः स्नानं समर्पयामि।।

पञ्चामृतस्नानम् –

पय:स्नानम्- ॐ पय॑: पृथि॒व्व्याम्पय॒ऽओष॑धीषु पयो॑ दि॒व्व्युन्तरि॑क्षे॒ पयो॑ धाः ॥ पय॑स्वतीः प्र॒दिश॑: सन्तु म॒ह्यम् ॥ 18.36।।

ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पय:स्नानं समर्पयामि। पय:स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयम् समर्पयामि॥

दधिस्नानम्- ॐ द॒धि॒क्क्राव्ण्णो॑ऽअकारिषञ्जि॒ष्ण्णोरश्श्व॑स्य व्वा॒जिन॑: ॥ सु॒र॒भि नो॒ मुखा॑ कर॒त्प्र ण॒ऽआयू॑ᳬषि तारिषत् ।। 23.32।। ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दधिस्नानं समर्पयामि।। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयम् समर्पयामि॥

घृतस्नानम्- ॐ घृ॒तम्मि॑मिक्षे घृ॒तम॑स्य॒ योनि॑र्घृ॒ते श्रि॒तो घृ॒तम्म्व॑स्य॒ धाम॑॥ अ॒नु॒ष्ष्व॒धमाव॑ह मा॒दय॑स्व॒ स्वाहा॑कृतव्वृषभ व्वक्षि ह॒व्यम्।।17.88।। ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः घृतस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयम् समर्पयामि॥

मधुस्नानम्- ॐमधु॒ व्वाता॑ऽऋताय॒ते मधु॑ क्षरन्ति॒ सिन्ध॑वः॥ माद्ध्वी॑र्न्नः स॒न्त्वोष॑धीः॥ ॥13.28॥ ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मधुस्नानं समर्पयामि।। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयम् समर्पयामि॥

शर्करास्नानम् –ॐ अपाꣳ रसमुद्वयसꣳ सूर्य्ये सन्तꣳ समाहितम् ॥ अपाꣳ रसस्य यो रसस्तँवो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।9.3।।

ॐभूर्भुवःस्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शर्करास्नानं समर्पयामि॥ शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयम् समर्पयामि॥

अथवा एकतन्त्रेण पञ्चामृतस्नानम् -

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः॥ सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेभवत्सरित् ॥34.11

पयो दधि घृतं चैव मधुं च शर्करायुतम् । पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयम् समर्पयामि॥

गन्धोदकस्नानम्- ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ऽईडितः। इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः। मित्रावरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तान्ध्रुवेण धर्म्मणा विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः।।2.3।।

ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयम् समर्पयामि॥

उद्वर्तनस्नानम् - ॐअꣳशुना तेऽअꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽऽअच्युतः ॥2.27॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि॥ सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्प्य निर्माल्यमुत्तरे विसृज्य अभिषेकः-

ॐ नमस्ते गणपतये...........॥. अमृताभिषेकोऽस्तु। ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अभिषेकस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्- ॐ शुद्धवालः सुर्वशुद्धवालो मणिवालुस्तऽआश्विनाः श्येतेः श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कुर्णा यामाऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जुन्याः॥ ।।34.3।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।। वस्त्रेण प्रमृज्य रक्तवस्त्रप्रसारिते मृन्मये पीठे पट्टे वा अरुणाक्षतैर्गोधूमैर्वा कृतेऽष्टदले पद्मे गन्धानुलेपनपूर्वकं संस्थाप्य ।

वस्त्रम्- ॐ तस्माद्याज्ज्ञात्सर्वहुत ऽऋच..॥ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदुत्स्वः॥ वासोऽअग्ने विश्वरूपः संव्ययस्व विभावसो।।11.40।। ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥

उपवीतम्- ॐ तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः ॥ गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः ॥८॥

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि॥

गन्धम्- ॐ तँऽयुज्ज्ञम्बुर्हिषि प्प्रौक्क्षन्पुरुंषञ्जातमंग्गृतः ॥ तेनं देवाऽअंयजन्त साुद्ध्याऽऋषंयश्च्च ये ॥31.9॥ॐ त्वाङ्गंन्धुर्व्वाऽअंखनँस्त्वामिन्द्रुस्त्वाम्बृहुस्प्पतिंः ॥ त्वामोंषधे सोमो राजां विद्वान्न्यक्ष्मांदमुच्च्यत ।12.98।। श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यंसुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।। ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः गन्धं समर्पयामि॥

अक्षता:- ॐ अक्क्षुन्नमींमदन्त ह्यवं प्प्रियाऽअंधूषत। अस्तोंषत स्व भांनवो व्विप्प्रा नविंष्ठया मुती योजा न्विन्द्र ते हरीं।।3.51।। ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अक्षतान्समर्पयामि।

पुष्पाणि- ॐ यत्पुरुंषेण हुविषां देवा युज्ज्ञमतंन्वत ॥ वुसन्तोंस्यासीदाज्ज्यंङ्ग्रीष्म्मऽइुद्ध्मः शुरद्धुविः ॥31.14॥ ॥ ॐ ओषंधीः प्प्रतिंमोदद्ध्वम्पुष्प्पंवतीः प्प्रसूवंरीः ॥ अश्श्वांऽइव सुजित्त्वंरीर्व्वीरुधंः पारयिष्ण्णवंः ।।12.77।। ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि समर्पयामि॥

दूर्वाङ्कुरा:- ॐ काण्डांत्काण्डात्प्ररोहंन्ती परुंषः परुषस्प्परिं। एवा नों दूर्व्वे प्प्रतंनु सुहस्रेंण शुतेनं च॥13.20।। ॐभूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहितमहागणपतये नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि॥

सौभाग्यद्रव्याणि- ॐ अहिंरिव भोगैः पर्य्येति बाहुञ्ज्यायां हेतिम्पंरिबाधंमानः ॥ हुस्तुग्घ्नो व्विश्श्वां वुयुनांनि व्विद्वान्पुमान्पुमांꣳसम्परिंपातु व्विश्श्वतंः ॥29.51।। ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि।

धूपः- ॐ ब्राह्मणोस्य मुखंमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ॥ ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳬ शूद्रोऽअजायत ॥31.11।।ॐ धूरसि॥ धूरसि धूर्व धूर्वन्तुन्धूर्व तंय्योस्मान्धूर्वति तन्धूर्व यव्वयन्धूर्वामः ॥ देवानामसि वह्नितमᳬ सस्नितमम्पप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम्।।1.8 ।।

ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः धूपमाघ्रापयामि।

दीपः- ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत॥ श्रोत्राद्वायुश्च प्प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥ १२॥ ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दीपं दर्शयामि।।

नैवेद्यम्- ॐ नाभ्याऽआसीत्॥ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षᳬ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत ॥ पद्भ्याम्भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ ॥ऽअकल्पयन्।।31.13।। ॐ अन्नपतेन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः॥ प्रप्र दातारन्तारिषऽऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥11.83।। गायत्री मन्त्रेण सम्प्रोक्ष्य।धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य।ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य। ॐप्राणाय स्वाहा ॐ अपानाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ उदानाय स्वाहा ॐसमानाय स्वाहा। ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यं निवेद्यामि। पूर्वापोशनं समर्पयामि। ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मध्येपानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। मुखप्रक्षालनं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे गन्धं समर्पयामि।

ताम्बूलम्- ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ॥ वसन्तोस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः ॥31.14॥ ॐभूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ताम्बूलं समर्पयामि॥

फलम्- ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः॥12.89।। ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः फलं समर्पयामि॥

दक्षिणा- ॐ यद्दत्तं यत्परादानं यत्पूर्त्तं याश्च दक्षिणाः॥ तदग्निर्वैश्वकर्म्मणः स्वर्द्देवेषु नो दधत्॥18.64।। ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सुवर्णपुष्पदक्षिणां समर्पयामि॥

प्रदक्षिणा- ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः॥ देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्॥ 31.15।। ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि॥

कर्पूरारार्तिक्यम्- ॐ आरात्रि ॥ आ रात्रि पार्त्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः॥ दिवः सदाꣳसि बृहती वितिष्ठसऽआ त्वेषं वर्त्तते तमः॥34.32॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः कर्पूरारार्तिक्यं दर्शयामि॥

मन्त्रपुष्पाञ्जलिः- अञ्जलौ पुष्पाण्यादाय तिष्ठन्

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्॥ ते ह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥16॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

विशेषार्घः - अर्घ्यपात्रे जलं प्रपूर्य रक्तचन्दनपुष्पाक्षतसहितं नारिकेलं च धृत्वा

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।भक्तानामभयंकर्ता त्राता भव भवार्णवात्। द्वैमातुर्कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो। वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्यद।। अनेन सफलार्घेण फलदोऽस्तु सदा मम। ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना- विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय। नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते। नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः। नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः। विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे। भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायकं लम्बोदरं नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय! निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा। त्वां विघ्नशत्रुदल नेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति वरप्रदेति। विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव। दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तो स्वस्थैस्मृतामतिमतीव शुभां ददासि। दारिद्र्य दुःख भय हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रार्थनापूर्वकं नमस्करोमि।

समर्पणम् - अनेन कृतेन पूजनेन गणेशाम्बिकेः प्रीयेतां न मम॥

॥ इति गणपति पूजनम्॥

3.2. पुण्याहवाचप्रयोगः-

स्वपुरतः शुद्ध भूमौ पञ्चवर्णैस्तन्दुलैर्वाऽष्टदलं कर्तव्यम्। तत्र

भूमिंस्पृष्ट्वा मही द्यौः पृथिवी च नऽइमँय्यज्ञम्मिमिक्षताम् ॥ पिपृतान्नो भरीमभिः ॥ 8.32 ॥

यवप्रक्षेपः- ओषधयः सम्वदन्त सोमेन सह राज्ञा ॥ यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन्पारयामसि ॥ ९६ ॥

अष्टदलोपरि कलशस्थापनम्- आजिंघ्र कुलशंम्मुह्या त्वां विशुन्त्विन्दंव ॥ पुनंरूर्ज्जा निर्वर्त्तस्व सा नंः सुहस्रंन्धुक्ष्वोरुधांरा पयंस्वती पुनुर्म्माविंशताद्रुयिः ॥ ४२ ॥

कलशेजलपूर्णम्- व्वरुणस्योत्तम्भंनमसि व्वरुणस्य स्कम्भुसर्ज्जनी स्त्थो व्वरुणस्यऽऋतुसदंन्यसि व्वरुणस्यऽ ऋतुसदंनमसि व्वरुणस्यऽऋतुसदंनुमासींद ॥३६ ॥

गन्धप्रक्षेपः- त्वाङ्गन्धुर्व्वाऽअंखनुंस्त्वामिन्द्रुस्त्वाम्बृहुस्प्पतिंः ॥ त्वामोंषधे सोमो राजां व्विद्वान्न्यक्ष्मांदमुच्च्यत ॥ ९८ ॥

धान्यप्रक्षेपः- ॐ धान्न्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्प्रसिंतिमायुंषे धान्देवो वंः सविता हिरंण्ण्यपाणिः प्प्रतिंगृब्भ्णात्त्वच्छिंद्रेण पाणिना चक्षुंषे त्वा मुहीनाम्पयोंऽसि॥यजुर्वेद1.20॥

सर्वौषधीप्रक्षेपः- ॐया ओषंधीः पूर्व्वा जाता देवेब्भ्यंस्त्रियुगम्पुरा। मनै नु बुब्भ्रूणांमुहः शुतन्धामांनि सुप्त चं॥यजुर्वेद 12.75॥

दूर्वाप्रक्षेपः- ॐ काण्डांत्काण्डात्प्रुरोहंन्ती परुंषः परुषुस्प्परिं। एवा नों दूर्व्वे प्प्रतंनु सुहस्रेंण शुतेनं च ॥यजुर्वेद13.20॥

पञ्चपल्लवप्रक्षेपः- ॐअश्श्वृत्त्थे वों निषदंनम्पूर्णे वों व्वसुतिष्कृता। गोभाजुऽइत्किलांसथ यत्त्सुनवंथ पूरुंषम्॥ य.वे.12.79॥

सप्तमृदप्रक्षेपः- ॐ स्योना पृंथिवि नो भवानृक्षुरानिवेशंनी। यच्छां नः शर्म्मंसुप्प्रथाः ॥यजुर्वेद 36.13॥

फलप्रक्षेप:- ॐया॒ः फलिनी॒र्य्याऽअ॑फ॒लाऽअ॑पु॒ष्पा याश्च॑ पु॒ष्पिणी॑ः।
बृह॒स्पति॑प्रसूता॒स्ता नो॑ मुञ्च॒न्त्वᳪ॑ह॑सः ॥यजुर्वेद 12.89॥

पञ्चरत्नप्रक्षेप:- परि॒ वाज॑पतिः क॒विर॒ग्निर्ह॒व्यान्य॑क्रमीत् ॥ दध॒द्रत्ना॑नि दा॒शुषे॑ ॥ २५ ॥

हिरण्यप्रक्षेप:- ॐ हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः सम॑वर्त्त॒ताग्रे॑ भू॒तस्य॑ जा॒तः पति॒रेक॑ऽआसीत्। सदा॑धार पृ॒थि॒वीन्द्यामु॒तेमाङ्क॒ कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम॥यजुर्वेद 13.4॥

रक्तसूत्रेण वस्त्रेण च वेष्टयेत् – ॐयुवासुवासाः...... ॥

पूर्णपात्रमुपरि न्यसेत्- पू॒र्ण्णा द॑र्व्वि॒ परा॑पत सु॒पू॑र्ण्णा॒ पु॒न॒रा॑पत॥ व॒स्नेव॑ विक्क्री॑णावहा॒ऽइष॒मूर्ज्ज॑ᳪ शतक्क्रतो॥४९॥

वरुणमावाहयेत्- ॐतत्त्वा॑यामि॒....... ॥ भूर्भुवः स्वः अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि॥

प्रतिष्ठापनम्- मनो॑ जू॒तिर्ज्जु॑षता॒माज्ज्य॑स्य॒ बृह॒स्पति॑र्य॒ज्ञमि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्टँय॒ज्ञᳪ समि॒मन्द॑धातु॥ विश्वे॑ दे॒वास॑ऽइ॒ह मा॑दयन्ता॒मो३म्प्रति॑ष्ठ॥१३॥ ॐवरुणाय नमः वरुण सुप्रतिष्ठितो वरदो भव॥

ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः चन्दनं समर्पयामि। इत्यादिपञ्चोपचारैः सम्पूज्य । तत्त्वायामीति पुष्पाञ्जलिं समर्प्य। अनेन पूजनेन वरुणः प्रीयताम् ॥

कलशाभिमन्त्रणम् - ततः अनामिकया कलशं स्पृष्ट्वा अभिमन्त्रयेत्-

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मुले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाःस्मृताः। कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः। अङ्गैश्च सहिताः

सर्वे कलशाम्बु समाहिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा। आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धो कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ततो गायत्र्यादिभ्यो नमः इत्यनेन पञ्चोपचारैरभ्यर्च्य कलशं प्रार्थयेत्-

ॐदेवदानव संवादेमथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोसि तदाकुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्। त्वत्तोये सर्व तीर्थानि देवाःसर्वे त्वयि स्थिताः।त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः। त्वत्प्रसादामिमां पूजा कर्तुमीहे जलोद्भव । सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय। सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते। पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक। पुण्याहवाचनं यावत् तावत् त्वं सन्निधो भव।

ततः स्वस्तिवाचनार्थं युग्मविपान्सम्पूज्य। अवनिकृत- जानुमण्डलः कमलमुकुल सदृशमञ्जलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना स्वर्णपूर्णकलशं धारयित्वा यजमानो वदेत्- ॥ त्रीणिंपुदाव्विचंक्क्रमे ॥ त्रीणिं पुदा व्विचंक्क्रमे व्विष्णुंर्ग्गोपाऽअदांब्भ्यः ॥ अतो धर्म्माणि धारयंन् ॥ ४३ ॥ दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च ॥ तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ।। विप्राः वदेयुः - तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु॥ एवं वारत्रयं कृत्वा । तत्र मन्त्रः- ॥ त्रयादेवाः ॥ त्रया देवाऽएकांदश त्रयस्त्रिꣳशाः सुराधंसः ॥ बृहस्प्पतिंपुरोहिता देवस्यं सवितुः सुवे ॥ देवा देवैरंवन्तु मा ॥ ११ ॥ ॥ त्रीणिंते ॥ त्रीणिं तऽआहुर्द्दिवि बन्धंनानि त्रीण्ण्युप्प्सु त्रीण्ण्युन्तः संमुद्रे ॥ उतेवं मे व्वरुंणश्च्छन्त्स्यर्व्वन्यत्रां तऽआहुः पंरमञ्जनित्रंम् ॥ १५ ॥ कलशं भूमौ धान्यराशी संस्थाप्य।

हस्तपूजनम् - यहां यजमानों द्वारा ब्राह्मणों के हस्तपूजन पूर्वक आशीर्वाद याचना तथा ब्राह्मणों द्वारा आशीर्वाद प्रदान हैं ।यजमानों के वाक्य आचार्य यजमान के द्वारा उच्चारण करायें।

यजमान:-	**ब्राह्मणा:-**
ब्राह्मणानां हस्ते सुप्रोक्षितमस्तु।	अस्तु सुप्रोक्षितम्॥
शिवा आपः सन्तु।	सन्तु शिवा आपः॥
सौमनस्यमस्तु।	अस्तु सौमनस्यम्॥
अक्षतं चारिष्टं चास्तु।	अस्त्वक्षतमरिष्टं च॥
गन्धाः पान्तु सौमङ्गल्यं चास्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।	ॐगन्धाः पान्तु सौमङ्गल्यं चास्तु॥
अक्षताः पान्तु आयुष्यमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।	ॐ अक्षताः पान्तु आयुष्यमस्तु।
पुष्पाणि पान्तु सौश्रियमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।	ॐपुष्पाणि पान्तु सौश्रियमस्तु।
ताम्बूलानि पान्तु ऐश्वर्यमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।	ॐताम्बूलानि पान्तु ऐश्वर्यमस्तु।
पूगीफलानि पान्तु बहुफलमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।	ॐपूगीफलानि पान्तु बहुफलमस्तु।
दक्षिणाः पान्तु बहुदेयं चास्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।	ॐदक्षिणाः पान्तु बहुदेयं चास्तु।

यजमान: वदेत्-ॐ दीर्घमायुः श्रेयः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रञ्चास्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणा: वदेयु:- ॐदीर्घमायुः श्रेयः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चास्तु।

यजमानः वदेत्- यकृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कारमादिङ्कृत्वा ऋग्यजुःसामाथर्वणाशीर्वचनं वहुऋषि मतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मणाः वदेयुः - ॐवाच्यताम्।

अथाशीर्वादः- ब्राह्मणानां हस्तेष्वक्षतान्दद्यात्॥

॥ भुद्रङ्कर्ण्णेभिः ॥ भुद्रङ्कर्ण्णेभिः शृणुयाम देवा भुद्रम्पश्श्येमाक्षभिर्य्यजत्राः ॥

स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तुनूभिर्व्यशेमहि देवहितुँय्यदायुः ॥ 25.21 ॥

॥ देवानाम्भुद्राः ॥ देवानाम्भुद्रा सुमुतिर्ऋजूयुतान्देवानाꣳ रातिरुभि नो निवर्त्तताम् ॥

देवानाꣳ सुक्ख्यमुपसेदिमा व्वयन्देवा नऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥ 25.15 ॥

यजुः-

॥ दीर्ग्घायुस्ते ॥ दीर्ग्घायुस्तऽओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्म्यहम् ॥

अथो त्वन्दीर्ग्घायुर्ब्भूत्वा शतवल्शा व्विरोहतात् ॥ 12.100 ॥

ॐ द्रविणोदाः पिपीषतिजुहोतप्प्रचतिष्ठत॥ नेष्ट्राद्दतुभिरिष्यत।।26.22।।

ऋक् ॐसवितापश्चात्सवितापुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविताधरात्तात् ॥

सवितानः सुवतुसर्वतातिंसवितानोरासतांदीर्घमायुः।।

ॐ सवितात्त्वासवानाꣳसुवतामग्निर्गृहपतीनाꣳ सोमोव्वनस्प्पतीनाम्॥

बृहस्प्पतिर्व्वाऽइन्द्रोऽज्यैष्ठ्यारुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्योव्वरुणोधर्म्मपतीनाम्॥10.30॥

ॐनवौनवोभवतिजायमानोह्ना केतुरुषसमामेत्यग्रम्।।

भागंदेवेभ्योविदंधात्यायन्प्रचन्द्रमर्मास्तिरतेदीर्घमायुः।।

ॐनतद्रक्षांछुँ सिनपिंशाचास्तंरन्तिदेवानामोजं÷प्रथमज७ ह्येतत्।

योबिभर्तिदाक्षायण९ हिरंण्य९ सदेवेषुंकृणुतेदीर्घमायुं॰ सर्मनुष्येषुकृणुतेदीर्ग्घमार्युं॥ 34.51॥

ॐउच्चादिविदक्षिंणावन्तोऽअस्थुर्येऽअंश्वदाःसहतेसूर्येण॥

हिरण्यदाऽअमृतत्वं भंजंतेवासोदाः सोमप्रतिंरन्तुऽआर्युः।।8।।

ॐ उच्चातेंजातमन्धंसोदिविसद् भूम्म्यांददे।। उग्र९ शर्म्ममाहिश्श्रवः॥26.16॥ इत्याशीर्वादः

यजमान:वदेत्- व्रतजपनियमतपः स्वाध्यायक्रतुदयादमदानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्॥

ब्राह्मणा: वदेयु:- समाहितमनसः स्मः॥**यजमान:वदेत्**- प्रसीदन्तु भवन्तः॥**ब्राह्मणा: वदेयु:**-प्रसन्ना:स्मः॥

वामहस्ते अक्षतान् गृहीत्वा तदुपरि संस्कारित कलशं संस्थाप्य । कलशोपरि दक्षिणहस्तं निधाय। पात्रे जलधारां पातयेत् ॥

ॐशान्तिरस्तु॥ ॐपुष्टिरस्तु॥ ॐतुष्टिरस्तु॥ ॐवृद्धिरस्तु। ॐअविघ्नमस्तु। ॐआयुष्यमस्तु। ॐआरोग्यमस्तु। ॐशिवं कर्मास्तु।

ॐकर्मसमृद्धिरस्तु।ॐधर्मसमृद्धिरस्तु॥ॐवेदसमृद्धिरस्तु।ॐशास्त्रसमृद्धिरस्तु।

ॐधनधान्यसमृद्धिरस्तु।ॐपुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु।इष्टसम्पदस्तु॥

द्वितीयपात्रे- ॐअरिष्टनिरसनमस्तु। ॐयत्पापं रोगमशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।। ॐयच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐउत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐउत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु। ॐउत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्।।

ॐतिथिकरणमुहूर्त्तनक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु। ॐतिथिकरणमुहूर्त्तनक्षत्रग्रहलनाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथिकरणे समुहूर्त्ते सनक्षत्रे सग्रहे साधिदेवते प्रीयेताम्। ॐदुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् ॥ ॐअग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐइन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐअरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम् । ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐब्रह्म पुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐश्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐश्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयेताम्। ॐभगवती माहेश्वरी प्रीयताम् । ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती सिद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्।ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् ॥ ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। **बहिः-** ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐहताश्च विघ्नकर्तारः। ॐशत्रवः पराभवं यान्तु। ॐशाम्यन्तु घोराणि। ॐशाम्यन्तु पापानि। ॐशाम्यन्त्वीतयः। **पुनः पात्रे-**ॐ शुभानि वर्द्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐशिवा ऋतवः सन्तु। ॐशिवा ओषधयः सन्तु। ॐशिवा नद्यः सन्तु। ॐशिवा गिरयः सन्तु।ॐशिवा अतिथयः सन्तु। ॐशिवा अग्नयः सन्तु। ॐशिवा आहुतयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्। **यजुः-** निकामेनिंकामे नः॰ पुर्ज्जन्यों व्वर्षतु फलंवत्यो नुऽओषंधयः॰ पच्यन्ताँय्योगक्षेमो नंः कल्पताम् ॥ २२.२२ ॥

ॐ शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहु केतुसोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान्नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान्पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान्स्वामी महासेनः

प्रीयताम्। ॐ पुरोनुवाक्या यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ याज्या यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

यजमान:वदेत् -ॐ पुण्याहकालान्वाचायष्ये। **ब्राह्मणा:-** ॐ वाच्यताम्।

यजमान:वदेत् - ब्राह्मयं पुण्यं महद्यच्च सृष्टयुत्पादनकारकम्। वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याह ब्रुवन्तु नः।।1।। भो ब्राह्मणाः! मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणाय मया क्रियमाणस्य **......** कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। **ब्राह्मणा:-** ॐ अस्तु पुण्याहम्। एवं त्रिः ॥ **पुनन्तुंमा ॥ पुनन्तुं मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियं ॥ पुनन्तु विश्वा भूतानि जातंवेदः पुनीहि मां ॥ १९.३९ ॥**

यजमान:वदेत् - पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्। ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः॥ भो ब्राह्मणाः!। मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणाय मया क्रियमाणस्य **.....** कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रवन्तु ॥ **ब्राह्मणा:-** ॐअस्तु कल्याणम् ।। एवं त्रिः।

॥ यथेमाम्॥ यथेमांवाचंकल्याणीमावदानि जनेभ्यः ॥ ब्रह्मराजन्याभ्याᳪं शूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च ॥ प्रियो देवानान्दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयम्मे कामः समृद्ध्यतामुपं मादो नमतु ॥ २६.२ ॥

यजमान:वदेत् - सागरस्य यथा वृद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिःकृता। सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः॥ भो ब्राह्मणाः! मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणाय मया क्रियमाणस्य **........** कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। **ब्राह्मणा:-**ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्। एवं

त्रिः। ॥ सुत्रस्यऽत्रिद्धं ॥ सुत्रस्यऽऋद्धिरस्यगंन्म ज्योतिंरमृतांऽअभूम॥ दिवम्पृथिव्याऽअद्ध्यारुहामाविदाम देवान्त्स्वज्ज्योतिः ॥८.५२ ॥

यजमान:वदेत् - स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा। विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः॥ भो ब्राह्मणाः! मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणाय मया क्रियमाणस्य .... कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।। **ब्राह्मणा:-** ॐ आयुष्मते स्वस्ति॥ एवं त्रिः॥ ॥स्वस्तिनः ॥स्वस्ति नुऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ॥स्वस्ति नुस्ताक्ष्र्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ २५.१९ ॥

यजमान:वदेत्- समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका। हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः ।5। भो ब्राह्मणाः ! मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणाय मया क्रियमाणस्य ....कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुबन्तु॥ **ब्राह्मणा:-** ॐ अस्तु श्रीः॥ एवं त्रिः॥ ॥ मनसः कामम्॥ मनसः काममाकूतिंवाचः सत्यमशीय॥ पशूनाᳪ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतामयि स्वाहा ॥ ३९.४ ॥

कृतेऽस्मिन्पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु। अस्तु परिपूर्णः। अथाभिषेकः॥ कर्तुर्वामतः पत्नीम् उपवेश्य पात्रपातितकलशोदकेन अविधुराश्चत्वारो ब्राह्मणा दूर्वाम्रपल्लवैरुदङ्मुखास्तिष्ठन्तः सपत्नीकं यजमानमभिषिञ्चेयुः।

तत्र मन्त्राः

तत्र ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ॥

पयस्वतीः प्प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥18.36।।

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः ॥ सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेभवत्सरित् ॥34.11।।

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमासिवरुणस्यस्कम्भ सर्ज्जनीस्त्थोवरुणस्य ऽऋतसदन्न्यसिवरुणस्य ऽऋत

सदनमासिवरुणस्यऽऋत सदनमासीद।।4.36।।

पुनन्तुमादेवजनाः पुनन्तुमनसाधियः ।। पुनन्तुविश्वाभूतानिजातवेदः पुनीहिमा।।19.39।।

॥ देवस्यंत्वा ॥ देवस्य त्वा सवितुः प्प्रसवेश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णो हस्ताब्भ्याम् ॥

सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्य्यन्त्रियै दधामि बृहस्प्पतेष्ट्वा साम्म्राज्येनाभिषिञ्चाम्म्यसौ ॥ 9.30 ॥

ॐ देवस्यंत्वासवितुः प्प्रसवेश्विनौर्ब्बाहुभ्याम्पूष्णोहस्ताब्भ्याम्।।

सरस्वत्यैव्वाचोयन्तुर्य्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥18.37॥

ॐ देवस्यंत्वासवितुः प्प्रसवेश्विनौर्ब्बाहु-ब्भ्याम्पूष्णोहस्ताब्भ्याम्।

अश्श्विनोर्ब्भैषज्ज्येन तेजसेब्ब्रह्मवर्च्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यैभैषज्ज्येन

व्वीर्य्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्ये न्द्रियेणबलायश्रियैयशसेभिषिञ्चामि ॥20.3॥

ॐ व्विश्वानिदेव सवितर्दुरितानिपरासुव।। यद्भद्रन्तन्नऽआसुव।।30.3।।

ॐधामच्छदग्निरिन्द्रोब्ब्रह्मादेवो बृहस्पतिः ।।

सचेतसोविश्श्वेदेवायज्ञम्प्रावन्तुनः शुभे ॥18.76॥

ॐत्वंय्यविष्ठदाशुषो नॄंपाहिः श‍ृणुधीगिरः ॥ रक्षातोकमुतत्क्मना ॥18.77॥

॥ अन्नपतेन्नस्य ॥ अन्नपतेन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ॥

प्रप्प्र दातारन्तारिषऽऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्प्पदे ॥ ११.८३ ॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ 36.17 ॥ ॐ यतोयतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु॥ शन्नः कुरु प्प्रजाब्भ्योभयन्नः पशुब्भ्यः ।।36.22।। सुशान्तिर्भवतु।।

सर्व्वेषां वाऽएषव्वेदानारसोयत्साम सर्वेषाम्सवैनमेतद्वेदानां रसेनाभिषिञ्चति। शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु।। स्वस्थाने उपविश्य हस्ते जलं गृहीत्वा- अभिषेककर्तृकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथोत्साहं दक्षिणां दास्ये तेन श्रीकर्माधीशः प्रीयताम्।

ततः पुत्रवतीभिर्वृद्धसुवासिनीभिर्नीराजनं कार्यम्। तस्य मन्त्रः-

॥ अनाधृष्टापुरस्त्तात् ॥ अनाधृष्टा पुरस्त्तादुग्ग्नेराधिपत्त्यऽआयुर्म्मे दाः॥ पुत्रवती दक्क्षिणतऽइन्द्रस्याधिपत्त्ये प्प्रजाम्मे दाः॥ सुषदा पश्चाद्देवस्य सवितुराधिपत्त्ये चक्क्षुर्म्मे दाऽआश्श्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्त्ये रायस्प्पोषम्मे दाः ॥ व्विधृतिरुपरिष्ट्टाद्बृहस्प्पतेराधिपत्त्यऽओजो मे दा व्विश्श्वाब्भ्यो मा नाष्ट्राब्भ्यस्प्पाहि मनोरश्श्वासि॥ 37.12॥

अनेन पुण्याहवाचनेन कर्माङ्गदेवताः श्रीआदित्यादिनवग्रहाः प्रीयन्ताम् ।।

इति पुण्याहवाचनप्रयोगः।

इकाई:4

पञ्चाङ्गपूजन (उत्तरार्ध)

4.1. मातृ का पूजन प्रयोग-

तत्रादौ वैश्वदेवं कुर्यात्। तदकरणे सङ्कल्पः- इदं वैश्वदेवहवनीयद्रव्यं सदक्षिणाकमन्त्रावसरे वैश्वदेवाकरणजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं करणजनितफलप्राप्त्यर्थम् अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय विष्णुरूपाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। अनेन वैश्वदेवकरणजनितफलसिद्धिरस्तु।

गौर्यादिमातृणां पूजनम्- अग्निकोणे पीठोपरि रक्तवस्त्रं प्रसार्य तदुपरि गोधूमाक्षतपुञ्जेषु पूगीफलेषु वा सगणाधिपगौर्यादिमातृणां दक्षिणोपक्रमाणाम् उदगपवर्गाणां प्रत्ययुपक्रमाणां प्रागपवर्गाणां वा स्थापनम्। ॥ गुणानांन्त्वा॥ गुणानांन्त्वा गुणपतिꣳ हवामहे प्रियाणांन्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम॥ आहमंजानि गर्ब्भधमा त्वमंजासि गर्ब्भधम् ॥ २३.१९ ॥

ॐगणेशाय नमः गणेशम् आवाहयामि स्थापयामि। भो गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ॥1॥ॐ भूर्भुवःस्वः॥ गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि॥ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि। ॐभूर्भुवःस्वः शच्यै नमः शचीमावाहयामि स्थापयामि॥ॐ भूर्भुवःस्वः मेधायै नमः। मेधामावाहयामि स्थापयामि॥ॐभूर्भुवःस्वः सावित्र्यै नमः। सावित्रीम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐभूर्भुवःस्वः विजयायै नमः विजयाम् आवाहयामि स्थापयामि।ॐभूर्भुवःस्वः जयायै नमः जयाम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः देवसेनाम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐभूर्भुवःस्वः स्वधायै नमः।स्वधाम् आवाहयामि स्थापयामि।। ॐभूर्भुवःस्वः स्वहायै नमः। स्वाहाम् आवाहयामि स्थापयामि।

ॐभूर्भुवःस्वः मातृभ्यो नमः। मातॄः आवाहयामि स्थापयामि॥ ॐभूर्भुवःस्वः लोकमातृभ्यो नमः। लोकमातॄः आवाहयामि स्थापयामि॥ ॐभूर्भुवःस्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयापि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः। पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि। ॐभूर्भुवः स्वः तुष्टयै नम॥ तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।। ॐभूर्भुवः स्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः। आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि।

॥मनोजूतिः॥ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टँय्य-ज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ विश्वे देवासऽइह मादयन्तामोꣳम्प्रतिष्ठ॥२.१३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सगणाधिपगौर्यादिमातरः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत ।। ॐ भूर्भुवः स्वः सगणाधिपगौर्यादिमातृभ्यो नमः इत्यनेन षोडशोपचारैः सम्पूजयेत्।

अथ श्रियादिसप्तवसोर्द्धारापूजनम्- पात्रस्थेन विलीनेन सगुडेन घृतेन मातृणां संनिहितकुड्यलग्नाः दक्षिणायुदपवर्गाः पश्चिमादिप्रागपवर्गाः नातिनीचा न चोच्छ्रिताः सप्तवसोर्द्धाराः कर्तव्याः।

व्वसोः पुवित्रम्॥ व्वसोः पुवित्रमसिशुतधारँव्वसोः पुवित्रमसि सुहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पुवित्रेण शुतधारेण सुप्प्वा कामधुक्षः ॥१.३॥

इत्यनेन सप्तधाराः कृत्वा ततः शिष्टाचारात् उर्ध्वभागे गुडेनैकीकरणम् ॐकामधुक्षः।

श्रीःपूर्वसप्तमातृश्च घृतमातृस्तथैव च। गुडेन मेलायष्यामि ताः सर्वार्थप्रसाधिकाः॥

इत्यनेनैकीकृत्य कुङ्कुमादिना बिन्दुकरणेनालङ्कृत्य प्रतिधारायामेकैकदेवतामावाहयेत्। **मनसः कामम्॥ मनसः काममाकूतिंव्वाचःसुत्त्यमशीय॥ पुशूनाꣳ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीःश्रयतामयि स्वाहा ॥ ३९.४ ॥** ॐ भूर्भुवःस्वः श्रियै नमः श्रियम् आवाह्यामि॥1॥

॥ श्रीश्चं ॥ श्रीश्चं ते लक्ष्मीश्च पत्न्यांवहोरात्रे पार्श्वे नक्षंत्राणि रूपमुश्विनौ व्यात्तंम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मंऽइषाण सर्व्वलोकम्मंऽइषाण ॥ ३१.२२ ॥

ॐलक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीम् आवाहयामि ॥ 2 ।। ॥ इहरतिं÷ ॥ इह रतिंरिह रमद्धमिह धृतिंरिह स्वधृंतिः८ स्वाहां ॥ उपसृजन्धुरुणंम्मात्रे धुरुणों मातरुन्धयंन् ॥ रायस्पोषंमुस्म्मासुं दीधरुत्त्स्वाहां ॥ ८.५१ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः धृत्यै नमः धृतिम् आवाहयामि॥3॥ ॥ मेधाम्मे ॥ मेधाम्मे व्वरुंणो ददातु मेधामुग्निः प्रजापंतिः८॥ मेधामिन्द्रंश्च व्वायुश्चं मेधान्धाता दंदातु मे स्वाहां ॥ ३२.१५ ॥

ॐमेधायै नमः मेधाम् आवाहयामि ॥4॥ ॥देवीजोष्ट्रीं॥ देवी जोष्ट्री सरंस्वत्युश्विनेन्द्रंमवर्द्धयन् ॥ श्रोत्रन्न कर्ण्णयोर्व्यशो जोष्ट्रीभ्यान्दधुरिन्द्रियँव्वसुवनें व्वसुधेयंस्य व्यन्तु यजं ॥ २१.५१ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्टयै नमः पुष्टिमावाहयामि॥5॥ ॥ व्रतेनं दीक्षाम् ॥ व्रतेनं दीक्षामांप्नोति दीक्षयांप्नोति दक्षिणाम् ॥ दक्षिणा श्रद्धामांप्नोति श्रद्धयां सत्यमांप्यते ॥ १९.३० ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रद्धायै नमः श्रद्धाम् आवाह्यामि॥6॥ ॥ देवीस्तिस्रः॥ देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीरश्विनेडा सरंस्वती ॥ शूषन्न मद्ध्ये नाभ्यामिन्द्रांय दधुरिन्द्रियँव्वसुवनें व्वसुधेयंस्य व्यन्तु यजं॥२१.५४॥ ॐ भूर्भुवःस्वः सरस्वत्यै नमः सरस्वतीम् आवाहयामि।।7॥ ॥ मनोंजूतिः॥ मनों जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यंस्य बृहस्पतिंर्य्यज्ञमिमन्तंनोत्त्वरिंष्टंय्यु-ज्ञꣳसमिमन्दंधातु॥ व्विश्श्वें देवासंऽइह मांदयन्तामोꣳम्प्रतिंष्ठ॥ २.१३॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तवसोर्द्धाराः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवत। ॐ भूर्भुवःस्वः श्रयादिसप्तवसोर्द्धारादेवताभ्यो नमः इत्यनेन षोडशोपचारैः पूजयेत्।

प्रार्थना- यदङ्गन्त्वेन भो देव्य: पूजिता विधिमार्गत:। कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्।

॥इति मातृकापूजनप्रयोग:॥

आयुष्यमन्त्रजप:- ॥ आयुष्यँवर्च्चस्यम्॥ आयुष्यँवर्च्चस्यꣳ रायस्पोषमौद्भिदम्॥

इदꣳ हिरण्ण्यँ- वर्च्चस्वुज्जैत्रायाविंशतादु माम् ॥ ३४.५० ॥ [१०-५]

॥ नतत् ॥ न तद्रक्षांꣳसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳ ह्येतत् ॥

यो बिभर्त्ति दाक्षायणꣳ हिरण्ण्यꣳ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः

॥ ३४.५१ ॥

॥ यदाबध्नन् ॥ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्ण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः ॥

तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्मान्जरदष्टिर्य्यथासम् ॥ ३४.५२ ॥

4.2. नान्दीश्राद्ध प्रयोग:-

साङ्कल्पिक विधि से नान्दीश्राद्ध प्रयोग-

समस्त प्रकार के पौष्टिक तथा शान्ति कर्मों में पितरों के आशीर्वाद हेतु नान्दीश्राद्ध किया जाता है। नान्दीश्राद्ध को शुभश्राद्ध, आभ्युदयिक श्राद्ध भी कहा जाता हैं। **अभ्युदये पुत्रजन्मादौ यत् क्रियते तदाभ्युदयिकम्।** पुत्रजन्मादि शुभ कर्मों में जो आभ्युदयिक श्राद्ध जो किया जाता है वहीं नान्दीश्राद्ध कहा जाता हैं। नान्दीश्राद्ध दो प्रकार से होता हैं – सपिण्डक तथा अपिण्डक यथा कुलाचार नन्दीश्राद्ध करना चाहिए। अमुक के स्थान में गोत्र का उच्चार करें।

नान्दीश्राद्ध के लिए पूर्वाभिमुख/उत्तराभिमुख दहिने पैर को मोडकर बैठे, दो-दो कुश के अग्रभाग ग्रन्थीकर वैश्वदेव स्थान में दो, सपत्नीकपितृस्थान में दो, सपत्नीकमातामह स्थान मे दो इसप्रकार पात्र में आसादन करें और प्रयोगानुसार क्षणदानादि करें।

अथ यज्ञोपवीती प्राङ्मुखो दक्षिणं जानु पातयित्वा पात्रे उदङ्मुखान् प्राक्संस्थान् स्वयम् उदङ्मुखश्चेत् प्राङ्मुखान् उदक्संस्थान् वैश्वदेवस्थाने द्वौ सपत्नीकपितृपार्वणस्थाने द्वौ सपत्नीकमातामहपार्वणस्थाने द्वौ च एवं षट् कुशबटून् दूर्वाकाण्डानि वा संस्थाप्य क्षणदानं कुर्यात्।

यवान्गृहीत्वा- ॐ सत्यवसुसंज्ञकानां विश्वेषां देवानां नान्दीमुखानाम् अद्य कर्तव्यप्रधान सङ्कल्पोक्तकर्माङ्ग साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे भवद्भ्यां क्षणः क्रियताम्। इति यवान्निक्षिप्य।

ॐ तथा।। प्राप्नुतां भवन्तौ। प्राप्नवाव।

पुनः यवान् गृहीत्वा- **अमुक.....** गोत्राणां नान्दीमुखानां पितृपितामहप्रपितामहानां सपत्नीकानाम् अद्य कर्तव्य प्रधानसंकल्पोक्तकर्माङ्ग साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे भवद्भ्यां क्षणः क्रियताम्। इति यवान्निक्षिप्य। ॐ तथा। प्राप्नुतां भवन्तौ। प्राप्नवाव।

पुनः यवान्गृहीत्वा- द्वितीयगोत्राणां **अमुक गोत्राणां...** नान्दीमुखानां मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानाम् अद्य कर्तव्यप्रधान सङ्कल्पोक्तकर्माङ्ग साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे भवद्भ्यां क्षणः क्रियताम्। इति यवान्निक्षिप्य।ॐतथा। प्राप्नुतां भवन्तौ।प्राप्नवाव।

पाद्यदानम्- सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। **अमुक.....** गोत्राणां नान्दीमुखानां पितृपितामहप्रपितामहानां सपत्नीकानाम् इदं वः पाद्यं

पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। द्वितीयगोत्राणां **अमुक गोत्राणां ...** नान्दीमुखानां मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानाम् इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

सङ्कल्पः- अद्य पूर्वोच्चारित..........शुभपुण्यतिथौ साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धं करिष्ये ।

आसनदानम्- सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः इदं वः आसनम्।

अमुक.... गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहमपितामहाः सपत्नीकाः इदं वः आसनम्।

द्वितीयगोत्राः **अमुक गोत्राः....**नान्दीमुखाः मातामहमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः इदं वः आसनम्।

गन्धादिदानम्- सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः इदं गन्धाद्यर्चनं यथाविभागं स्वाहा नमःसंपद्यन्ताम् वृद्धिः।

अमुक..गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः इदं वो गन्धाद्यर्चनं यथाविभागं स्वाहा नमः नमःसंपद्यन्ताम् वृद्धिः।

द्वितीयगोत्राः **अमुक गोत्राः....** नान्दीमुखाः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः इदं वो गन्धाद्यर्चनं यथा विभागं स्वाहा नमःसंपद्यन्ताम् वृद्धिः।।

भोजननिष्क्रयद्रव्यदानम्- सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाःनान्दीमुखाः युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्तामन्नं वा तन्निष्क्रयी भूतं किञ्चिद्धिरण्यं दत्तम् अमृतरूपेण नमःसंपद्यन्ताम् वृद्धिः।।

अमुक.....गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्तामन्नं वा तन्निष्क्रयी भूतं किञ्चिद्धिरण्यं दत्तम् अमृतरूपेण नमःसंपद्यन्ताम् वृद्धिः।

द्वितीयगोत्राः **अमुक गोत्राः....** नान्दीमुखाः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्तामन्नं वा तन्निष्क्रयी भूतं किञ्चिद्धिरण्यं दत्तम् अमृतरूपेण नमःसंपद्यन्ताम् वृद्धिः।

सक्षीरयवमुदकदानम्- सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। **अमुक...** गोत्राः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः प्रीयन्ताम्। द्वितीयगोत्राः **अमुक...** गोत्राः... नान्दीमुखाः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः प्रीयन्ताम्।

आशीर्ग्रहणम्-

यजमानः वदेत्	**ब्राह्मणाः वदेयुः**
अघोराः पितरः सन्तु।	सन्त्वघोराः पितरः।
गोत्रं नोऽभिवर्धन्ताम्।	अभिवर्धन्तां वो गोत्रम्।
दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्।	अभिवर्द्धन्तां वो दातारः।
वेदाश्च नोऽभिवर्द्धन्ताम्।	अभिवर्द्धन्तां वो वेदाः।
सन्ततिर्नोऽभिवर्द्धताम्।	अभिवर्द्धतां वः सन्ततिः।
श्रद्धा च नो मा व्यगमत्।	मा व्यगमद्वः श्रद्धा।
बहुदेयं च नोऽस्तु।	अस्तु वो बहुदेयम्।
अन्नं च नो बहु भवेत्।	भवतु वो बह्वन्नम्।
अतिथींश्च लभेमहि।	अतिथींश्च लभध्वम्।
याचितारश्च नः सन्तु।	सन्तु वो याचितारः।
एता आशिषाः सत्याः सन्तु।	सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

दक्षिणादानम्-

सत्यवसुसंज्ञकेभ्योविश्वेभ्योदेवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्यफलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे न मम ॥

अमुक...गोत्रेभ्यः नान्दीमुखेभ्यः पितृपितामहप्रपितामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे न मम ।

द्वितीयगोत्रेभ्यः **अमुक...**गोत्रेभ्यः नान्दीमुखेभ्यः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे न मम ।

नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्। सुसम्पन्नम्।

विसर्जनम्

॥ व्वाजेवाजेवत ॥ व्वाजेवाजेवत व्वाजिनो नो धनेषु व्विप्राऽअमृताऽऋतज्ज्ञाः ॥

अस्य मद्ध्वः पिबत मादयद्ध्वन्तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः ॥ ९.१८ ॥

अनुव्रजनम्-

॥ आमा ॥ आ मा व्वाजस्य प्प्रसवो जगम्म्यादेमे द्यावापृथिवी व्विश्वरूपे ॥ आ मा गन्तामितरा मातरा चा मा सोमोऽअमृतत्त्वेन गम्म्यात् ॥

व्वाजिनो व्वाजजितो व्वाजꣳ ससृवाꣳसो बृहस्प्पतेर्ब्भागमवजिग्घ्रत निमृजानाः ॥ ९.१९ ॥

समर्पणम् - हस्ते जलमादाय- मयाऽचरितेऽस्मिन्साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीनान्दीमुखप्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु। अस्तु परिपूर्णः।

अनेन साङ्कनल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धेन नान्दीमुखाः पितरः प्रीयन्ताम्।।

॥इति साङ्कल्पिकविधिना नान्दीश्राद्धप्रयोगः॥

4.3 आचार्यादि ऋत्विक् वरण-

प्रत्येक याज्ञिक कर्मों के अन्तर्गत अनेक कर्मों का समावेश होता हैं। उन कर्मों की संपूर्ति किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं हो सकती है। यज्ञ परंपरा के अन्तर्गत कर्मों का उचित निर्वहन यजमान तथा आचार्यगणों के सामुहिक कर्तव्य पालन से ही सम्भव हो सकता हैं। उन कर्मों के निर्वहन के लिए यजमान द्वारा आचार्यादि ऋत्विक गणों का वरण किया जाता हैं, ताकि वे अपने-अपने कर्मों का यथोचित निर्वहन करें।

आचार्यादि ऋत्विक वरण मुख्यतया चार चरणों में होता हैं –

१ **आचार्य** - जो की सम्पूर्ण याज्ञिककर्म का सम्पादन यजमान तथा अन्य ऋत्विकगणों के द्वारा **आचार्य** कराता हैं।

२ **ब्रह्मा** – यज्ञिक कर्मों में अनेक प्रकार के अन्तर्गत कर्मों के विधि-विधानों को तृटि रहित कराना तथा प्रमादवशात् तृटि होने पर उनका प्रायश्चित्त पूर्वक सुधार कराना, सम्पूर्ण यज्ञ की देखरेख करना **ब्रह्मा** का कार्य होता हैं ॥

३ **गाणपत्य**- हविर्द्रव्यों का निर्माण कराना, यज्ञ में तत्तत् देवता के निमित्त यज्ञीय सामग्री का उपयोग करवाना इत्यादि कर्म **गाणपत्यगण** करते हैं।

४ **सदस्य** – आचार्य तथा ब्रह्मा की आज्ञा से यज्ञिक कर्मों का यजमान के द्वारा सम्पादन कराना आदि कर्म **सदस्यगण** करते हैं।

प्रयोग विधि- आचार्यादि गण ताम्र अथवा मिट्टि के पात्र में जल, दूध, कुश, दधि, चन्दन, अक्षता, दूर्वा, पिलि सरसों इन आठ प्रकार के द्रव्यों को लेकर अन्य पात्र द्वारा उसे ढककर रक्तसूत्र से वेष्टन करें, ॐ **पुण्याहम्** । ऐसे त्रिवार उच्चारण पूर्वक यजमान के हाथ में उस पात्र

को प्रदान करें। यजमान पत्नी के हाथों में पुण्याहवाचन कलश दें। सपत्नीक यजमान अपने आसन पर खडे हो कर ब्राह्मण की प्रार्थना करें।

ब्राह्मण प्रार्थना-

पावना:सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिण:। अनुगृह्णन्तु मामद्य ग्रहशान्त्याख्यकर्मणि ।। स्वस्वकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदा:।। श्रोत्रिया: सत्यवाचश्च ग्रहध्यानरता: सदा॥ यद्वाक्यामृतसंसिक्ता वृद्धिं यान्ति नरद्रुमा:। अन्ङ्गीकुर्वन्तु मत्कर्म कल्पद्रुमसमाशिष:।। यथोक्तनियमैर्युक्ता मन्त्रार्थे स्थिरबुद्धय:। यत्कृपालोकनात्सर्वा ऋद्धयो वृद्धिमाप्नुयु:॥ आयुरारोग्यपुत्रादिसुखश्रीप्राप्तये मम । आपद्विघ्नविनाशाय शत्रुबुद्धिक्षयाय च ।

आदित्याद्या ग्रहा: सर्वे राहुकेतुपुर:सरा:।। ग्रहदेवाधिदेवैश्च नक्षत्राणां च दैवतै:।। इन्द्रादिभिश्च दिक्पालैर्ब्रह्मविष्णुमहेश्वरै:। वास्तुदुर्गागणेशैश्च क्षेत्रपालेन संयुतै:।। भौमान्तरिक्षदेवैश्च कुलदेव्या च मातृभि:। चतुर्भिश्चैव वेदैश्च रुद्रेण सहितास्तथा ॥ स्वागतं वो द्विजश्रेष्ठा मदनुग्रहकारका:। अयमर्घ्य इदं पाद्यं भवद्भि: प्रतिगृह्यताम्।। चरणक्षालनाद्देवा स्तुष्यन्ति शुद्धमानसा:। तज्जलेन च संसिक्ता: पूर्णा: कामा भवन्तु मे।। इमं वोऽर्घं प्रयच्छामि गृह्णन्तु प्रीतमानसा:। पावयन्तु च मां नित्यं पूरयन्तु मनोरथान् ।। इति॥

इसके पश्चात् ब्राह्मण **अर्घो अर्घो अर्घ:॥** यह वाक्य उच्चारण करें।

यजमानः वदेत् – **प्रतिगृह्यताम्।** ब्राह्मणों के हस्त में अथवा उनके सामने अर्घ्य पात्र रखें।

ब्राह्मणाः वदेयुः- **प्रतिगृह्णीम:।**

तदनन्तर यजमान आचार्यादि वरण करें। यजमान हाथ में पूगीफल (सुपारी) ले कर मुख्य आचार्य के दक्षिणजानु(घुटना) में स्पर्श कर अपना गोत्रोच्चार पूर्वक संकल्प करे तथा ब्राह्मणों के गोत्रोच्चार पूर्वक वरण करें।

यजमानस्य गोत्रोच्चारः- **अमुक प्रवरान्वित अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं अमुक वेदान्तर्गत अमुक शाखाध्यायी अमुक शर्मा यजमानः अहं** । अपने यज्ञाचार्य का गोत्रोच्चार करें- **अमुक प्रवरान्वित अमुक गोत्रोत्पन्नं अमुक वेदान्तर्गत अमुक शाखाध्यायिनं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् अमुक कर्मणि आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।** ऐसे बोलकर पूगीफल (सुपारी) आचार्य को प्रदान करें॥

आचार्यो वदेत् – ॐ वृतोऽस्मि॥ ॥ व्रतेनं दीक्षाम् ॥

व्रतेनं दीक्षामांप्नोति दीक्षयांप्नोति दक्षिंणाम् ॥

दक्षिंणा श्रद्धामांप्नोति श्रद्धयां सत्यमांप्यते ॥ १९.३० ॥

आचार्य वरण कर के गन्धादिपुष्पमाला से उनका पूजन कर कङ्कणबन्धन करें ।

कङ्कणबन्धनम् – ॥ यदाबंद्धन् ॥ यदाबंद्धन्दाक्षायुणा हिरंण्यꣳ शुतानींकाय सुमनुस्यमांनाः।॥ तन्मुऽआबंध्नामि शुतशांरदायायुंष्माञ्जुरदंष्टिर्य्यथासंम् ॥ ३४.५२ ॥

प्रार्थना करें- **आचार्यऽस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।**

तथा त्वं यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत॥ आचार्यो वदेत् - **भवामि॥**

इसी प्रकार यजमान् ब्रह्मा का गोत्रोच्चार पूर्वक **अस्मिन् कर्मणि ब्रह्मत्वेन त्वां अहं वृणे ।**

ब्रह्मा- **वृतोऽमि ।** ॥ बृहंस्पतेऽअतिं ॥ बृहंस्पतेऽअति यदुर्य्योऽअर्हांद्द्युमद्विभाति क्रतुंमुज्जनेंषु ॥ यद्दीदयुच्छवंसऽऋतप्रजात तदुस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम् ॥ उपयामगृंहीतोसि बृहुस्पतंये त्वैष ते योनिर्बृहुस्पतंयेत्त्वा ॥ २६.३ ॥

मन्त्र से ब्रह्मा का वरण,पूजन कर प्रार्थना करें-

ॐ यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोक पितामहः। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम॥ ब्रह्मा वदेत् - **भवामि ॥**

इस प्रकार से गाणपत्य एवं सदस्य ऋत्विक वरण कर यजमान् ऋत्विक प्रार्थना करें।

ऋत्विक प्रार्थना –

ब्राह्मणाः सन्तु मे शस्ताः पापात्पान्तु समाहिताः।

देवानां चैव दातारः पातारः सर्वदेहिनाम् ॥ १ ॥

जपयज्ञैस्तथा होमैर्दानैश्च विविधैः पुनः।

देवानां च ऋषीणां च तृप्त्यर्थं याजकाः कृताः ।॥२॥

येषां देहे स्थिता वेदाः पावयन्ति जगत्रयम् ।

रक्षन्तु सततं ते मां ग्रहयज्ञे व्यवस्थिताः ॥ ३ ॥

ब्राह्मणा जङ्गमं तीर्थं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ।

येषां वाक्योदकेनैव शुद्ध्यन्ति मलिना जनाः ॥ ४ ॥

पावनाः सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिणः।

सर्वकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः।॥ ५॥

श्रोत्रियाः सत्यवाचश्च ग्रहध्यानरताः सदा ।

यद्वाक्यामृतसंसिक्ता ऋद्धिं यान्ति नरद्रुमाः ।।६।।

अङ्गीकुर्वन्तु कर्मेतत्कल्पद्रुमसमाशिषः।

यथोक्तनियमैर्युक्ता मंत्रार्थे स्थिरबुद्धयः।।७।।

यत्कृपालोचनात्सर्वा ऋद्धयो वृद्धिमाप्नुयुः।

ग्रहयज्ञे मया पूज्या सन्तु मे नियमान्विताः।।८।।

अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः।

ग्रहध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा।।९।।

अदुष्टभाषणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः।

ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि॥१०॥

ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्।

यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः ॥११॥

ग्रहयागस्य निष्पत्तो भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।

सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं शान्तिकं विधिपूर्वकम्।॥ १२॥ इति॥

यजमान् हस्ते कङ्कणबन्धनम् – ॥ यदाबंद्धन् ॥ यदाबंद्धन्दाक्षायुणा हिरंण्यꣳ शुतानींकाय सुमनुस्यमांनाः॥ तन्मुऽआबंद्धामि शुतशांरदायायुंष्माञ्जुरदंष्टिर्यथासंम् ॥ ३४.५२ ॥

यजमानपत्न्याः वामहस्ते कङ्कण बन्धनम् - ॥ तम्पत्नीभिः॥ तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः॥ नाकङ्गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधि रोचने दिवः ॥ १५.५० ॥

॥इति आचार्यादि ऋत्विक वरणम्॥

महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम्, उज्जयिनी
यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्

इकाई:5

आरम्भिक यज्ञ विधान

5.1.दिग्रक्षणम्- आचार्यादि वरण के पश्चात् सर्वप्रथम आचार्य यज्ञभूमि की शुद्धि के लिए स्व शरीर शुद्धि कर दिग्रक्षण, पञ्चभूसंस्कार पूर्वक अग्निस्थापन करते हैं। तत्पश्चात् आचार्य अनुज्ञा प्राप्त कर सभी ऋत्विकगण अपने – अपने कार्यों का सम्पादन करते हैं।

आचार्य आचमन,प्राणायाम पूर्वक सङ्कल्प करें – **यजमानेन वृतोऽहं आचार्य कर्म करिष्ये। तत्रादौ शरीर शुद्ध्यर्थं पुरुषसूक्त पठनं करिष्ये ॥**

॥ हरिः ॐ ॥ ॥ सुहस्रंशीर्षापुरुंषः॥ सुहस्रंशीर्षा पुरुंषःसहस्राक्षःसुहस्रंपात् ॥ स भूमिंꣳ सुर्व्वतं स्पृत्त्वात्त्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ ३१.१ ॥

वामहस्ते गौर सर्षपान् गृहीत्वा दक्षिणजानु परि धृत्वा दक्षिणहस्तेनाच्छाद्य अभिमन्त्रयेत् ।

॥ कृणुष्ष्वपाजं ॥ कृणुष्ष्व पाजः प्प्रसिंतिन्न पृत्थ्वींय्याहि राजेवामंवाँ२ ॥ऽइभेंन ॥ तृष्ष्वीमनु प्प्रसिंतिन्द्द्रूणानोस्त्तांसि व्विद्ध्यं रुक्षसुस्त्तपिंष्ठैः ॥ ९ ॥

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिता:। ये भूता विघ्नकर्तार: ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा: सर्वतो दिशम्। सर्वेशामविरोधेन पूजाकर्म समारभेत्॥

यदत्र संभुतं भूतम् स्थानमाश्रित्य सर्वश:। स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥

भूतानि राक्षसा वाऽपि येत्र तिष्ठन्ति केचन । ते सर्वेऽप्यप गच्छन्तु पूजाकर्मं करोम्यहम्॥

इत्युक्त्वा सर्षपं दशदिक्षु सर्वत्र विकीरयेत्॥वाम पादेन भूमिं त्रिस्ताडयेत् । उदकोपस्पर्शः ॥

भैरव प्रार्थना – ॐ तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातु मर्हसि॥

॥इति दिग्रक्षणम्॥

5.2. पञ्चगव्यकरणम्-

गोमूत्रं गोमय क्षीरं दधि सर्पि कुशोदकम् ।

पञ्चगव्यमिदम् प्रोक्तं महापातक नाशनम् ॥

"देवोऽभूत्वा यजेद्देवम्" इस शास्त्रवचनानुसार देवताओं के पूजनार्थ/यजनार्थ प्रथम स्वयम् के शरीर तथा आत्मा को देवत्वगुणसम्पन्न कराकर ही देवपूजन /यजन करना चाहिये। हमारे द्वारा दैनन्दिन व्यवहार में ज्ञाताज्ञात अनेक प्रकार के पापकर्म होते हैं। जिनका अंश हमारे देह मे सूक्ष्मरूप में विद्यमान् रहता हैं । देवपूजन/यजन् के पूर्व जिनका परिहार आवश्यक होता हैं। एतदर्थ हमारे शरीर की अन्तर्बाह्य शुद्धि के लिए पञ्चगव्य प्राशन करना चाहिये। पञ्चगव्य में गोमाता से प्राप्त पाँच वस्तुओं का ग्रहण होता हैं। जैसे – **१ गोमूत्र २ गोमय ३ दूध ४ दधि ५ घृत**

ध्यान रहें की देशी गोमाता से प्राप्त पञ्चगव्य ही देहशुद्धि में उपयोग करना चाहिए। गोमता जैसे दिखनेवाले जर्सी प्राणी अथवा महिषि का नहिं।

पञ्चगव्य में उपयुक्त होनेवाले सभी पदार्थ देसी गाय से ही ग्रहण करने चाहिए।

- दूध - 16 भाग
- गोमय - 1 भाग
- गौमूत्र - 2 भाग
- दही - 4 भाग
- घी - 4 भाग

❖ कुशोदक –(कुश को जल में भिगो कर कुछ समय रखने के उपरान्त आवश्यकता अनुसार उपयोग करना चाहिए)।

अन्य विधि-

❖ तृतीय भाग देसी गाय का सकृत का रस।

❖ तृतीय भाग देसी गाय का कच्चा दूध।

❖ तृतीय भाग देसी गाय के दूध की दधि।

❖ एक भाग देसी गाय का घृत।

❖ अर्ध अंश गौमूत्र।

❖ इनको मिश्रित करकर जितना पंचगव्य बनाना हो उसका आधा अंश गौमूत्र तथा

❖ कुशोदक –(कुश को जल में भिगों कर कुछ समय रखने के उपरान्त आवश्यकता अनुसार उपयोग करना चाहिए)।

विधि- आचमन, प्राणायाम पूर्वक सङ्कल्प करें-

मम कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक ज्ञाताज्ञात पापानां निरासन पूर्वक देहशुद्ध्यर्थं आत्मशुद्ध्यर्थं च पञ्चगव्य प्राशनं करिष्ये॥

पञ्चगव्य मेलनम्- कांस्यपात्र में मन्त्रोच्चारण पूर्वक सामग्री मिलाए।

१ गायत्र्या गोमूत्रम्-

तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि॥ धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त्॥३.३५॥

२ गन्धद्वारेति गोमयम् – ॐ गन्धद्वारां......॥

३ आप्यायस्वेति क्षीरम् – आप्या॑यस्व॒ समे॑तु ते वि॒श्वत॑ः सोम॒ वृष्ण्य॑म् ॥ भवा॒ वाज॑स्य सङ्ग॒थे ॥ १२.११२ ॥

४ दधिक्राव्णेति दधि – द॒धि॒क्राव्णो॑ऽअकारिषञ्जि॒ष्णोरश्व॑स्य व॒जिन॑ः ॥ सु॒र॒भि नो॒ मुखा॑ कर॒त्प्र ण॒ऽआयू॑ᳪषि तारिषत् ॥ २३.३२ ॥

५ तेजोऽसीत्याज्यम् – स॒वि॒तुस्त्वा॑ ॥ स॒वि॒तुस्त्वा॑ प्रसुवऽउत्पु॑नाम्यच्छि॑द्रेण प॒वित्रे॑ण॒ सूर्य॑स्य र॒श्मिभि॑ः ॥ स॒वि॒तुर्व॑ः प्रसुवऽउत्पु॑नाम्यच्छि॑द्रेण प॒वित्रे॑ण॒ सूर्य॑स्य र॒श्मिभि॑ः ॥ तेजो॑सि शु॒क्रम॑स्य॒मृत॑मसि॒ धाम॒ नामा॑सि प्रि॒यन्दे॒वाना॒मना॑धृष्टन्दे॒वयज॑नमसि ॥१.३१ ॥

देवस्यत्वेति कुशोदकम्– दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः॒ प्र॑स॒वे॒ऽश्विनो॑र्बा॒हुभ्या॑म्पू॒ष्णो हस्ता॑भ्याम् ॥ ॥१.१० ॥

प्रणवेन यज्ञकाष्ठेन आलोड्य। प्रणवेन अभिमन्त्रयेत्॥

प्रोक्षणम्-

॥ आपो॒हि ॥ आपो॒ हि ष्ठा म॑यो॒भुव॒स्ता न॑ऽऊ॒र्ज्जे द॑धातन ॥ म॒हे रणा॑य॒ चक्ष॑से ॥ ५० ॥

॥ यो॒व॑ः ॥ यो व॑ः शि॒वत॑मो॒ रस॒स्तस्य॑ भाजयते॒ह न॑ः ॥ उ॒श॒तीरि॑व मा॒तर॑ः ॥ ५१ ॥

॥ तस्म्मा॒ऽअर॑म् ॥ तस्म्मा॒ऽअर॑ङ्गमाम वो॒ यस्य॒ क्षया॑य॒ जिन्व॑थ ॥ आपो॑ ज॒नय॑था च नः ॥ ५२ ॥

प्राशनम् - ॐ यत् त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठतिमामके। प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्॥

पञ्चगव्य प्राशन के पश्चात् आचमन करें॥

॥इति पञ्चगव्य करणम्॥

5.3. पञ्चभूसंस्कारपूर्वक अग्निस्थापन-

॥ अ॒ग्निन्दू॒तम् ॥ अ॒ग्निन्दू॒तम्पु॒रो द॑धे हव्य॒वाह॒मुप॑ब्रुवे ॥ दे॒वाँ२ ॥ऽआसा॑दयादि॒ह ॥ १७ ॥

वेदों में अग्नी को **हव्यवाहन्** कहा गया हैं जो देवताओं के लिए हविर्वहन करता हैं । जिस देवता के उद्देश्य से हम अग्नि में आहुती प्रदान करते हैं उसे ततत् देवता के समीप अग्नि के द्वारा

पहुंचाया जाता हैं ।अग्नि अत्यन्त शुचिव्रत होता हैं इसलिए अत्यन्त शुचिता का पालन कर के शुद्ध स्थान में अग्नि की स्थापना करनी चाहिये। पञ्चभूसंस्कार उस क्षेत्र का संस्कार है जहां हमे अग्नि को स्थापित करना हैं।

पञ्चभूसंस्कार सामग्री – कुशा, गोमय, यज्ञपात्र, जलपात्र, गोमयखण्ड(कण्डे), अन्य पूजन सामग्री॥

विधि – अग्नि स्थापना के पूर्व करिष्यमाण यज्ञ में आहुति सङ्ख्या को देखते हुए कुण्ड/स्थण्डिल का निर्माण करें। कुण्ड/स्थण्डिल निर्माण के पश्चात् अभीष्ट सामग्री साथ लेकर पूर्वाभिमुख बैठकर आचमन, प्राणायाम पूर्वक सङ्कल्प करें-

अद्यपूर्वोच्चारित .... अस्मिन् कर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वक अग्निस्थापनं करिष्ये॥

कुशैः त्रिप्रदक्षिणं परिसमुह्य परिसमुह्य परिसमुह्य।(कुशमुष्टि लेकर यज्ञकुण्ड/स्थण्डिल में जिस प्रकार झाड़ू करते है वैसे परिसमूहन् करें)

तान् कुशान् ईशान्यां परित्यज्य ।(उस कुशमुष्टि को ईशान्य दिक् में त्याग करें)

गोमयोदकेन त्रिरुपलिप्य उपलिप्य उपलिप्य ।(गोमय मिश्रित जल से कुण्ड/स्थण्डिल मे लेपन करें) **स्फेन स्रुवमूलेन वा प्रागग्रा तिस्रो रेखा उल्लिख्य उल्लिख्य उल्लिख्य**।(स्फ्य (यज्ञपात्र विशेष) से कुण्ड/स्थण्डिल में पूर्वाग्र तीन रेखा उल्लेखित करें)

अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां रेखाभ्यः प्राक् पांसून् उधृत्य उधृत्य उधृत्य।(की हुई रेखाओं मे से कुछ अंश दक्षिण हाथ के अङ्गुष्ठ व अनामिका से ले कर वामहस्त में रखकर कुण्ड के बाहर विसर्जित करें)

सुवासिन्याः कांस्यपात्रे आनीतमग्निं कुण्डस्यां आग्नेय्यां दिशि निधाय ।(कांस्यपात्र में सुवासिनियों द्वारा आनीत अग्नि कुण्ड/स्थण्डिल के अग्निकोण में स्थापित करें)

हुं फट् इति मन्त्रेण क्रव्यादांशं नैर्ऋत्यां दिशि क्षिपेत् ।(हुं फट् मन्त्र से आनीत अग्नि से एक छोटासा अंश लेकर नैर्ऋत्य दिशा में निक्षेप करें) **उदकोपस्पर्शः** ।(जलस्पर्श करें)

अग्निपात्रमादाय कुण्डोपरि त्रिर्भ्रामयित्वा योनि मार्गेण नीत्वा आत्माभिमुखमग्निं प्रतिष्ठाप्य । (अग्निपात्र लेकर कुण्ड/स्थण्डिल पर तीन बार घुमाकर कुण्ड के योनिमार्ग से कुण्ड के अन्दर अपनी ओर आत्माभिमुख करके अग्निस्थापन करें)

॥ अ॒ग्निन्दू॒तम् ॥ अ॒ग्निन्दू॒तम्पु॒रो द॑धे हव्य॒वाह॒मुप॑ब्रुवे॥ दे॒वाँ२ ॥ऽआसा॑दयादि॒ह ॥ २२.१७ ॥

अग्निमुखं कृत्वा ध्यायेत् – ॥ च॒त्वारि॒ शृङ्गा॑ ॥ च॒त्वारि॒ शृङ्गा॒ त्रयो॑ऽअस्य॒ पादा॒ द्वे शी॒र्षे स॒प्त हस्ता॑सोऽअस्य ॥ त्रिधा॑ ब॒द्धो वृ॑ष॒भो रो॑रवीति म॒हो दे॒वो मर्त्याँ॒२ ॥ऽआवि॑वेश ॥ १७.९१ ॥

ॐ सप्तहस्त श्चतुश्शृङ्गः सपतहस्तो द्विशीर्षकः। त्रिपाद्प्रसन्न वदनः सुखासीन शुचिस्मितः॥ स्वाहां तु दक्षिणे पार्श्वे देवीं वामे स्वधा तथा। बिभ्रद्दक्षिण हस्तैऽस्तु शक्तिमन्नं स्रुवं स्रुचम्॥ तोमरं व्यजनं वामे घृतपात्रं च धारयन्। आत्माभिमुखमासीन एवं रूपो हुताशनः॥अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। हिरण्यवर्ण ममलं समिद्धं विश्वतो मुखम्॥

भो अग्ने शाण्डिल्य गोत्र शाण्डिल्यासित देवलेति त्रिप्रवरान्वित भूमिर्माता वरुणः पिता मेषध्वज प्राङ्मुखो मम सम्मुखो भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक..... नाम्ने वैश्वानराय नमः सकलोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि॥

कुण्ड/स्थण्डिल के आठो कोनों में अग्नि पूजन करें ।

ॐ अग्नये नमः । ॐ हुतवाहनाय नमः। ॐ हुताशने नमः। ॐ कृत्स्नवर्त्मने नमः। ॐ देवमुखाय नमः। ॐ सप्तजिह्वाय नमः। ॐ वैश्वानराय नमः। ॐ जातवेदसे नमः।

मध्ये **श्री यज्ञपुरुषाय नमः॥** इत्यग्निं सम्पूज्य । पञ्चप्राणाहुतिः जुहुयात्।

ॐ प्राणाय स्वाहा।ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा॥

॥इति पञ्चभूसंस्कारपूर्वक अग्निस्थापनम्॥

5.4.कुशकण्डिका (स्थालीपाक) प्रयोग

पञ्चभूसंस्कार पूर्वक अग्निस्थापन करने के पश्चात् नवग्रहादि अन्य पीठस्थ देवता तथा मुख्य देवता स्थापन पूजन कर स्थापित देवताओं के हवन कर्म से पूर्व कुशकण्डिका(स्थालीपाक) नामक अग्निसंस्कार किया जाता हैं।जिसमें सर्वप्रथम जिन देवताओं के प्रीत्यर्थ हम आहुति जिन पदार्थों से प्रदान करेंगे उन-उन पदार्थों का उच्चारण तथा देवताओं का अभिध्यान किया जाता हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि हम यज्ञकर्म में किस देवता को आहुति प्रदान करेंगे॥ (देवताभिध्यानम् प्रत्येक कर्मों मे कर्माङ्गदेवताओं के अनुसार भिन्न - भिन्न होता हैं।)

कुशकण्डिका पूर्व तयारी- कुशपवित्रक, यज्ञपात्र (प्रणिता,प्रोक्षणी,स्रुवा,स्रुक,स्फ्य) आज्यस्थाली,चरुस्थाली, पूर्णपात्र, कुशमुष्टि, समिधा, दो , तीन , पांच, सात इस प्रकार से कुशाओं को ले कर अग्रभाग ग्रन्थी करें ।

वैकल्पिकावधारणम्- तत्र पूर्वेण ब्रह्मणो गमनम्। उत्तरेण पात्रासादनम्। द्वे पवित्रे। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। पालाश: समिध:। प्रांचावाघारौ। समिद्धतमे। आज्यभागौ। पूर्णपात्रम्। वरोदक्षिणा। एतान् वैकल्पिकपदार्थानहं करिष्ये॥

देवताभिध्यानम् – प्रजापतिं - इन्द्रं – अग्निं – सोमं – एता: आज्येन । अग्निं – सूर्यं – अग्नीवरुणौ – अग्नीवरुणौ – विश्वान्देवान् मरुत: स्वर्कान् – वरुणं – आदित्यं - प्रजापतिं – अग्निं शेषेण स्विष्टकृतम् एता: अङ्गप्रधान देवता: आज्येनाहं यक्ष्ये ॥

(देवताभिध्यान में कर्मानुसार देवताओं के हविर्द्रव्या भिन्न-भिन्न हो सकते हैं।)

कुशकण्डिका- **अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्य।** (अग्नी/कुण्ड के दक्षिण दिशा में ब्रह्मासन रखे)। **उदङ्मुखो यजमान: स्वस्य समीपे प्राङ्मुखं ब्रह्माणमुपवेश्य।** (यजमान् उत्तर की ओर मुख कर ब्रह्मा को पूर्वाभिमुख बिठाए)। **गन्धाधिभिरलङ्कृत्य** । (ब्रह्मा को गन्धादि से पूजन करें)। **ब्रह्मा उत्तरेण गत्वा अग्नेर्दक्षिणत: स्वासने उपविशेत् ।स्वासनात् किञ्चित् दर्भं नैर्ऋत्यां क्षिपेत् ।उदकोपस्पर्श:।** (ब्रह्मा उत्तरदिशा से जा कर अग्नि के दक्षिणदिशा में स्वयं के आसन पर बैठ॥ अपने आसन से कुछ दर्भ निकालकर नैर्ऋत्य में फेकें। जल स्पर्श करें)। **प्रणीतापात्रं वामहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तेन उदकेनापूर्य** । (प्रणीतापात्र बाए हाथ में ले कर दहिने हाथ से जल भरें)। **यजमान: - भो ब्रह्मन् अप: प्रणेश्यामि। ब्रह्मा – ॐ प्रणय॥ प्रणीतापात्रं अग्नेरुत्तरत: कुशेषु निदध्यात्** । **प्रथमस्थाने निधाय। द्वितीयस्थाने निदधाति।** (प्रणीता पात्र अग्नि के उत्तर में कुश के रखे हुवें परिकल्पित दो स्थानों मे से प्रथमस्थान में रखकर पुन: द्वितीयस्थान पर रखें)। **पूर्वाग्रदर्भै: ईशानमारभ्य ईशान पर्यंतम् अग्रे: परिस्तरणम् कुर्यात्** । **पुरस्तात् उदगग्रै:। दक्षिणत: प्रागग्रै:। पश्चिमत: उदगग्रै:। उत्तरत: प्रागग्रै:। हस्तस्य इतरथावृत्ति:।** (दर्भ/कुशों को पूर्वाग्र कर के ईशान से ईशान पर्यन्त अग्नि को परिस्तरण करें ।पूर्व में उत्तराग्र। दक्षिण में पूर्वाग्र। पश्चिम में उत्तराग्र। उत्तर में पूर्वाग्र। इसप्रकार कुश रखकर हाथ को विपरीत दिशा में घुमावें)। **अग्नेरुत्तरत: पात्रासादनम्** । (अग्नि के उत्तर में कुश/दर्भ आसादन पूर्वक पात्रासादन करें)। **पवित्रच्छेदनास्त्रयो दर्भ:।** (पवित्र च्छेदनार्थ तीन दर्भ/कुश)। **पवित्रे द्वे** ।(अग्र बांधे हुवे दो पवित्र)। **प्रोक्षणी पात्रम्।** (प्रोक्षणी पात्र)। **आज्यस्थाली** (आज्यस्थाली)। **चरुस्थाली** । (चरुथाली)। **संमार्जन कुशा:पञ्च।** (संमार्जनार्थ अग्र बांधे हुवे पांच कुश) । **उपयमनकुशा: सप्त।** (अग्र बांधे हुवे उपयमन नामक सात कुश)। **तिस्र:समिध:** । (तीन समिधा)। **स्रुव: ।स्रुक्** । **आज्यम्** **।तंडुला: ।पूर्णपात्रम्** ।

(स्रुवा,स्रुक,आज्य,तंडुल,पूर्णपात्र इत्यादि सामग्री आसादन करें)। **पवित्रे कृत्वा। द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय। द्विमूलेन द्वौ कुशौ प्रदक्षिणी कृत्य । सर्वाण्युगपद्धृत्वा। अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां छित्वा तान्युत्तरत: क्षिपेत् ।द्वेग्राह्य:।** (पवित्रकरण करे – पात्रासादन में स्थापित, अग्रभाग बन्धित दो एवं तीन कुशों को कर्ता अपने हाथ में ले कर प्रागग्र दो पवित्रों के उपर उत्तराग्र तीन पवित्र रखकर दो पवित्रों के मूल से दो पवित्रों के अग्र प्रादेश भाग को प्रदक्षिणवत् वेष्टन करे। दो पवित्र के मूल, तीन पवित्र के मूल एवं अग्रभाग को एकत्र कर अनामिका एवं अङ्गुष्ठ से दो पवित्र अग्रभाग का छेदन कर दो पवित्र के मूल एवं तीन पवित्र के मूल तथा अग्र को त्याग कर छेदन किये हुवे दो पवित्र के अग्र को ग्रहण करें) **। द्वे पवित्रे प्रोक्षणी पात्रे निधाय** । (दो पवित्रों को प्रोक्षणी पात्र में रखें)। **पात्रान्तरेण प्रणीतोदकमासिच्य।** (अन्य किसि पात्र से प्रणीता पात्रस्थ जल ले कर प्रोक्षणीपात्र मे प्रोक्षण करें) **अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां उत्पूय।** (प्रोक्षणी पात्रस्थ पवित्र दोनो हाथों के अङ्गुष्ठ अनामिका के मध्यपर्व में पकडकर प्रोक्षणीपात्रस्थ जल शुद्ध करें) । **सव्ये पाणौ कृत्वा । दक्षिणहस्तमुत्तानं कृत्वा मध्यमानामिकाङ्गुल्यो: मध्यपर्वाभ्यामपां उद्दिङ्गनम् – उद्दिङ्गनम् – उद्दिङ्गनम्** ॥(प्रोक्षणीपात्र को बाए हाथ मे लेकर दहिना हाथ उल्टा कर मध्यमा,अनामिका के मध्यपर्व से पात्रस्थ जल को तीन बार उपर की ओर छिडकें)। **ताभिस्तासां प्रोक्षणम्** ॥(प्रोक्षणी पात्रस्थ पवित्र से प्रणीता पात्रस्थ जल से प्रोक्षणी का प्रोक्षण करें)। **पात्राणि प्रोक्षयेत्** ॥(प्रोक्षणी जल से आसादित पात्रों का प्रोक्षण करें)। **आज्यस्थालिं प्रोक्षामि ।चरुस्थालिं प्रोक्षामि। संमार्जन कुशान् प्रोक्षामि। उपयमन कुशान् प्रोक्षामि। समिधं प्रोक्षामि। स्रुवं प्रोक्षामि ।आज्यं प्रोक्षामि। तंडुलान् प्रोक्षामि। पूर्णपात्रं प्रोक्षामि ।अन्योपकल्प द्रव्यं प्रोक्षामि** ॥(आज्यस्थालि,चरुस्थालि इत्यादि आसादित संभारों

का प्रोक्षण करें) । **असंचरे प्रोक्षणीपात्रं निधाय** । (प्रणीता एवं अग्नि के मध्य असंचर स्थान में प्रोक्षणी का स्थापन करें) ।

आज्यस्थाल्यां आज्यं निरूप्य॥(आज्यस्थाली में आज्य रखें)। **चरुस्थाल्यां तण्डुलानोप्य ।लौकिकोदकेन त्रिः प्रक्षाल्य। प्रणीतोदकमासिच्य।** (हवनार्थ चरु/हविष्य बनाने के लिए चरुपात्र मे जल से तीन बार चावल धो कर प्रणीतापात्र के जल से प्रोक्षण करें) । **आज्यं ब्रह्माधिश्रयति** । (आज्य/घी को ब्रह्मा अग्निकुण्ड मे गरम करने के लिए रखें) **।तदुत्तरतः चरुं कर्ताधिश्रयति**।(आज्य के उत्तर में चरु/हविष्य बनाने के लिए यजमान/कर्ता चरुपात्र अग्निकुण्ड मे रखें)**।ज्वलदुल्मुखेन पर्यग्निकरणं कुर्यात् ।इतरथावृत्तिः**। (एक कुश/दर्भ को कुण्डाग्नि से प्रज्वालित कर आज्य एवं चरु के उपर प्रदक्षिणवत् भ्रामण करें। पश्चात् हाथ को विपरीत घुमावें)। **अर्धश्रिते चरौ स्त्रुवं प्रतप्य । संमार्जन कुशैः संमार्ज्य। अग्रैः अग्रादारभ्य मूल पर्यन्तम् । मूलैः मूलादारभ्य अग्र पर्यन्तम् । विपर्यस्य बहिः मूलैः अभ्युक्ष्य । पुनः प्रतप्य । अग्रे: पश्चात् देशे निदध्यात्**। (अर्धपक्व चरु पर स्त्रुव को प्रतपन् /गरम करे । संमार्जन कुशा से प्रणीतोदक से प्रोक्षण करे। वह संमार्जन कुशा के अग्र से स्त्रुवा के सामने अग्रभाग से मूल पर्यन्त तथा संमार्जन कुशा के मूल से स्त्रुवा के पृष्ठभाग में मूल से अग्र पर्यन्त प्रोक्षित करें । पुनः प्रतपन् करे। अग्नि के पश्चिम में अपने दहिने भाग में रखें ।) **संमार्जन कुशानग्नौ प्रक्षेपः**। (संमार्जन कुश की ग्रन्थी निकालकर कुशा अग्नि में विसर्जन करें)। **आज्यमुद्वास्य चरोः पूर्वेनानीय स्त्रुवोत्तरत आसादयेत्** ।(कुण्डस्थित आज्य निकालकर आसादित चरु के पूर्वदिशा से ले कर अग्नि के पश्चिम में स्त्रुवा के उत्तर में रखें)। **चरुं आनीय आज्यस्य उत्तरत आसादयेत्**। (कुण्ड से चरुपात्र निकालकर आज्य के उत्तर मे रखें।) **पवित्राभ्यां आज्यमुत्पूय ।अवेक्ष्य । अपद्रव्य निरसनं ।प्रोक्षणीश्च पूर्ववत्**। (प्रोक्षणीस्थ पवित्र से आज्यपात्र पवित्रित करें। आज्य

देखे।आज्यपात्र में कुछ अपशिष्ट हो तो उसे निकाले। प्रोक्षणी मे पूर्ववत् उत्पवन्/पवित्रकरण करें।) **उपयमनकुशानादाय । तिष्ठन् समिधोऽभ्याधाय** । (उपयमन कुश/ अग्रभाग बन्धित सात कुशों की मुष्टि बाए हाथ में ले अपने स्थान में खडे हो कर दहिने हाथ से तीन समिधा अग्नि में समर्पित करें)। **प्रोक्षणी जलेन सपवित्र हस्तेन ईशानमारभ्य ईशान पर्यन्तं अग्नेः पर्युक्षणं कुर्यात् ।इतरथावृत्तिः।** (दहने हाथ में पवित्र रखकर प्रोक्षणीजल से अग्नि के ईशान से आरम्भ कर ईशान पर्यन्त प्रदक्षिणवत् जलधारा करें। पश्चात् हाथ को विपरीत दिशा में घुमावें।) **पवित्रे प्रणीतासु निधाय**।(पवित्र को प्रणीतापात्र मे रखें) **प्रोक्षणीपात्रं वायवे संस्रव प्रक्षेपार्थं स्थापयेत्** । (संस्रव प्रक्षेपार्थ प्रोक्षणीपात्र वायव्य कोण में रखें) । **अग्निं गन्धादिभिरलङ्कृत्य** ।(गन्धाक्षत पुष्प से अग्नि पूजन करें)। **हृदि सव्यहस्तं निधाय** । (यजनकर्ता अपने बाएं हाथ को हृदय पर रखे)। **ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्धः। वाग्यतः। स्रुवेन जुहुयात्।** (ब्रह्मा के द्वारा यजनकर्ता को कुश/दर्भ के द्वारा स्पर्श कराकर । मौन होकर । स्रुवा से यजन करें।) मन्त्रान्त स्वाहा शब्द में आहुति दे तथा शेष भाग प्रोक्षणीपात्र में त्याग करें । **अग्नेरुत्तरभागे मनसा - ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम॥ अग्नेर्दक्षिणभागे – ॐ इन्द्राय स्वाहा ।इदमिन्द्राय न मम॥ ॐ अग्नये स्वाहा।इदमग्नये न मम॥ ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम॥**

द्रव्यत्याग सङ्कल्पः- (हस्ते जलमादाय) **मया संपादितानि हवनीय द्रव्यानि या या यक्ष्यमान् देवताः ताभ्यः ताभ्यः मया परित्यक्तानि न मम॥ यथा दैवतमस्तु॥**

वराहुतिः – गुणानांन्त्वा गुणपंतिꣳ हवामहे प्रियाणांन्त्वा प्रियपंतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वां निधिपतिंꣳ हवामहे व्वसो मम॥ आहमंजानि गर्ब्भुधमा त्वमंजासि गर्ब्भुधम् ॥ २३.१९ ॥

कुशकण्डिका मूलपाठः - अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्य। उदङ्मुखो यजमानः स्वस्यसमीपे प्राङ्मुखं ब्रह्माणमुपवेश्य। गन्धाधिभिरलङ्कृत्य । ब्रह्मा उत्तरेण गत्वा

अग्नेर्दक्षिणत: स्वासने उपविशेत् ।स्वासनात् किञ्चित् दर्भं नैर्ऋत्यां क्षिपेत् ।उदकोपस्पर्श:। प्रणीतापात्रं वामहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तेन उदकेनापूर्य । । यजमान: - भो ब्रह्मन् अप: प्रणेश्यामि। ब्रह्मा – ॐ प्रणय॥ प्रणीतापात्रं अग्नेरुत्तरत: कुशेषु निदध्यात् । प्रथमस्थाने निधाय। द्वितीयस्थाने निदधाति। पूर्वाग्रदर्भै: ईशानमारभ्य ईशान पर्यंतम् अग्ने: परिस्तरणम् कुर्यात् । पुरस्तात् उदगग्रै:। दक्षिणत: प्रागग्रै:। पश्चिमत: उदगग्रै:। उत्तरत: प्रागग्रै:। हस्तस्य इतरथावृत्ति:। अग्नेरुत्तरत: पात्रासादनम् । पवित्रच्छेदनास्त्रयो दर्भ:। प्रोक्षणी पात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। संमार्जन कुशा:पञ्च। उपयमनकुशा: सप्त। तिस्त्र:समिध: । स्रुव: ।स्रुक्। आज्यम्। तंडुला: ।पूर्णपात्रम्। पवित्रे कृत्वा। द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय। द्विमूलेन द्वौ कुशौ प्रदक्षिणी कृत्य । सर्वाण्युगपद्धृत्वा। अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां छित्वा तान्युत्तरत: क्षिपेत् ।द्वेग्राह्य:। द्वे पवित्रे प्रोक्षणी पात्रे निधाय। पात्रान्तरेण प्रणीतोदकमासिच्य। अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां उत्पूय। सव्ये पाणौ कृत्वा। दक्षिणहस्तमुत्तानं कृत्वा मध्यमानामिकाङ्गुल्यो: मध्यपर्वाभ्यामपां उद्दिङ्गनम् – उद्दिङ्गनम् – उद्दिङ्गनम् ॥ ताभिस्तासां प्रोक्षणम् । पात्राणि प्रोक्षयेत् ।आज्यस्थालिं प्रोक्षामि ।चरुस्थालिं प्रोक्षामि। संमार्जन कुशान् प्रोक्षामि। उपयमन कुशान् प्रोक्षामि। समिधं प्रोक्षामि। स्रुवं प्रोक्षामि ।आज्यं प्रोक्षामि। तंडुलान् प्रोक्षामि। पूर्णपात्रं प्रोक्षामि ।अन्योपकल्प द्रव्यं प्रोक्षामि। असंचरे प्रोक्षणीपात्रं निधाय । आज्यस्थाल्यां आज्यं निरूप्य॥ चरुस्थाल्यां तण्डुलानोप्य। लौकिकोदकेन त्रि: प्रक्षाल्य। प्रणीतोदकमासिच्य। आज्यं ब्रह्माधिश्रयति। तदुत्तरत: चरुं कर्ताधिश्रयति।।ज्वलदुल्मुखेन पर्यग्निकरणं कुर्यात् ।इतरथावृत्ति:। अर्धश्रिते चरौ स्रुवं प्रतप्य । संमार्जन कुशै: संमार्ज्य। अग्रै: अग्रादारभ्य मूल पर्यन्तम् । मूलै: मूलादारभ्य अग्र पर्यन्तम् । विपर्यस्य बहि: मूलै:

अभ्युक्ष्य। पुनः प्रतप्य । अग्नेः पश्चात् देशे निदध्यात्। संमार्जन कुशानग्नौ प्रक्षेपः। आज्यमुद्वास्य चरोः पूर्वेनानीय स्त्रुवोत्तरत आसादयेत्। चरुं आनीय आज्यस्य उत्तरत आसादयेत्। पवित्राभ्यां आज्यमुत्पूय। अवेक्ष्यॉ। अपद्रव्य निरसनं ।प्रोक्षणीश्च पूर्ववत्। उपयमनकुशानादाय । तिष्ठन् समिधोऽभ्याधाय । प्रोक्षणी जलेन सपवित्र हस्तेन ईशानमारभ्य ईशान पर्यन्तं अग्नेः पर्युक्षणं कुर्यात्। इतरथावृत्तिः। पवित्रे प्रणीतासु निधाय। प्रोक्षणीपात्रं वायवे संस्त्रव प्रक्षेपार्थं स्थापयेत् । अग्निं गन्धादिभिरलङ्कृत्य । हृदि सव्यहस्तं निधाय । ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्धः। वाग्यतः। स्त्रुवेन जुहुयात्॥

॥इतिकुशकण्डिका प्रयोगः॥

महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम्, उज्जयिनी
यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्

इकाई:6

नैमित्तिक पूजन

6.1. नवग्रहपूजाविधानम्-

मनुष्यों के व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन में नवग्रहों का अत्यन्त प्रभाव होता है, ग्रहों के अनुकूलता से अनेक दुष्कर कार्य सहज सिद्ध होते हैं वहीं प्रतिकूलता होने पर सहज कार्य भी अत्यन्त कठिन हो जाते हैं। वैदिक, पौराणिक और ज्योतिषीय मान्यतानुसार नवग्रह पूजन/हवन करने पर ग्रहों की अनुकूलता प्राप्त होती है। गृह्य संस्कारों में तथा जातक की जन्मकुण्डली में भी नवग्रहों के अनुकूलता के लिए नवग्रह पूजन/हवन करने का निर्देश हमें वेदों से प्राप्त होता है। नवग्रह पूजन/हवन अनेक कर्मों के अन्तर्गत किया जाता हैं।

आरोग्य ज्ञानसमये संक्रान्तौ रोगसम्भवे ।अतिचारे च यः कुर्याद् ग्रहपूजां विधानतः॥ सोऽभीष्टफलमाप्नोति॥ श्रीकामः शान्तिकामो वा ग्रहयज्ञं समारभेत् । वृष्ट्यायुः पुष्टिकामो वा तथैवाभिचरन्नपि॥ (श्रीयाज्ञवल्क्य)

विवाहादि संस्कार, शान्तिकर्म, पौष्टिककर्म, नूतनकार्यारंभ, रोगशान्ति, आरोग्यप्राप्ति, सुवृष्टि इत्यादि अनेक विशेष अवसरों पर नवग्रह पूजन/हवन किया जाता हैं।

पूजन पूर्व सिद्धता – नवग्रहों का पूजन अग्निस्थापन के पश्चात् कुशकण्डिका से पूर्व करना चाहिये। पूर्वनिर्मित नवग्रह पीठ/वेदि के सामने पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख होकर बैठे । अपने समीप षोडशोपचार पूजन सामग्री नैवेद्य इत्यादि,पुष्प,कुंकुम,चन्दन्)) रखें। आचार्य की अनुज्ञा से आचमन-प्राणायाम पूर्वक् संकल्प करें॥

संकल्प – देशकालौ संकीर्त्य ..... । अद्यपूर्वोच्चारित एवं ग्रहगणगुण विशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्य तिथौ । अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक नाम्नः यजमानः अहम् । पूर्व

संकल्पित समग्र फल प्राप्त्यर्थं प्रारब्ध कर्मण: सांगता सिद्ध्यर्थं नवग्रहानां आनुकूलता सिद्ध्यर्थ्यं च आदित्यादि नवग्रह मण्डल स्थापन पूजनं करिष्ये॥ (आवाहन क्रम में सर्वप्रथम नवग्रहों का तत्पश्चात् अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता, पंचलोकपाल, वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल तथा इन्द्रादि दशदिक्पालों का आवाहन पूजन किया जाता हैं।)

आदित्यादि नवग्रहानामावाहनम्-

॥ आकृष्ण्णेन ॥ आ कृष्ण्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्त्यञ्च ॥ हिरण्ण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्श्यन् ॥ ३३.४३ ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपसगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ सूर्याय नम: सूर्यमावाहयामि स्थापयामि ॥

॥ इमन्देवाः॥ इमन्देवाऽअसपत्त्नꣳ सुवद्धम्महते क्षत्राय महते ज्ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय॥ इमममुष्ष्य पुत्रममुष्ष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोमी राजा सोमोस्म्माकम्ब्राह्मणानाꣳ राजा॥ ९.४०॥

ॐ भूर्भुव:स्व: यमुनातीरोद्भव आत्रेयसगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ सोमाय नम: सोममावाहयामि स्थापयामि ॥

॥अग्निर्म्मूर्द्धा॥ अग्निर्म्मूर्द्धा दिवः꠲ ककुत्पतिः पृथिव्व्याऽअयम्॥ अपाꣳ रेताꣳसि जिन्न्वति॥३.१२॥

ॐ भूर्भुव: स्व: अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण भो भौम इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐभौमाय नम: भौममावाहयामि स्थापयामि ॥

॥ उद्बुद्ध्यस्वा ॥ उद्बुद्ध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सꣳसृजेथामयञ्च ॥ अस्मिन्त्सधस्त्थेऽअद्ध्युत्तरस्मिन्विश्श्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥ १५.५४ ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: मगधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र हरितवर्ण भो बुध इहागच्छ इहतिष्ठ

ॐ बुधाय नम: बुधमावाहयामि स्थापयामि॥

॥ बृहस्प्पते॒ऽअति॑ ॥ बृह॑स्प्पते॒ऽअति॒ यद॒र्य्यो॒ऽअर्हा॑द्द्युमद्विभाति॒ क्रतु॑मज्जने॑षु ॥ यद्दी॒दय॒च्छव॑सऽऋतप्प्रजात॒ तद॒स्म्मासु॒ द्रवि॑णन्धेहि चि॒त्रम् ॥ उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोसि॒ बृह॒स्प्पत॑ये त्त्वैष ते॒ योनि॒र्ब्बृह॒स्प्पत॑येत्त्वा ॥ २६.३ ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते इहागच्छ इहतिष्ठ

ॐ बृहस्पतये नम: बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि॥

अन्ना॑त्परि॒स्स्रुतो॒ रसम्ब्रह्म॑णा॒ व्व्य॑पिबत्क्ष॒त्रम्पय॒:᳘ सोम॑म्प्र॒जाप॑ति:᳘। ऋ॒तेन॑ स॒त्त्यमि॑न्द्रि॒यँव्वि॒पान॑ᳬ शु॒क्क्रमन्ध॑स॒ऽइन्द्र॑स्येन्द्रि॒यमि॒दम्पयो॒मृत॒म्मधु॑ ॥ १९.७५ ॥

ॐभूर्भुव: स्व: भोजकटदेशोद्भव भार्गवसगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र इहागच्छ इहतिष्ठ।

ॐ शुक्राय नम: शुक्रमावाहयामि स्थापयामि॥

शन्नो॑ दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ऽआपो॑ भवन्तु पी॒तये॑॥ शँय्यो॒र॒भिस्र॑वन्तु न:᳘॥ ३६.१२ ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपसगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर इहागच्छ इहतिष्ठ।

ॐ शनैश्चराय नम: शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि॥

कया॑ नश्चि॒त्रऽआभु॑वदू॒ती स॒दावृ॑ध॒:᳘ सखा॑ ॥ कया॒ शचि॑ष्ठया वृ॒ता ॥ २७.३९ ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: राठिनापुरोद्भव पैठिनसगोत्र नीलवर्ण भो राहो इहागच्छ इहतिष्ठ।

ॐ राहवे नम: राहुमावाहयामि स्थापयामि॥

के॒तुङ्कृ॒ण्ण्वन्न॑के॒तवे॒ पेशो॑ मर्य्या॒ऽअपे॒शसे॑ ॥ सम॒षद्भि॑रजायथा᳘ ॥ ३७ ॥

॥ॐ भूर्भुव:स्व: अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिसगोत्र धूम्रवर्ण भो केतो इहागच्छ इहतिष्ठ।

ॐ केतवे नम: केतुमावाहयामि स्थापयामि॥

(नवग्रहों के आवाहन के पश्चात् निर्दिष्ट स्थानों में अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता, पञ्चलोकपाल, वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल तथा इन्द्रादि दश दिक्पालों का भी आवाहन करें)

अधिदेवतानामावाहनम्-

सूर्यदक्षिणपार्श्वे – ॥त्र्यम्बकँय्यजामहे॥ त्र्यम्बकँय्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्॥ उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात्॥ त्र्यम्बकँय्यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम्॥ उर्व्वा- रुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः ॥३.६०॥

सोमदक्षिणपार्श्वे- ॥ श्रीश्च ॥ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण ॥ ३१.२२ ॥

भौमदक्षिणपार्श्वे- ॥ यदक्रन्दः॥ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमानऽ उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् ॥ श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यम्महि जातन्तेऽअर्वन् ॥ २९.१२ ॥

बुधदक्षिणपार्श्वे – ॥विष्णो रराटम् ॥ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि ॥ वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥५.२१॥

गुरुदक्षिणपार्श्व - आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योतिव्याधी महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्व्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्य्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तांय्योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ २२.२२ ॥

शुक्रदक्षिणपार्श्वे- सजोषाऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमम्पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ॥ जहि शत्रूँ ॥रप मृधो नुदस्वाथाभयङ्कृणुहि विश्वतो नः॥ उपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा मरुत्वतऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते ॥ ३७ ॥

शनिदक्षिणपार्श्वे - य॒माय॒ त्वाङ्गि॑रस्वते पितृ॒मते॒ स्वाहा॑ ॥ स्वाहा॑ घ॒र्म्माय॒ स्वाहा॑ घ॒र्म्मः᳚पि॒त्रे ॥ ३८.९ ॥

राहुदक्षिणपार्श्वे- का॒र्षि॑रसि समु॒द्रस्य॒ त्वा क्षि॑त्त्या॒ऽउन्न॑यामि॥ समापो॑ऽअ॒द्भिरं॑ग्मत॒ समोष॑धीभि॒रोष॑धीः॥६.२८॥

केतुदक्षिणपार्श्वे- ॐचित्रावसो...।

ॐ भूर्भुव:स्व: ॐचित्रगुप्ताय नम: चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि॥

प्रत्यधिदेवतानामावाहनम् -

सूर्यवामपार्श्वे – अ॒ग्निन्दू॒तम्पु॒रो द॑धे हव्य॒वाह॒मुप॑ब्रुवे॥ दे॒वाँ२ ॥ऽआसा॑दयादि॒ह ॥ २२.१७ ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: अग्नये नम: अग्निमावाहयामि स्थापयामि॥

सोमवामपार्श्वे- आपो॒ हि ष्ठा म॑यो॒भुव॒स्ता न॑ऽऊ॒र्ज्जे द॑धातन ॥ म॒हे रणा॑य॒ चक्ष॑से ॥ ११.५० ॥

। ॐभूर्भुव:स्व: अद्भ्यो नम: अप: आवाहयामि स्थापयामि॥

भौमवामपार्श्वे – स्यो॒ना पृ॑थिवि नो भवानृक्ष॒रा नि॒वेश॑नी ॥ यच्छा॑ नः॒ शर्म्म॑ स॒प्रथाः॑॥ अप॑ नः॒ शोशु॑चद॒घम् ॥ ३५.२१ ॥

ॐभूर्भुव:स्व: पृथिव्यै नम: पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि॥

बुधवामपार्श्वे - इ॒दँ॒विष्णु॒र्विच॑क्रमे त्रे॒धा नि द॑धे प॒दम्॥ समू॑ढमस्य पाꣳसु॒रे स्वाहा॑॥५.१५॥

ॐ भूर्भुव:स्व: विष्णवे नम: विष्णुमावाहयामि स्थापयामि॥

गुरुवामपार्श्वे- त्रा॒तार॒मिन्द्र॑मवि॒तार॒मिन्द्रꣳ॒ हवे॑हवे सु॒हव॒ꣳ॒ शूर॒मिन्द्र॑म् ॥ ह्वया॑मि श॒क्रम्पु॑रुहू॒तमिन्द्र॑ꣳ स्व॒स्ति नो॑ म॒घवा॑ धा॒त्विन्द्रः॑ ॥ २०.५० ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: इन्द्राय नम: इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥

शुक्रवामपार्श्वे – अदि॑त्त्यै रास्न्ना॑सीन्द्रा॒ण्या ऽउ॒ष्णीषः॑ ॥ पू॒षासि॑ घ॒र्म्माय॑ दीष्व ॥ ३८.३ ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: इन्द्राण्यै नम: इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि॥

शनिवामपार्श्वे – प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता वयꣳ स्याम पतयो रयीणाꣳ स्वाहा ॥ रुद्र यत्ते क्रिवि परन्नाम तस्मिन्हुतमस्यमेष्टमसि स्वाहा ॥ १०.२० ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: प्रजापतये नम: प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि॥

राहुवामपार्श्वे- नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ १३.६ ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: सर्पेभ्यो नम: सर्पानावाहयामि स्थापयामि॥

केतुवामपार्श्वे - ब्रह्म जज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽआवः ॥ स बुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ १३.३ ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: ब्रह्मणे नम: ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥

पञ्चलोकपालदेवतानामावाहनम् – सूर्यशनैश्चरमध्यभागे **वाहयामि स्थापयामि॥**

गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम॥ आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ २३.१९ ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: गणपतये नम: गणपतिम् आवाहयामि स्थापयामि॥

प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा॥ अम्बेऽअम्बिकेम्बालिके न मा नयति कश्चन॥ ससस्त्यश्वक:सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् ॥२३.१८॥

ॐ भूर्भुव: स्व: दुर्गायै नभ: दुर्गामावाहयामि स्थापयामि॥

वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्त्सोमपीतये॥ २७.३२॥

ॐ भूर्भुव: स्व: वायवे नम: वायुमावाहयामि स्थापयामि॥

घृतङ्घृतपावानः पिबत वसाँवसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा॥
दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥६.१९॥

ॐ भूर्भुव:स्व: आकाशाय नम: आकाशमावाहयामि स्थापयामि॥

या वाङ्कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती ॥ तया यज्ञम्मिमिक्षतम् ॥ उपयामगृहीतोस्यश्विभ्यान्त्वैष ते योनिर्म्माध्वीभ्यान्त्वा ॥ ७.११ ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: अश्विभ्यां नम: अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि ॥

क्षेत्रपाल आवाहनम् –

गुरोरुत्तरे- नहि स्पशमविदन्नन्यम् स्म्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्ग्नेः॥ एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्त्यंवैश्वानरङ्क्षैत्रजित्त्यायदेवाः॥ ६० ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: क्षेत्राधिपतये नम: क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि॥ क्षेत्रपाल उत्तरे – **ॐवास्तोष्पते.. ।ॐ भूर्भुव:स्व: वास्तोष्पतये नम: वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि॥**

(नवग्रह मण्डल के बाहर पूर्वादि दिशाओं में इन्द्रादि दशदिक्पालों का आवाहन करें।)

पूर्वे – त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवेहवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ २०.५० ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: इन्द्राय नम: इन्द्रमामवाहयामि स्थापयामि॥

आग्नेय्याम् – त्वन्नोऽअग्ग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः॥ यजिष्ठो वह्नितम शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्म्मत् ॥ २१.३ ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: अग्नये नम: अग्निमावाहयामि स्थापयामि॥

दक्षिणे- यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे ॥ ३८.९ ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: यमाय नम: यममावाहयामि स्थापयामि॥

नैर्ऋत्याम् – असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्त्यामन्विहि तस्करस्य ॥ अन्यमस्म्मदिच्छ सा तऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुब्भ्यमस्तु ॥ १२.६२ ॥

ॐ भर्भुव:स्व: निर्ऋतये नम: निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि ॥

पश्चिमे- तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दमानुस्तदाशांस्ते यजमानो हुविर्भिः ॥

अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुशꣳस मा नऽआयुः प्रमोषीः ॥ २१.२ ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: वरुणाय नम: वरुणमावाहयामि स्थापयामि ॥

वायवे - आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् ॥

वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ २७.२८ ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: वायवे नम: वायुमावाहयामि स्थापयामि ॥

उत्तरे - वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि ॥५६ ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: सोमाय नम: सोममावाहयामि स्थापयामि ॥

ईशान्याम् – तमीशानुञ्जगतस्तुस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ॥

पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ १८ ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: ईशानाय नम: ईशानमावाहयामि स्थापयामि ॥

ईशान इन्द्रयोर्मध्ये - अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः ॥

यः शꣳसते स्तुवते धायि पज्रऽइन्द्रज्ज्येष्ठाऽअस्माँ२ ॥ऽअवन्तु देवाः॥ ५० ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: ब्रह्मणे नम: ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥

निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये- स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी ॥

यच्छा नः शर्म्म सुप्रथाः॥ अप नः शोशुचदघम् ॥ २१ ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: अनन्ताय नम: अनन्तमावाहयामि स्थापयामि ॥

प्रतिष्ठापनम्- मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य

बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमन्दधातु ॥

विश्वे देवासऽइह मादयन्तामोꣳम्प्रतिष्ठ ॥१३ ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: सूर्याद्यावाहितनवग्रहमण्डलदेवता: सुप्रतिष्ठिता: वरदा: भवत ।

पूजनम्- ग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्॥ तेषाँविशिप्रियाणाँवोहमिषमूर्ज्जꣳ समग्रभमुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥ सम्पृचौ स्त्थः८ सम्मा भद्रेण पृङ्क्तंविपृचौ स्त्थो वि मा पाप्मना पृङ्क्तम् ॥ ४ ॥

ॐ भूर्भुव:स्व: सूर्यादिनवग्रहमण्डलदेताभ्यो नम: ध्यायामि॥

इत्यादि षोडशोपचारै: सम्पूज्य॥

(उक्त प्रकार से नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताओं का षोडशोपचार पूजन करें)

अर्पणम् – अनेन कृतेन पूजनेन आदित्यादि नवग्रह मण्डलस्थ देवता: प्रीयन्ताम् न मम॥

॥ इतिग्रहस्थापनप्रयोग: ॥

6.2.सत्यनारायणव्रतकथाविधि-

व्रतों से अनेक अंशों में प्राणिमात्र का और विशेषकर मनुष्यों का अत्यन्त उपकार होता है। तत्त्वदर्शी महर्षियों ने इनमें विज्ञान के सैकड़ों अंशों का उल्लेख किया हैं। ग्रामीण या देहाती मनुष्य तक इस बात को जानते हैं कि अरुचि, अजीर्ण, उदरशूल, मलावरोध, सिरदर्द और ज्वर-जैसे स्वतः सम्भूत साधारण रोगों से लेकर कोढ़, उपदंश, जलोदर, अग्निमान्द्य, क्षतक्षय और राजयक्ष्मा-जैसी असाध्य या प्राणान्तक महाव्याधियाँ भी व्रतों के प्रयोग से सही होकर अपूर्व तथा स्थायी आरोग्यता प्राप्त होती है। यद्यपि रोग भी जन्मान्तर कृत पापों का परिणाम हैं और ऐसे पापों का निवारण व्रत रखने से दूर होते ही हैं, तथापि कायिक, वाचिक, मानसिक और संसर्गजनित पाप और महापापादि भी व्रतों से दूर होते हैं। उनके समूल नाश का प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि व्रतारम्भ के पहले पापयुक्त प्राणियों का मुख हतप्रभ रहता है और व्रत की समाप्ति होते ही वह सूर्योदय के कमल की तरह खिल जाता है। भारत में व्रतों का सर्वव्यापी

प्रचार है। सभी श्रेणी के नर-नारी सूर्य-सोम-भौमादि के एकभुक्तसाध्य व्रत से लेकर एकाधिक कई दिनों तक के अन्नपानादि वर्जित कष्टसाध्य व्रतों तक को बड़ी श्रद्धा से करते हैं। इनके फल और महत्त्व भी प्रायः सर्वज्ञात हैं। व्रतों के प्रभाव से मनुष्यों की आत्मा शुद्ध होती है। संकल्पशक्ति बढ़ती है। बुद्धि, विचार, चतुराई या ज्ञानतन्तु विकसित होते हैं। शरीर के अन्तस्तल में परमात्मा के प्रति भक्ति, श्रद्धा और तल्लीनता का संचार होता है। व्यापार-व्यवसाय, कला-कौशल, शास्त्रानुसंधान और व्यवहार- कुशलता का सफल सम्पादन उत्साहपूर्वक किया जाता है और सुखमय दीर्घ जीवन के आरोग्य-साधनों का स्वतः संचय हो जाता है। मनुष्य-जीवन को सफल करने के कामों में व्रत की बड़ी महिमा मानी गयी है।जिसका अनन्य साधारण महत्व हमारें शास्त्र ग्रन्थों में उल्लेखित हैं।

सत्यनारायण व्रत भी अनेक प्रकार की कामना को पूर्ण करनेवाला और कलियुग में अत्यन्त शीघ्र फलप्रदायक व्रत हैं। शाक्त, शैव, गणेश आदि संप्रदायों में इसी व्रत को अपने – अपने इष्ट के प्रीत्यर्थ सत्याम्बा, सत्यविनायक, सत्यदत्त आदि प्रकार से किया जाता हैं। इस व्रत में मूलतः अपने इष्ट का पूजन कर उनकी ज्ञानप्रद लीला कथाओं का पठन, श्रवण किया जाता हैं, जिससे हम अपने निजि जीवन में सत्यमार्ग का अनुसरण कर इष्टप्राप्त कर सकते हैं।सत्यनारायण व्रत के लिए केवल दिनशुद्धि देखकर पौर्णिमा आदि पर्वों पर अथवा अभीष्ट दिन में किया जाता हैं। सत्यनारायण व्रत कथा के अनुसार पूजन सायं काल में प्रायः किया जाता हैं।

पूजन सामग्री –कुंकुम, हल्दी, चन्दन, अबीर, गुलाल, मौली, चावल, सुपारी, यज्ञोपवीत, घी, तेल, बत्ती, माचीस, कर्पूर, सप्तमृत्तिका, सर्वौषधी, धूप, दीप, दूध, दही, शहद, चीनी, लौंग, इलायची, कलश, पूर्णपात्र, पञ्चपात्र, वस्त्र, आसन, पुष्प, पुष्पमाला, तुलसी, दूर्वा, पानपत्ता, आम की टहनी, नैवेद्य ।

नैवेद्य निर्माण विधि- सत्यनारायण पूजन के लिए नैवेद्य निर्माण करें।

नैवेद्यं भक्तितो दद्यात् सपादं भक्ष्यमुत्तमम् । रम्भाफलं घृतं क्षीरं गोधूमस्य च चूर्णकम्॥ अभावे शालिचूर्णं वा शर्करा वा गुडस्तथा । सपादं सर्वभक्ष्याणि चैकीकृत्य निवेदयेत्॥ (सत्यनारायण व्रत कथा)

नैवेद्य वस्तुएं- केला, घी, दूध, गेहूं का आटा अथवा रवा, चिनी अथवा गुड।

सत्यनारायण पूजन के नैवद्य परिमाण में सपाद (सव्वा) का महत्व हैं , जिस कारण नैवेद्य की वस्तुएं सपाद परिमाण में ही लेनी चाहियें। जैसे- सवापाव, सवाकिलो इत्यादि। गेहूं का आटा अथवा रवा घी में भुज कर केला काटकर मिलावें पश्चात् दूध में पकाकर चिनी अथवा गुड मिलाकर तैयार करें।

पूजन सज्जता - सर्वप्रथम् संध्यावन्दनादि नित्यकर्म करे। पूर्वाभिमुख बैठकर अपने सामने चौकी पर चावल से अष्टदल बनाकर सूत्रवेष्टित कलश रखें।नित्यपूजन सामग्री अपने दहिने ओर रखे, कर्मपात्र अपने सामने रखें, कलश के दाए-बाए क्रमशः घृत-तैल का दीपक प्रज्वालित करें। नैवेद्य,फल,ताम्बूल इत्यादि सामग्री सामने रखे , पूजन के लिए प्रतिमा अथवा सत्यनारायण देवता का चित्र रखें, यथा संप्रदाय कलश के सामने नवग्रहादि के आवाहन/पूजन के लिए सुपारी रखें । आचमनादि कर पूजन आरंभ करें।

पूजन विधि –

सर्वप्रथम देहशुद्धि पूर्वक तिलक धारण करें।

तिलक धारणम् - स्वुस्ति नुऽइन्द्रों वृद्धश्श्रवाः स्वुस्ति नंः पूषा विश्ववेदाः ॥

स्वुस्ति नुस्ताक्ष्योंऽअरिष्टनेमिः स्वुस्ति नो बृहुस्पतिर्दधातु ॥ १९ ॥

आचमनम् – प्राणायामः। - ॐ केशवाय नमः स्वाहा।..........॥

शान्तिसूक्त पाठः-

आ नो भुद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः ॥

देवा नो यथा सदमिद्वृधेऽअसुन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥ १४ ॥

देवानाम्भुद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवानाᳬं रातिरुभि नो निवर्त्तताम् ॥

देवानाᳬं सुक्ख्यमुपसेदिमा व्वयन्देवा नऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥ १५ ॥

तान्पूर्व्वया निविदा हूमहे व्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमुस्रिधम् ॥

अर्य्यमणँव्वरुणᳬं सोमंमश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥ १६ ॥

तन्नो व्वातो मयोभु व्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ॥

तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतधिष्ण्या युवम् ॥ १७ ॥

तमीशानञ्जगतस्तुस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम् ॥

पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ १८ ॥

स्वस्ति नऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः ॥

स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्द्दधातु ॥ १९ ॥

पृषदश्वा मुरुतः पृश्निमातरः शुभँय्यावानो व्विदथेषु जग्मयः ॥

अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो व्विश्वे नो देवाऽअवसागमन्निह ॥ २० ॥

भुद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भुद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः ॥

स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितँय्यदायुः ॥ २१ ॥

शतमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जुरसन्तनूनाम् ॥

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मद्ध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥ २२ ॥

अदितिर्द्यौरदितिरुन्तरिक्षमदितिर्म्माता स पिता स पुत्रः ॥

व्विश्वे देवाऽअदितिः पञ्च जनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्त्वम् ॥ २३ ॥

गणपत्यादि स्मरणम् – श्रीमन्महागणाधिपतये नमः..... ॥

सङ्कल्पः – विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः......... शुभपुण्यतिथौ । गोत्रोच्चारः....... अहम् । ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थम् मम समस्त ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् अप्राप्तलक्ष्मी प्राप्त्यर्थम् प्राप्तलक्ष्म्याश्चिरकालसंरक्षणार्थं सकलमनेप्सितकामनासंसिद्ध्यर्थं लोके सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादिप्राप्त्यर्थम् मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपशमनार्थं मम सभार्यस्य सपुत्रस्य सबान्धवस्य अखिलकुटुम्बसहितस्य सपशोःसमस्तभयव्याधिजरापीडामृत्युपरिहारद्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धयर्थं मम जन्मराशेः अखिलकुटुम्बस्य वा जन्मराशेः सकाशात् ये केचित् विरुद्धचतुर्थाष्टमद्वादशस्थानस्थित क्रूरग्रहाः तैः सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशद्वारा एकादशस्थानस्थितवत् शुभफलप्राप्त्यर्थं पुत्रपौत्रादिसन्ततेः अविच्छिन्नवृद्ध्यर्थम् आदित्यादिनवग्रहानुकूलतासिद्ध्यर्थम् इन्द्रादिदशदिक्पाल प्रसन्नतासिद्ध्यर्थम् आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक त्रिविधतापोपशमनार्थम् धर्मार्थकाममोक्षफलावाप्त्यर्थं च श्रीमद्सत्यनारायणः साङ्गः सपरिवार देवताः प्रीत्यर्थं यथा शक्ति श्रीमद्सत्यनारायणस्य पूजनं कथाश्रवणं च करिष्ये॥ तत्रादौ निर्विघ्नता सिध्यर्थं महागणपति पूजनम् , कलश स्थापन पूजनम्, पृथ्वी पूजनम् , वरुणपूजनम्, कलशशंखघण्टार्चनं च करिष्ये॥

(इस प्रकार संकल्प कर गणपति आदि अङ्ग देवताओं का पूजन करें।)

मुही द्यौःपृथिवी चं नऽइुमँय्युज्ज्ञम्मिंमिक्षताम् ॥ पिपृतान्नो भरीमभिः॥८.३२॥

इत्यादि पुण्यहवाचनोक्त विधि से कलश स्थापन कर तदुपरि शालिग्राम/लड्डुगोपाल अथवा अन्य किसी भी विष्णु प्रतिमा को षोडशोपचार पूजन पूर्वक कलश पर पूर्णपात्र रखकर स्थापित करें । पश्चात् षोडशोपचार पूजन करें)

षोडशोपचार पूजन –

ध्यानम्-

स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः स॒हस्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात् ॥

स भूमि॑ꣳ स॒र्वत॑ स्पृ॒त्वात्य॑तिष्ठद्दशाङ्गु॒लम् ॥ ३१.१ ॥

ॐ सशङ्खचक्रं सकिरीट कुण्डलं सपीत वस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्।

सहारवक्षस्थल शोभिकौस्तुभम् नमामि विष्णुं सिरसा चतुर्भुजम्॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः। ध्यायामि॥ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि॥

आवाहनम् –

पुरु॑ष ए॒वेदꣳ सर्वं॒ यद्भू॒तं यच्च॒ भाव्य॒म् ॥

उ॒तामृ॑त॒त्वस्येशा॑नो॒ यदन्ने॑नाति॒रोह॑ति ॥ ३१.२ ॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः।आवाहयामि ॥आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि॥

आसनम्-ॐवर्ष्मोऽस्मिसमानानायुध्यतामिवसूर्यः।

इमन्तमभितिष्ठामियोमाश्चाभिदासति॥ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः।आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि॥

पाद्यम्-

ए॒तावा॑नस्य महि॒मातो॒ ज्याया॑ꣳश्च॒ पूरु॑षः। पादो॑ऽस्य॒ विश्वा॑ भू॒तानि॑ त्रि॒पाद॑स्या॒मृत॑न्दि॒वि ॥३१.३ ॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः। पादयोः पाद्यम् समर्पयामि॥

अर्घ्यम्-

त्रि॒पादू॒र्ध्वऽउदै॒त्पुरु॑षः॒ पादो॑ऽस्ये॒हाभ॑व॒त्पुनः॑ ॥

ततो॒ विष्व॒ङ्व्य॑क्क्रामत्साशनानश॒ने॑ऽअ॒भि ॥ ३१.४ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः।हस्तयोः अर्घ्यम् समर्पयामि॥

आचमनीयम्-

ततो॑ वि॒राड॑जायत वि॒राजो॒ऽअधि॒ पूरु॑षः॥

स जा॒तोऽअत्य॑रिच्यत प॒श्चाद्भूमि॒मथो॑ पु॒रः॥ ३१.५ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः।मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि॥

स्नानम् –

तस्मा॑द्य॒ज्ञात्स॑र्व॒हुत॒ः सम्भृ॑तम्पृषदा॒ज्यम् ॥

प॒शूँस्ताँश्च॑क्रे वाय॒व्या॒नार॒ण्या ग्ग्रा॒म्याश्च॒ ये ॥ ३१.६ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः। सर्वाङ्गे स्नानीयं जलं समर्पयामि॥

पञ्चामृतस्नानम् –

पयःस्नानम्-

पय॑ः पृथि॒व्याम्पय॒ऽओष॑धीषु॒ पयो॑ दि॒व्य॒न्तरि॑क्षे॒ पयो॑ धाः ॥

पय॑स्वतीः प्र॒दिश॑ः सन्तु॒ मह्य॑म् ॥ १८.३६ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः। पयः स्नानम् समर्पयामि॥ पयः स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानम् समर्पयामि॥

दधिस्नानम्-

दुधिक्क्राव्ण्णोऽअकारिषञ्जिष्ण्णोरश्श्वस्य व्वाजिनः ॥

सुरभि नो मुखा करत्त्प्र णऽआयूᳬंषि तारिषत् ॥ २३.३२ ॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः। दधिस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानम् समर्पयामि॥

घृतस्नानम्-

घृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्श्रितो घृतम्म्वस्य धाम ॥

अनुष्ष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतँव्वृषभ व्वक्षि हव्यम् ॥ १७.८८ ॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः। घृतस्नानम् समर्पयामि। घृतस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानम् समर्पयामि॥

मधुस्नानम्-

मधु व्वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः॥

माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः॥ १३.२७ ॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः। मधुस्नानम् समर्पयामि। मधुस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानम् समर्पयामि॥

शर्करास्नानम् –

अपाᳬं रसमुद्वयसᳬं सूर्य्ये सन्तᳬं समाहितम् ॥ अपाᳬं रसस्य यो रसस्तँव्वो गृह्णाम्म्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्म्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥९.३॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः। शर्करास्नानम् समर्पयामि। शर्करास्नानान्ते शुद्धोदक स्नानम् समर्पयामि॥

एकतन्त्रेण पञ्चामृतस्नानम् -

पञ्च नुद्यः॰ सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः॰॥ सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेभवत्सुरित् ॥ ३४.११ ॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः। मिलित पंचामृत स्नानम् समर्पयामि। पंचामृतस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानम् समर्पयामि॥

गन्धोदकस्नानम्-

गुन्धुर्वस्त्त्वा विुश्वावसुः॰ परिदधातु विश्श्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिुधिरस्युग्निरिड ऽईडितः॥ इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्श्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिुधिरस्युग्निरिडऽईडितः॥ मित्रावरुणौ त्त्वोत्तरतः परिधत्तान्ध्रुवेण धर्म्मणा विश्श्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिुधिरस्युग्निरिडऽईडितः ॥२.३॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः। गन्धोदक स्नानम् समर्पयामि।गन्धोदकान्ते शुद्धोदक स्नानम् समर्पयामि॥

उद्वर्तनस्नानम् –

अुहुःशुनांतेऽअुहुःशुः पृच्च्य तुाम्परुषापरुः ॥
गुन्धस्तेुसोमंमवतुमदायुरसोऽअच्युतः ॥ २०.२७ ॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः। उद्वर्तनस्नानम् समर्पयामि।उद्वर्तनस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानम् समर्पयामि॥स्नानाङ्ग आचमनीयम् जलं समर्पयामि॥

अनेन पञ्चामृत पूजनेन श्रीमद् सत्यनारायण देवता: प्रीयन्ताम् न मम॥

उत्तरे निर्माल्यं विसृज्य।हस्तं प्रक्षाल्य।पुनः गन्धाक्षत पुष्पैः संपूज्य।अभिषेकं कुर्यात्॥

अभिषेकः –

सुहस्रशीर्षापुरुषः८॥ सुहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सुहस्रपात् ॥

स भूमिꣳ सुर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ ३१.१ ॥

ॐ सर्वेषां वा एष वेदानाꣳ रसो यत् साम सर्वेषामेवैनमेतत् वेदानाꣳ रसेनाभिषिञ्चति॥ अमृताभिषेकोऽस्तु॥ शान्तिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः॥अभिषेक स्नानम् समर्पयामि॥स्नानाङ्ग आचमनीयम् जलं समर्पयामि॥

शुद्धोदक स्नानम् –

शुद्धवालः सुर्वशुद्धवालो मणिवालुस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कुर्ण्णा यामाऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः॥ २४.३॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः॥ शुद्धोदक स्नानम् समर्पयामि॥स्नानाङ्ग आचमनीयम् जलं समर्पयामि॥वस्त्रेण प्रमृज्य॥पीठे संस्थाप्य॥

स्थापनम्-

मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्युज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं य्युज्ञꣳ समिमन्दधातु॥

विश्वे देवासऽइह मादयन्तामोꣳम्प्रतिष्ठ॥२.१३॥

वस्त्रम्-

तस्माद्युज्ञात्सर्वहुतऽऋचः८ सामानि जज्ञिरे॥

छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ३१.७ ॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः॥वस्त्रम् समर्पयामि॥वस्त्रान्ते आचमनीयम् समर्पयामि॥

यज्ञोपवीतम्-

तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः ॥

गावो॑ ह जज्ञिरे॒ तस्मा॑त्तस्मा॑ज्जा॒ताऽअ॑जा॒वय॑ः ॥ ३१.८ ॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः॥यज्ञोपवीतम् समर्पयामि॥यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयम् समर्पयामि॥

गन्धम्-

तँय्यज्ञम्बर्हिषि प्रौक्षन्पुरु॑षञ्जातम॑ग्रतः।॥ तेन॑ देवाऽअ॑यजन्त साध्याऽऋष॑यश्च ये ॥३१.९॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः॥विलेपनार्थे चन्दनम् समर्पयामि॥

अक्षताः-

अक्षन्नमी॑मदन्त ह्यव॑ प्रियाऽअ॑धूषत॥

अस्तो॑षत स्वभा॑नवो विप्रा नवि॑ष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी॑॥३.५१॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः॥ अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि॥

तुलसीदलम्-

इदँविष्णुर्वि॑च॑क्रमे त्रेधा नि द॑धे पदम्॥ समू॑ढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॑॥५.१५॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः॥तुलसीदलम् समर्पयामि॥

पुष्पम्-

यत्पुरु॑षँव्यद॑धुः कतिधा व्य॑कल्पयन् ॥

मुखङ्किम॑स्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादा॑ऽउच्येते ॥ ३१.१० ॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः॥पुष्पाणि समर्पयामि॥

सौभाग्यद्रव्याणि-

अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुञ्ज्यायां हेतिम्परिबाधमानः ॥

हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमांᳪ सम्परिपातु विश्वतः ॥ २९.५१ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः॥ सौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि॥

धूपम्-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ॥

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳪ शूद्रोऽअजायत ॥ ३१.११ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः॥ धूपम् आघ्रापयामि॥

दीपम् –

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत ॥

श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ ३१.१२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः॥ दीपम् दर्शयामि॥

नैवेद्यम्-

नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षᳪ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत ॥

पद्भ्यांभूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२॥ऽअकल्पयन् ॥ ३१.१३ ॥

गायत्री मन्त्रेण नैवेद्यं सम्प्रोक्ष्य। धेनूमुद्रया अमृतीकृत्य। ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य। **ॐप्राणाय स्वाहा ॐ अपानाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ उदानाय स्वाहा ॐसमानाय स्वाहा॥** नैवेद्यं निवेदयामि। मध्येपानीयं समर्पयामि।पुनर्नैवेद्यम् - **ॐप्राणाय स्वाहा ॐ अपानाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ उदानाय स्वाहा ॐसमानाय स्वाहा॥** उत्तरापोशनं

समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। मुखप्रक्षालनं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनम् समर्पयामि॥

फलम्-

याः फलिनीर्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः॥ १२.८९ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः ॥ऋतुफलम् समर्पयामि॥।

ताम्बूलं-

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ॥ वसन्तोऽस्यासीदाज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः॥३१.१४॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः॥ मुखशुद्ध्यर्थं ताम्बूलं समर्पयामि॥

दक्षिणा-

यद्दत्तँय्यत्परादानँय्यत्पूर्त्तँय्याश्च दक्क्षिणाः॥ तदग्निर्व्वैश्वकर्म्मणः स्वर्द्देवेषु नो दधत् ॥१८.६४॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः ॥कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे यथाशक्ति दक्षिणां समर्पयामि॥

प्रदक्षिणा-

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ॥

देवा यद्यज्ञन्तन्वाना ऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्॥ ३१.१५॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः॥ प्रदक्षिणां समर्पयामि॥

कर्पूरारार्तिक्यम्-

आ रात्रि पार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः ॥

दिवः सदांᳩसि बृहती वितिष्ठसऽआ त्वेषँवर्त्तते तमः ॥ ३४.३२ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः॥ आरार्तिक्यम् समर्पयामि॥

मन्त्रपुष्पाञ्जलि:-

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ॥

ते ह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः ॥ ३१.१६ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमद्सत्यनारायणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः॥ मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि॥

अर्पणम्- अनेन कृतेन पूजनेन श्रीमद्सत्यनारायणः साङ्गः सपरिवार देवताः प्रीयन्तां न मम॥

(उपरोक्त विधि से पूजन सम्पन्न कर ग्रन्थ पूजन एवं कथावाचक ब्राह्मण पूजन करकें सत्यनारायण कथा का श्रवण करें।)

ग्रन्थपूजनम् - पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती॥ यज्ञँवष्टु धियावसुः॥ २०.८४ ॥ पुस्तकस्थित सरस्वत्यै नमः। सकलोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि॥

ब्राह्मणपूजनम् – ब्रह्म जज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽआवः ॥ स बुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ १३.३ ॥ वेदव्यास स्वरूपिणे ब्राह्मणाय नमः। नमस्करोमि॥

(इत्यादि पूजन पूर्वक एकाग्रचित्त से सत्यनारायण कथा का श्रवण करें।)

॥श्रीसत्यनारायण व्रतकथा॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीपरमात्मने नमः ॥

॥अथ प्रथमोऽध्याय:॥

श्रीव्यास उवाच ।

एकदा नैमिषारण्ये ऋषयः शौनकादयः।पप्रच्छुर्मुनयः सर्वे सूतं पौराणिकं खलु॥१॥

ऋषय ऊचुः ।

व्रतेन तपसा किं वा प्राप्यते वाञ्छितं फलम् । तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः कथयस्व महामुने ॥२॥

सूत उवाच ।

नारदेनैव सम्पृष्टो भगवान कमलापतिः ।सुरर्षये यथैवाह तच्छृणुध्वं समाहिताः ॥३॥एकदा नारदो योगी परानुग्रहकाङ्क्षया ।पर्यटन विविधान् लोकान् मर्त्यलोकमुपागतः ॥४॥ततोदृष्ट्वा जनान्सर्वान् नानाक्लेशसमन्वितान् । नानायोनिसमुत्पन्नान् क्लिश्यमानन् स्वकर्मभिः ॥५॥केनोपायेन चैतेषां दुःखनाशो भवेद् ध्रुवम् ।इति सञ्चिन्त्य मनसा विष्णुलोकं गतस्तदा॥६॥तत्र नारायण देवं शुक्लवर्ण चतुर्भुजम । शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म वनमाला-विभूषितम्॥७॥दृष्ट्वा तं देवदेवेशं स्तोतुं समुपचक्रमे ।

नारद उवाच।

नमो वाङ्गमनसातीतरूपायानन्तशक्तये ।आदिमध्यान्तहीनाय निर्गुणाय गुणात्मने ॥८॥सर्वेषामादिभूताय भक्तानामार्तिनाशिने । श्रुत्वा स्तोत्रं ततो विष्णुर्नारदं प्रत्यभाषत॥९॥

श्रीभगवानुवाच ।

किमर्थमागतोऽसि त्वं किं ते मनसि वर्तते । कथयस्व महाभाग तत्सर्वं कथायामि ते॥१०॥

नारद उवाच ।

मर्त्यलोके जनाः सर्वे नानाक्लेशसमन्विताः। नानायोनिसमुत्पन्नाः पच्यन्ते पापकर्मभिः ॥११॥तत्कथं शमयेन्नाथ लघुपायेन तद्वद । श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं कृपास्ति यदि ते मयि ॥१२॥

श्रीभगवानुवाच ।

साधु पृष्टं त्वया वत्स लोकानुग्रहकाङ्क्षया । यत्कृत्वा मुच्यते मोहत् तच्छृणुष्व वदामि ते॥१३॥व्रतमस्ति महत्पुण्यं स्वर्गे मर्त्ये च दुर्लभम् । तव नेहान्मया वत्स प्रकाशः क्रियतेऽधुना ॥१४॥सत्यनारायणस्यैव व्रतं सम्यग्विधानतः । कृत्वा सद्यः सुखं भुत्त्वा परत्र मोक्षमाप्नुयात् । तच्छ्रुत्वा भगवद्वाकां नारदो मुनिरब्रवीत् ॥ १५॥

नारद उवाच ।

किं फलं कि विधानं च कृतं केनैव तद् व्रतम् । तत्सर्व विस्तराद् ब्रूहि कदा कार्यं व्रतं प्रभो ॥१६॥

श्रीभगवानुवाच

दुःखशोकादिशमनं धनधान्यप्रवर्धनम् ॥१७॥सौभाग्यसन्ततिकरं सर्वत्र विजयप्रदम् । यस्मिन कस्मिन् दिने मर्त्यो भक्तिश्रद्धासमन्वितः ॥१८॥सत्यनारायणं देवं यजेच्चैव निशामुखे । ब्राह्मणैर्बान्धवैश्चैव सहितो धर्मतत्परः ॥१९॥नैवेद्यं भक्तितो दद्यात् सपादं भक्ष्यमुत्तमम् । रम्भाफलं घृतं क्षीरं गोधूमस्य च चूर्णकम् ॥२०॥अभावे शालिचूर्णं वा शर्करा वा गुडस्तथा । सपादं सर्वभक्ष्याणि चैकीकृत्य निवेदयेत् ॥२१ ॥विप्राय दक्षिणां दद्यात् कथां श्रुत्वा जनैः सह । ततश्च बन्धुभिः सार्धं विप्रांश्च प्रतिभोजयेत् ॥२२॥प्रसादं भक्षयेद् भक्त्या नृत्यगीतादिकं चरेत् । ततश्च स्वगृहं गच्छेत् सत्यनारायणं स्मरन् ॥२३॥एवं कृते मनुष्याणां वाञ्छासिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् । विशेषतः कलियुगे लघुपायोऽस्ति भूतले ॥ २४॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायण व्रतकथायां प्रथमोऽध्यायः ॥

॥अथ द्वितीयोऽध्यायः॥

सूत उवाच ।

अथान्यत् संप्रवक्ष्यामि कृतं येन पुरा द्विजाः ।

कश्चित काशीपुरे रम्ये ह्यासीद्विप्रोऽतिनिर्धनः ॥ १॥

क्षुत्तृड्भ्यां व्याकुलोभूत्वा नित्यं बभ्राम भूतले । दुःखितं ब्राह्मणं दृष्ट्वा भगवान ब्राह्मणप्रियः ॥२॥ वृद्धब्राह्मण रूपस्तं पप्रच्छ द्विजमादरात् । किमर्थं भ्रमसे विप्र महीं नित्यं सुदुःखितः ॥३॥ तत्सर्व श्रोतुमिच्छामि कथ्यतां द्वितसत्तम ॥

ब्राह्मण उवाच ।

ब्राह्मणोऽति दरिद्रोऽहं भिक्षार्थं वै भ्रमे महीम् ॥४॥उपायं यदि जानासि कृपया कथय प्रभो ।

वृद्धब्राह्मण उवाच।

सत्यनारायणो विष्णुर्वाञ्छितार्थफलप्रदः ॥५॥तस्य त्वं पूजनं विप्र कुरुष्व व्रतमुत्तमम ।यत्कृत्वा सर्वदुः खेभ्यो मुक्तो भवति मानवः ॥६॥विधानं च व्रतस्यापि विप्रायाभाष्य यत्नतः । सत्यनारायणो वृद्धस्तत्रैवान्तरधीयत ॥७॥तद् व्रतं सङ्करिष्यामि यदुक्तं ब्राह्मणेन वै। इति सञ्चिन्त्य विप्रोऽसौ रात्रौ निद्रा न लब्धवान् ॥८॥ ततः प्रातः समुत्थाय सत्यनारायणव्रतम् । करिष्य इति सङ्कल्प्य भिक्षार्थमगमद्विजः ॥ ९॥ तस्मिन्नेव दिने विप्रः प्रचुरं द्रव्यमाप्तवान् । तेनैव बन्धुभिः सार्धं सत्यस्यव्रतमाचरत् ॥ १०॥सर्वदुःखविनिर्मुक्तः सर्वसम्पत्समन्वितः । बभूव स द्विजश्रेष्ठो व्रतस्यास्य प्रभावतः ॥ ११॥ततः प्रभृति कालं च मासि मासि व्रतं कृतम् । एवं नारायणस्येदं व्रतं कृत्वा द्विजोत्तमः ॥१२॥सर्वपापविनिर्मुक्तो दुर्लभं मोक्षमाप्तवान् । व्रतमस्य यदा विप्र पृथिव्यां सङ्करिष्यति ॥१३॥ तदेव सर्वदुःखं तु मनुजस्य विनश्यति। एवं नारायणेनोक्तं नारदाय महात्मने ॥ १४॥मया तत्कथितं विप्राः किमन्यत् कथयामि वः । **ऋषय ऊचुः** ।

तस्माद विप्राच्छ्रुतं केन पृथिव्यां चरितं मुने । तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः श्रद्धाऽस्माकं प्रजायते ॥१५॥

सूत उवाच ।

शृणुध्वं मुनयः सर्वे व्रतं येन कृतं भुवि । एकदा स द्विजवरो यधाविभव विस्तरैः ॥ १६॥बन्धुभिः स्वजनैः सार्धं व्रतं कर्तुं समुद्यतः ।एतस्मिन्नन्तरे काले काष्ठक्रेता समागमत् ॥ १७॥बहिः काष्ठं

च संस्थाप्य विप्रस्य गृहमाययौ । तृष्णाया पीडितात्मा च दृष्ट्वा विप्रं कृतं व्रतम् ॥ १८ ॥ प्रणिपत्य द्विजं प्राह किमिदं क्रियते त्वया । कृते किं फलमाप्नोति विस्तराद् वद मे प्रभो ॥ १९ ॥

विप्र उवाच ।

सत्यनारायणेस्येदं व्रतं सर्वेप्सितप्रदम् । तस्य प्रसादान्मे सर्वं धनधान्यादिकं महत् ॥ २० ॥
तस्मादेतद् व्रतं ज्ञात्वा काष्ठक्रेताऽतिहर्षितः । पपौ जलं प्रसादं च भुक्त्वा स नगरं ययौ ॥ २१ ॥
सत्यनारायणं देवं मनसा इत्यचिन्तयत् । काष्ठं विक्रयतो ग्रामे प्राप्यते चाद्य यद् धनम् ॥ २२ ॥
तेनैव सत्यदेवस्य करिष्ये व्रतमुत्तमम् । इति सञ्चिन्त्य मनसा काष्ठं धृत्वा तु मस्तके ॥ २३ ॥
जगाम नगरे रम्ये धनिनां यत्र संस्थितिः । तद्दिने काष्ठमूल्यं च द्विगुणं प्राप्तवानसौ ॥ २४ ॥
ततः प्रसन्नहृदयः सुपक्वं कदली फलम् । शर्कराघृतदुग्धं च गोधूमस्य च चूर्णकम् ॥ २५ ॥
कृत्वेकत्र सपादं च गृहीत्वा स्वगृहं ययौ । ततो बन्धून् समाहूय चकार विधिना व्रतम् ॥ २६ ॥
तद् व्रतस्य प्रभावेण धनपुत्रान्वितोऽभवत् । इहलोके सुखं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरं ययौ ॥ २७ ॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायण व्रतकथायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः ।

सूत उवाच ।

पुनरग्रे प्रवक्ष्यामि शृणुध्वं मुनि सत्तमाः ।पुरा चोल्कामुखो नाम नृपश्चासीन्महामतिः ॥१॥ जितेन्द्रियः सत्यवादी ययौ देवालयं प्रति । दिने दिने धनं दत्त्वा द्विजान् सन्तोषयत् सुधीः ॥२॥भार्या तस्य प्रमुग्धा च सरोजवदना सती । भद्रशीलानदी तीरे सत्यस्यव्रतमाचरत् ॥३॥एतस्मिन्नन्तरे तत्र साधुरेकः समागतः । वाणिज्यार्थं बहुधनैरनेकैः परिपूरितः ॥४॥नावं संस्थाप्य तत्तीरे जगाम नृपतिं प्रति । दृष्ट्वा स व्रतिनं भूपं प्रपच्छ विनयान्वितः ॥५॥

साधुरुवाच ।

किमिदं कुरुषे राजन् भक्तियुक्तेन चेतसा । प्रकाशं कुरु तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतम् ॥६॥

राजोवाच ।

पूजनं क्रियते साधो विष्णोरतुलतेजसः । व्रतं च स्वजनैः सार्धं पुत्राद्यावाप्ति काम्यया ॥ ७॥

भूपस्य वचनं श्रुत्वा साधुः प्रोवाच सादरम् । सर्वं कथय में राजन् करिष्येऽहं तवोदितम् ॥ ८॥

ममापि सन्ततिर्नास्ति ह्येतस्माजायते ध्रुवम् । ततो निवृत्त्य वाणिज्यात् सानन्दो गृहमागतः ॥९॥

भार्याय कथितं सर्वं व्रतं सन्तति दायकम् । तदा व्रतं करिष्यामि यदा मे सन्ततिर्भवेत् ॥ १० ॥इति

लीलावतीं प्राह पत्नीं साधुः स सत्तमः । एकस्मिन् दिवसे तस्य भार्या लीलावती सती ॥११॥

भर्तृयुक्तानन्दचित्ताऽभवद् धर्मपरायणा । गर्भिणी साऽभवत् तस्य भार्या सत्यप्रसादतः ॥ १२॥

दशमे मासि वे तस्याः कन्यारत्नमजायत । दिने दिने सा ववृधे शुक्लपक्षे यथा शशी ॥१३॥

नाम्ना कलावती चेति तन्नामकरणं कृतम् ।ततो लीलावती प्राह स्वामिनं मधुरं वचः ॥ १४॥

न करोषि किमर्थं वै पुरा सङ्कल्पितं व्रतम् ।

साधुरुवाच ।विवाह समये त्वस्याः करिष्यामि व्रतं प्रिये ॥१५॥

इति भार्यां समाश्वास्य जगाम नगरं प्रति । ततः कलावती कन्या ववृधे पितृवेश्मनि ॥ १६॥

दृष्ट्वा कन्यां ततः साधुर्नगरे सखिभिः सह । मन्त्रयित्वा द्रुतं दूतं प्रेषयामास धर्मवित् ॥ १७॥

विवाहार्थं च कन्याया वरं श्रेष्ठं विचारय । तेनाज्ञप्तश्च दूतोऽसौ काञ्चनं नगरं ययौ ॥ १८॥

तस्मादेकं वणिक्पुत्रं समादायागतो हि सः । दृष्ट्वा तु सुन्दरं बालं वणिक्पुत्रं गुणान्वितम् ॥१९॥

ज्ञातिभिर्बन्धुभिः सार्ध परितुष्टेन चेतसा । दत्तावान् साधुपुत्राय कन्यां विधिविधानतः ॥ २०॥

ततोऽभाग्यवशात् तेन विस्मृतं व्रतमुत्तमम् ।विवाहसमये तस्यास्तेन रुष्टो भवत् प्रभुः ॥ २१ ॥

ततः कालेन नियतो निजकर्म विशारदः । वाणिज्यार्थं ततः शीघ्रं जामातृ सहितो वणिक् ॥ २२॥

रत्नसारपुरे रम्ये गत्वा सिन्धु समीपतः । वाणिज्यमकरोत् साधुर्जामात्रा श्रीमता सह ॥ २३॥

तौ गतौ नगरे रम्ये चन्द्रकेतनृपस्य च। एतस्मिन्नेव काले तु सत्यनारायणः प्रभुः ॥ २४॥

भ्रष्टप्रतिज्ञमालोक्य शापं तस्मै प्रदत्तवान् । दारुणं कठिनं चास्य महद्दुःखं भविष्यति ॥ २५ ॥

एकस्मिन्दिवसे राज्ञो धनमादाय तस्करः । तत्रैव चागतश्चौरो वणिजौ यत्र संस्थितौ ॥ २६ ॥

तत्पश्चाद् धावकान् दूतान् दृष्ट्वा भीतेन चेतसा । धनं संस्थाप्य तत्रैव स तु शीघ्रमलक्षितः ॥ २७ ॥

ततो दूताः समायाता यत्रास्ते सज्जनो वणोक् । दृष्ट्वा नृपधनं तत्र बद्धाऽऽनीतौ वणिक्सुतौ ॥ २८ ॥

हर्षेण धावमानाश्च प्रोचुर्नृपसमीपतः ।तस्करौ द्वौ समानीतौ विलोक्याज्ञापय प्रभो ॥ २९ ॥

राज्ञाऽऽज्ञप्तास्ततः शीघ्रं दृढं बद्धा तु ता वुभौ। स्थापितौ द्वौ महादुर्गे कारागारेऽविचारतः ॥ ३० ॥

मायया सत्यदेवस्य न श्रुतं कैस्तयोर्वचः । अतस्तयोर्धनं राज्ञा गृहीतं चन्द्रकेतुना ॥ ३१ ॥

तच्छापाच्च तयोर्गेहे भार्या चैवाति दुःखिता । चौरेणापहृतं सर्वं गृहे यच्च स्थितं धनम् ॥ ३२ ॥

आधिव्याधिसमायुक्ता क्षुत्पिपाशाति दुःखिता । अन्नचिन्तापरा भूत्वा बभ्राम च गृहे गृहे । कलावती तु कन्यापि बभ्राम प्रतिवासरम् ॥ ३३ ॥

एकस्मिन् दिवसे याता क्षुधार्ता द्विजमन्दिरम्। गत्वाऽपश्यद् व्रतं तत्र सत्यनारायणस्य च ॥ ३४ ॥

उपविश्य कथां श्रुत्या वरं प्रार्थितवत्यपि । प्रसाद भक्षणं कृत्वा ययौ रात्रौ गृहं प्रति ॥ ३५ ॥

माता कलावतीं कन्यां कथयामास प्रेमतः । पुत्रि रात्रौ स्थिता कुत्र कि ते मनसि वर्तते ॥ ३६ ॥

कन्या कलावती प्राह मातरं प्रति सत्वरम् ।द्विजालये व्रतं मातर्दृष्टं वाञ्छितसिद्धिदम् ॥ २० ॥

तच्छ्रुत्वा कन्यका वाक्यं व्रतं कर्तुं समुद्यता । सा मुदा तु वणिग्भार्या सत्यनारायणस्य च ॥ ३८ ॥

व्रतं चक्रे सेव साध्वी बन्धुभिः स्वजनैः सह । भर्तृजामातरौ क्षिप्रमागच्छेतां स्वमाश्रमम् ॥ ३९ ॥

अपराधं च मे भर्तुर्जामातुः क्षन्तुमर्हसि । व्रतेनानेन तुष्टोऽसौ सत्यनारायणः पुनः ॥ ४० ॥

दर्शयामास स्वप्नं ही चन्द्रकेतुं नृपोत्तमम् । बन्दिनौ मोचय प्रातर्वणिजौ नृपसत्तम ॥ ४१ ॥

देयं धनं च तत्सर्वं गृहीतं यत् त्वयाऽधुना । नो चेत् त्वां नाशयिष्यामि सराज्यधनपुत्रकम् ॥ ४२ ॥

एवमाभाष्य राजानं ध्यानगम्योऽभवत् प्रभुः । ततः प्रभातसमये राजा च स्वजनैः सह ॥ ४३ ॥

उपविश्य सभामध्ये प्राह स्वप्नं जनं प्रति । बद्धौ महाजनी शीघ्रं मोचय द्वौ वणिक्सुतौ ॥ ४४ ॥

इति राज्ञो वचः श्रुत्वा मोचयित्वा महाजनौ। समानीय नृपस्याग्रे प्राहुस्ते विनयान्विताः ॥ ४५ ॥

आनीतौ द्वौ वणिक्पुत्रौ मुक्तौ निगडबन्धनात् । ततो महाजनौ नत्वा चन्द्रकेतुं नृपोत्तमम् ॥ ४६ ॥

स्मरन्तौ पूर्व वृत्तान्तं नोचतुर्भयविह्वलौ । राजा वणिक्सुतौ वीक्ष्य वचः प्रोवाच सादरम् ॥ २४७ ॥

देवात् प्राप्तं महदुःखमिदानीं नास्ति वै भयम् । तदा निगडसन्त्यागं क्षीरकर्मायकारयत् ॥ ४८ ॥

वस्त्रालङ्कारकं दत्त्वा परितोष्य नृपश्च तौ । पुरस्कृत्य वणिक्पुत्रौ वचसाऽतोषयद् भृशम् ॥ ४९ ॥

पुरानीतं तु यद् द्रव्यं द्विगुणीकृत्य दत्तवान् । प्रोवाच च ततो राजा गच्छ साधो निजाश्रमम्॥ ५० ॥

राजानं प्रणिपत्याह गन्तव्यं त्वत्प्रसादतः । इत्युक्त्वा तौ महावैश्यौ जग्मतुः स्वगृहं प्रति ॥ ५१ ॥

॥ इति श्रीस्कन्द पुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायण व्रतकथायां तृतीयोऽध्यायः ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः ।

सूत उवाच ।

यात्रां तु कृतवान् साधुर्मङ्गलायनपूर्विकाम् ।ब्राह्मणेभ्यो धनं दत्त्वा तदा तु नगरं ययौ ॥ १ ॥

कियद् दूरे गते साधो सत्यनारायणः प्रभुः। जिज्ञासां कृतवान् साधो किमस्ति तव नौस्थितम्॥ २ ॥

ततो महाजनौ मत्तौ हेलया च प्रहस्य वै। कथं पृच्छसि भो दण्डिन् मुद्रां नेतुं किमिच्छसि ॥ ३ ॥

लतापत्रादिकं चैव वर्तते तरणौ मम । निष्ठुरं च वचः श्रुत्वा सत्यं भवतु ते वचः ॥ ४ ॥

एवमुक्त्वा गतः शीघ्रं दण्डी तस्य समीपतः । कियद् दूरे ततो गत्वा स्थितः सिन्धु समीपतः ॥ ५ ॥

गते दण्डिनि साधुश्च कृतनित्यक्रियस्तदा । उत्थितां तरणीं दृष्ट्वा विस्मयं परमं ययौ ॥ ६ ॥

दृष्ट्वा लतादिकं चैव मूर्च्छितो न्यपतद् भुवि । लब्धसंज्ञो वणिक्पुत्रस्ततश्चिन्तान्वितोऽभवत् ॥ ७ ॥

तदा तु दुहितुः कान्तो वचनं चेदमब्रवीत् । किमर्थं क्रियते शोकः शापो दत्तश्च दण्डिना ॥ ८॥

शक्यते तेन सर्वं हि कर्तुं चात्र न संशयः। अतस्तच्छरणं यामो वाञ्छतार्थो भविष्यति ॥ ९॥

जामातुर्वचनं श्रुत्वा तत्सकाशं गतस्तदा । दृष्ट्वा च दण्डिनं भक्त्या नत्वा प्रोवाच सादरम् ॥ १०॥

क्षमस्व चापराधं मे यदुक्तं तव सन्निधौ । एवं पुनः पुनर्नत्वा महाशोकाकुलोऽभवत् ॥ ११॥

प्रोवाच वचनं दण्डी विलपन्तं विलोक्य च । मा रोदीः शृणुमद्वाक्यं मम पूजाबहिर्मुखः ॥ १२॥

ममाज्ञया च दुर्बुद्धे लब्धं दुःखं मुहुर्मुहुः । तच्छ्रुत्वा भगवद्वाक्यं स्तुति कर्तुं समुद्यतः ॥ १३॥

साधुरुवाच ।

त्वन्मायामोहिताः सर्वे ब्रह्माद्यास्त्रिदिवौकसः । न जानन्ति गुणान् रूपं तवाश्चर्यमिदं प्रभो ॥१४॥

मूढोऽहं त्वां कथं जाने मोहितस्तवमायया । प्रसीद पूजयिष्यामि यथाविभवविस्तरैः ॥ १५॥

पुरा वित्तं च तत् सर्वं त्राहि मां शरणागतम् । श्रुत्वा भक्तियुतं वाक्यं परितुष्टो जनार्दनः ॥ १६॥

वरं च वाञ्छितं दत्त्वा तत्रैवान्तर्दधे हरिः । ततो नावं समारुह्य दृष्ट्वा वित्तप्रपूरिताम् ॥ १७॥

कृपया सत्यदेवस्य सफलं वाञ्छितं मम । इत्युक्त्वा स्वजनैः सार्धं पूजां कृत्वा यथाविधि ॥ १८॥

हर्षेण चाभवत् पूर्णः सत्यदेवप्रसादतः । नावं संयोज्य यत्नेन स्वदेशगमनं कृतम् ॥ १९॥

साधुर्जामातरं प्राह पश्य रत्नपुरी मम । दूतं च प्रेषयामास निजवित्तस्य रक्षकम् ॥ २०॥

ततोऽसौ नगरं गत्वा साधुभार्या विलोक्य च। प्रोवाच वाञ्छितं वाक्यं नत्वा बद्धाञ्जलिस्तदा ॥२१॥

निकटे नगरस्यैव जामात्रा सहितो वणिक् । आगतो बन्धुवर्गैश्च वित्तैश्च बहुभिर्युतः ॥ २२॥

श्रुत्वा दूतमुखाद्वाक्यं महाहर्षवती सती । सत्यपूजां ततः कृत्वा प्रोवाच तनुजां प्रति ॥ २३॥

व्रजामि शीघ्रमागच्छ साधुसन्दर्शनाय च । इति मातृवचः श्रुत्वा व्रतं कृत्वा समाप्य च ॥ २४॥

प्रसादं च परित्यज्य गता साऽपि पतिं प्रति। तेन रुष्टाः सत्यदेवो भर्तारं तरणिं तथा ॥ २५॥

संहृत्य च धनैः सार्धं जले तस्यावमज्जयत् ।ततः कलावती कन्या न विलोक्य निजं पतिम् ॥ २६॥

शोकेन महता तत्र रुदन्ती चापतद् भुवि । दृष्ट्वा तथाविधां नावं कन्यां च बहुदुःखिताम् ॥ २० ॥

भीतेन मनसा साधुः किमाश्चर्यमिदं भवेत् ।चिन्त्यमानाश्च ते सर्वे बभूवुस्तरिवाहकाः ॥ २८ ॥

ततो लीलावती कन्यां दृष्ट्वा सा विह्वलाऽभवत् । विललापातिदुःखेन भर्तारं चेदमब्रवीत् ॥ २९ ॥

इदानीं नौकया सार्धं कथं सोऽभूदलक्षितः । न जाने कस्य देवस्य हेलया चैव सा हुता ॥ ३० ॥

सत्यदेवस्य माहात्म्यं ज्ञातुं वा केन शक्यते । इत्युक्त्वा विललापैव ततश्च स्वजनैः सह ॥ ३१ ॥

ततो लीलावती कन्यां क्रोडे कृत्वा रुरोद ह ।ततःकलावती कन्या नष्टे स्वामिनि दुःखिता ॥ ३२ ॥

गृहीत्वा पादुके तस्यानुगतुं च मनोदधे ।कन्यायाश्चरितं दृष्ट्वा सभार्यः सज्जनो वणिक् ॥ ३३ ॥

अतिशोकेन सन्तप्तश्चिन्तयामास धर्मवित् । हृतं वा सत्यदेवेन भ्रान्तोऽहं सत्यमायया ॥ ३४ ॥

सत्यपूजां करिष्यामि यथाविभवविस्तरैः । इति सर्वान् समाहूय कथयित्वा मनोरथम् ॥ ३५ ॥

नत्वा च दण्डवद् भूमौ सत्यदेवं पुनः पुनः । ततस्तुष्टः सत्यदेवो दीनानां परिपालकः ॥ ३६ ॥

जगाद वचनं चैनं कृपया भक्तवत्सलः । त्यक्त्वा प्रसादं ते कन्या पतिं द्रष्टुं समागता ॥ ३७ ॥

अतोऽदृष्टोऽभवत्तस्याः कन्यकायाः पतिध्रुवम्। गृहं गत्वा प्रसादं च भुक्त्वात्वा साऽऽयाति चेत्पुनः ॥ ३८ ॥

लब्धभर्त्री सुता साधो भविष्यति न संशयः। कन्यका तादृशं वाक्यं श्रुत्वा गगनमण्डलात् ॥ ३९ ॥

क्षिप्रं तदा गृहं गत्वा प्रसादं च बुभोजसा । पश्चात् सा पुनरागत्य ददर्श स्वजनं पतिम् ॥ ४० ॥

ततः कलावती कन्या जगाद पितरं प्रति । इदानीं च गृह याहि विलम्बं कुरुषे कथम् ॥ ४१ ॥

तच्छ्रुत्वा कन्यकावाक्यं सन्तुष्टोऽभूद्वणिक्सुतः । पूजनं सत्यदेवस्य कृत्वा विधिविधानतः ४२ ॥

धनैर्बन्धुगणैः सार्धं जगाम निजमन्दिरम्। पौर्णमास्यां च सङ्क्रान्तौ कृतवान् सत्यस्य पूजनम्॥ ४३ ॥

इहलोके सुखं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरं ययौ ॥ ४४ ॥

॥ इति श्रीस्कन्द पुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायण व्रतकथायां चतुर्थोऽध्यायः ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः ।

सूत उवाच ।

अथान्यच्च प्रवक्ष्यामि श्रुणुध्वं मुनिसत्तमाः । आसीत् तुङ्गध्वजो राजा प्रजापालनतत्परः ॥ १ ॥

प्रसादं सत्यदेवस्य त्यत्त्वा दुःखमवाप सः । एकदा स वनं गत्वा हत्वा बहुविधान् पशून् ॥ २ ॥

आगत्य वटमूलं च दृष्ट्वा सत्यस्य पूजनम् । गोपाः कुर्वन्ति सन्तुष्टा भक्तियुक्ताः स बान्धवाः ॥३ ॥

राजा दृष्ट्वा तु दर्पेण न गतो न ननाम सः । ततो गोपगणाः सर्वे प्रसादं नृपसन्निधौ ॥ ४ ॥

संस्थाप्य पुनरागत्य भुक्त्वा सर्वे यथेप्सितम् । ततः प्रसादं सन्त्यज्य राजा दुःखमवाप सः ॥ ५ ॥

तस्य पुत्रशतं नष्टं धनधान्यादिकं च यत् । सत्यदेवेन तत्सर्वं नाशितं मम निश्चितम् ॥ ६ ॥

अतस्तत्रैव गच्छामि यत्र देवस्य पूजनम् । मनसा तु विनिश्चित्य ययौ गोपालसन्निधौ ॥ ७ ॥

ततोऽसौ सत्यदेवस्य पूजां गोपगणैः सह । भक्तिश्रद्धान्वितो भूत्वा चकार विधिना नृपः ॥ ८ ॥

सत्यदेवप्रसादेन धनपुत्रान्वितोऽभवत् । इहलोके सुखं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरं ययौ ॥ ९ ॥

य इदं कुरुते सत्यव्रतं परमदुर्लभम् । शृणोति च कथां पुण्यां भक्तियुक्तः फलप्रदाम् ॥ १० ॥

धनधान्यादिकं तस्य भवेत् सत्यप्रसादतः । दरिद्रो लभते वित्तं बद्धो मुच्येत बन्धनात् ॥ ११ ॥

भीतो भयात् प्रमुच्येत सत्यमेव न संशयः । ईप्सितं च फलं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरंव्रजेत् ॥ १२ ॥

इति वः कथितं विप्राः सत्यनारायणव्रतम् । यत् कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः ॥ १३ ॥

विशेषतः कलियुगे सत्यपूजा फलप्रदा । केचित् कालं वदिष्यन्ति सत्यमीशं तमेव च ॥ १४ ॥

सत्यनारायणं केचित् सत्यदेवं तथापरे । नानारूपधरो भूत्वा सर्वेषामीप्सितप्रदम् ॥ १५ ॥

भविष्यति कलौ सत्यव्रतरूपी सनातनः । श्रीविष्णुना धृतं रूपं सर्वेषामीप्सितप्रदम् ॥ १६ ॥

य इदं पठते नित्यं शृणोति मुनिसत्तमाः तस्य नश्यन्ति पापानि सत्यदेवप्रसादतः ॥ १७ ॥

व्रतं यैस्तु कृतं पूर्वं सत्यनारायणस्य च । तेषां त्वपरजन्मानि कथयामि मुनीश्वराः ॥ १८ ॥

शतानन्दोमहाप्राज्ञः सुदामाब्राह्मणो ह्यभूत । तस्मिन्जन्मनि श्रीकृष्णं ध्यात्वा मोक्षमवाप ह ॥१९ ॥

काष्ठभारवहो भिल्लो गुहराजो बभूव ह। तस्मिञ्जन्मनि श्रीरामं सेव्य मोक्ष जगाम वै ॥ २०॥

उल्कामुखो महाराजो नृपो दशरथोऽभवत् । श्रीरङ्गनाथं सम्पूज्य श्रीवैकुण्ठं तदागमत् ॥ २१ ॥

धार्मिकः सत्यसन्धश्च साधुर्मोरध्वजोऽभवत् ।देहार्थं क्रकचैश्छित्त्वा दत्वा मोक्षमवाप ह ॥ २२॥

तुङ्गध्वजो महाराजः स्वायम्भुवोऽभवत् किल । सर्वान् भागवतान् कृत्वा श्रीवैकुण्ठे तदाऽगमत् ॥ २३॥

भूत्वा गोपाश्च ते सर्वे व्रजमण्डलवासिनः । निहत्य राक्षसान् सर्वान् गोलोकं तु तदा ययुः ॥ २४॥

॥इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायण व्रतकथायां पञ्चमोऽध्यायः॥

ईकाई - 7

पारायणविधि

7.1. सप्तशतीपारायणविधि

या श्री: स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मी: पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुध्दि:।

श्रध्दा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जां तां त्वां नता: स्म परिपालय देवि विश्वम्॥

जगज्जननी भगवती जगदम्बा की अनुकम्पा से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का संचालन होता हैं।सत्य,त्रेता द्वापर तथा कलियुग में कामनानुसार धर्मार्थकाममोक्षादि पुरुषार्थ चतुष्टय को प्रदान करने वाली भगवती ही हैं। प्रत्येक युग में आसुरि शक्तियों का विनाश कर सम्पूर्ण विश्व का पालन भगवती करती है। वह एक ही परमेश्वरीशक्ती कार्यानुरूप अनेक प्रकार के स्वरूपों को धारण कर विश्वकल्याण करती है।

एकैव शक्ति:परमेश्वरस्य भिन्नाश्चतुर्धा व्यवहारकाले।

पुरुषेषु विष्णुर्भोगे भवानी समरे च दुर्गा प्रलये च काली॥

यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् । श्रद्धावान् मनुष्य भगवती की आराधना द्वारा जिस कामना से अपने अभीष्ट वस्तु की इच्छा करता है वह भगवती की कृपा से अत्यल्प प्रयास से उसे निश्चित ही प्राप्त होती है।

श्री जगदम्बा का माहात्म्य मार्कण्डेय पुराण के सावर्णिक मन्वन्तर के अन्तर्गत देवी माहात्म्य में प्राप्त होता हैं। ७०० श्लोकों में होने के कारण इसे श्रीदुर्गा सप्तशती कहा जाता हैं।भगवती की आराधना प्रत्येक दिन कर सकते हैं। अनेक साधक प्रतिदिन सप्तशती का पाठ करते हैं।नवरात्र काल भगवती की आराधना में मुख्य माना जाता हैं। जिसमें नवचण्डी, शतचण्डी, सहस्रचण्डी, अयुतचण्डी आदि अनेक अनुष्ठानों का आचरण आस्तिकजन करते

हैं।अनुष्ठान के अन्तर्गत सप्तशती पाठ/होम आदि कर्म किये जाते हैं।कामनानुसार सप्तशती के विशेष प्रयोग भी किये जाते हैं जिनमें सप्तशती के विशिष्ट मन्त्रों द्वारा संपुटित पाठ किया जाता हैं । उनमें रोगोपशमन् , शत्रुपराजय, शीघ्रविवाह, धनधान्यादिप्राप्ति, कार्यसिद्धी, विश्वकल्याण, पापनाशन, दारिद्र्यनिवारण आदि समस्त कामनाओं के लिए सप्तशती के प्रयोग किये जाते हैं।इसी प्रकार वैदिक मन्त्रों का भी सम्पूट लगाकर प्रयोग होते हैं।तंत्रोक्त विधान से अनेक प्रकार के सप्तशती प्रयोग करने का विधान ग्रन्थों में प्राप्त होता हैं॥

पारायण विधि: –

आचमनम् – ॐ ऐं आत्मतत्वं शोधयामि नमः। ॐ ह्रीं विद्यातत्वं शोधयामि नमः। ॐ क्लीं शिवतत्वं शोधयामि नमः।ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्वं शोधयामि नमः॥

प्राणायाम् – नवार्ण मन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः।गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांसि।श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः।प्राणायामे विनियोगः॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ इस मूल मन्त्र से प्राणायाम करें।

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः.......॥ सुमुखश्चैक दन्तश्च.....॥ इत्यादि पठन पूर्वक संकल्प करें॥

संकल्पः – ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः।श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य.....। शुभपुण्यतिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक शर्मा अहम् । ममात्मनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं श्री महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती त्रिगुणात्मिका राजराजेश्वरी श्री जगदम्बा प्रसादेन मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक पापानां निरासार्थं।आधिदैविक आधिभौतिक आध्यत्मिक त्रिविध तापोपशमनार्थं।मम ग्रहकृत राजकृत सर्वविधपीडा निवृत्ति पूर्वक नैरुज्यदीर्घायु:पुष्टिधनधान्यादि समृध्यर्थं। धर्मार्थकाममोक्ष चतुर्विध फल पुरुषार्थ सिद्धिद्वारा श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी

जगदम्बा प्रीत्यर्थं शापोद्धार पुरस्सरं कवचार्गलाकीलकपाठ वेदोक्त/तंत्रोक्त रात्रिसूक्तपाठ देव्यथर्वशीर्षपाठ न्यासविधिसहित नवार्णमन्त्रजप सप्तशतीन्यासध्यानसहित चरित्रसम्बन्धिविनियोग न्यासध्यानपूर्वकं – "मार्कण्डेय उवाच। सावर्णि:सूर्यतनयो:"..। इत्यारभ्य "सावर्णिर्भविता मनु:"। इत्यन्तं दुर्गासप्तशतीपाठं तदन्ते न्यासविधिसहितं नवार्णमन्त्रजपं वेदोक्त/तन्त्रोक्त देवीसूक्तपाठं रहस्यत्रयपठनं शापोद्धारादिकं च करिष्ये॥

इत्यादि संकल्प पूर्वक **शापोद्धार , कवचार्गलाकीलक, रात्रिसूक्तपाठ, देव्यथर्वशीर्ष पठन पूर्वक न्यासविधि सहित नवार्णमन्त्रजप, सप्तशतीन्यासध्यान आदि क्रम से सप्तशती के तीनों चरित्रों का पाठ करें।**

पाठ के पश्चात् न्यासविधि सहित नवार्णमन्त्रजप पूर्वक देवीसूक्तपाठ तथा सप्तशती के तीनों रहस्यों का पाठ कर अन्त में क्षमाप्रार्थना एवं शापोद्धारादिक कर आरती , मन्त्रपुष्पांजली समर्पण कर सप्तशतीपाठ समाप्ती करें॥

उपरोक्त पाठविधि में संक्षिप्त रूप में श्रीदुर्गा सप्तशती के पारायण विधि को बताया गया हैं। जिसका विस्तृत विधान योग्य गुरु के सान्निध्य में योग्य ग्रन्थ से प्राप्त करना चाहिये। भगवती की आराधना कर के हम अपने अभीष्ट फल को प्राप्त कर सकते हैं। तथा सम्पूर्ण विश्व के कल्याण की कामना मां जगदम्बा से करते हैं॥

इकाई:8

वैदिक सूक्तम्

8.1. प्रात:सूक्तम्-

(ऋग्वेदीय)

ॐ प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।

प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम ॥१॥

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।

आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥२॥

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।

भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥३॥

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम् ।

उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥४॥

भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम ।

तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुरएता भवेह ॥५॥

समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय ।

अर्वाचीनं वसुविदं भगं नो रथमिवाश्वा वाजिन आ वहन्तु ॥६॥

अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।

घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥

॥इति प्रात:सूक्तम्॥

8.2.त्रिसुपर्ण सूक्तम्-

ॐ स॒ह नाव॑वतु । स॒ह नौ॑ भुनक्तु । स॒ह वी॒र्यं॑ करवावहै ।

ते॒ज॒स्वि ना॒वधी॑तमस्तु । मा वि॑द्विषा॒वहै ।

ॐ शान्ति॒: शान्ति॒: शान्ति॑: ॥

ॐ ब्रह्म॑मेतु॒ माम् । मधु॑मेतु॒ माम् । ब्रह्म॑मे॒व मधु॑मेतु॒ माम् ।

यास्ते॑ सोम प्र॒जा व॒त्सोऽभि॒ सो अ॒हम् । दु:ष्व॒प्न॒हन्दु॑रुष्षह ।

यास्ते॑ सोम प्रा॒णाꣳस्ताञ्जु॑होमि ॥ १ ॥

त्रिसु॑पर्ण॒मया॑चितं ब्राह्म॒णाय॑ दद्यात् । ब्र॒ह्म॒ह॒त्यां वा ए॒ते घ्नं॑न्ति ।

ये ब्राह्म॒णास्त्रिसु॑पर्ण॒ं पठ॑न्ति । ते सोम॒ं प्राप्नु॑वन्ति ।

आ॒स॒ह॒स्रात् प॒ङ्क्तिं पुन॑न्ति । ॐ ॥ २ ॥

ब्रह्म॑ मे॒धया । मधु॑ मे॒धया । ब्रह्म॑मे॒व मधु॑ मे॒धया ॥ १ ॥

अ॒द्यानो॑ देव सवित: प्र॒जाव॑त्सावी॒: सौभ॑गम् ।

परा दु॒ष्वप्नि॑यꣳ सुव ॥ २ ॥

विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒ता॒नि॒ परा॑सुव । यद्भ॒द्रं तन्म॒ आसु॑व ॥ ३ ॥

मधु॒वाता॑ ऋताय॒ते मधु॒क्षरन्ति सिन्ध॑व: । माध्वी॑र्न: स॒न्त्वोष॑धी: ॥ ४ ॥

मधु॒ नक्त॑मु॒तोषसि॒ मधु॑म॒त्पार्थि॑व॒ꣳ॒ रज॑: । मधु॒द्यौर॑स्तु न: पि॒ता ॥ ५ ॥

मधु॑मान्नो॒ व॒नस्पति॒र्मधु॑माꣳ अस्तु॒ सूर्य॑: । माध्वी॒र्गावो॑ भवन्तु न: ॥ ६ ॥

य इ॒मं त्रिसु॑पर्ण॒मया॑चितं ब्राह्म॒णाय॑ दद्यात् ।

भ्रू॒ण॒ह॒त्यां वा ए॒ते घ्नं॑न्ति ।

ये ब्राह्म॒णास्त्रिसु॑पर्ण॒ं पठ॑न्ति । ते सोम॒ं प्राप्नु॑वन्ति ।

आसहस्रात्पङ्क्तिं पुनन्ति । ॐ ॥ ७ ॥

ब्रह्म मेधवा । मधु मेधवा । ब्रह्ममेव मधु मेधवा ॥ १ ॥

ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम् ।

श्येनो गृध्राणाꣳ स्वधितिर्वनानाꣳ सोमः पवित्रमत्येति रेभन् ॥ २ ॥

हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ।

नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥ ३ ॥

ऋचे त्वा रुचे त्वा समित्स्रवन्ति सरितो न धेनाः ।

अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः । घृतस्य धारा अभिचाकशीमि ॥ ४ ॥

हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम् । तस्मिन्त्सुपर्णो मधुकृत्कुलायी भजन्नास्ते

मधु देवताभ्यः । तस्यासते हरयः सप्त तीरे स्वधां

दुहाना अमृतस्य धाराम् ॥ ५ ॥

य इदं त्रिसुपर्णमयाचितं ब्राह्मणाय दद्यात् ।

वीरहत्यां वा एते घ्नन्ति ।

ये ब्राह्मणास्त्रिसुपर्णं पठन्ति । ते सोमं प्राप्नुवन्ति ।

आसहस्रात् पङ्क्तिं पुनन्ति । ॐ ॥ ६ ॥

ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै ।

तेजस्वि नावधीतमस्तु । मा विद्विषावहै ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

8.3. स्वस्तिवाचन सूक्तम्॥

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।

देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो नि वर्तताम् ।

देवानां सख्यमुप सेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥

तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम् ।

अर्यमणं वरुणं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ।

तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम् ॥

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् ।

पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।

स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः ।

अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह ॥

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।

स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ।

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः ।

विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

8.4. श्रीसूक्तम्-

ॐ ॥ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १ ॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।

यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् । श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवीर्जुषताम् ॥ ३ ॥

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।

पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।

तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ ५ ॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।

तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६ ॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।

प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ ७ ॥

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।

अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥ ८ ॥

गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९ ॥

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ १० ॥

कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ ११ ॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ १२ ॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १३ ॥

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १४ ॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम् ।
श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ १६ ॥

फलश्रुतिः

पद्मानने पद्म ऊरू पद्माक्षी पद्मसम्भवे ।
त्वं मां भजस्व पद्माक्षी येन सौख्यं लभाम्यहम्॥

अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने । धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥

पुत्रपौत्र धनं धान्यं हस्त्यश्वादिगवे रथम् ।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु माम्॥
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमश्नु ते ॥
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत्सदा ॥
वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः । रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्म द्विषो जहि ॥
पद्मप्रिये पद्मिनि पद्महस्ते पद्मालये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विष्णु मनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ॥
या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी ।
गम्भीरा वर्तनाभिः स्तनभर नमिता शुभ्र वस्त्रोत्तरीया ।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगण खचितैस्स्नापिता हेमकुम्भैः ।
नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥
लक्ष्मीं क्षीरसमुद्र राजतनयां श्रीरंगधामेश्वरीम् ।
दासीभूतसमस्त देव वनितां लोकैक दीपांकुराम् ।
श्रीमन्मन्दकटाक्षलब्ध विभव ब्रह्मेन्द्रगङ्गाधराम् ।
त्वां त्रैलोक्य कुटुम्बिनीं सरसिजां वन्दे मुकुन्दप्रियाम् ॥
सिद्धलक्ष्मीर्मोक्षलक्ष्मीर्जयलक्ष्मीस्सरस्वती ।
श्रीलक्ष्मीर्वरलक्ष्मीश्च प्रसन्ना मम सर्वदा॥

वरांकुशौ पाशमभीतिमुद्रां करैर्वहन्तीं कमलासनस्थाम् ।

बालार्क कोटि प्रतिभां त्रिणेत्रां भजेहमाद्यां जगदीश्वरीं ताम् ॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।

शरण्ये त्र्यम्बके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक गन्धमाल्यशोभे ।

भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरिप्रसीद मह्यम् ॥

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।

विष्णोः प्रियसखींम् देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥

महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमही । तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥

आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः ।

ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः

श्रीवर्चस्यमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते ।

धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥

ऋणरोगादिदारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यव: । भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥

ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि । तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

इकाई: 9

स्तोत्रम्

9.1. नवग्रहस्तोत्र

व्यास उवाच।

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महद्युतिम् । तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥ १ ॥

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् । नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥ २ ॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् । कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥ ३ ॥

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् । सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम् । बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥ ५ ॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् । सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥ ६ ॥

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् । छायामार्ताण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥ ७ ॥

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् । सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥ ८ ॥

पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम् । रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥ ९ ॥

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः । दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति॥ १० ॥

नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशनम् । ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ॥ ११ ॥

ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः । ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ॥१२॥

॥इति श्री महर्षि वेदव्यास कृत नवग्रह स्तोत्रम्॥

9.2. अन्नपूर्णा स्तोत्रम्-

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी निर्धूताखिलदोषपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ १ ॥

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी मुक्ताहारविडम्बमानविलसद्वक्षोजकुम्भान्तरी ।

काश्मीरागरुवासिताङ्गरुचिरा काशीपुराधीश्वरीभिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥२॥

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मैकनिष्ठाकरी चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।

सर्वैश्वर्यकरी तपः फलकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥३॥

कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी ह्युमाशाङ्करी कौमारी निगमार्थगोचरकरी ह्योङ्कारबीजाक्षरी ।

मोक्षद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ ४ ॥

दृश्यादृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी लीलानाटकसूत्रखेलनकरी विज्ञानदीपाङ्करी ।

श्रीविश्वेशमनः प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ ५॥

आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भुप्रिया शाङ्करी काश्मीरत्रिपुरेश्वरी त्रिनयनी विश्वेश्वरी शर्वरी ।

स्वर्गद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ ६ ॥

उर्वीसर्वजनेश्वरी जयकरी माता कृपासागरी नारीनीलसमानकुन्तलधरी नित्यान्नदानेश्वरी ।

साक्षान्मोक्षकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥७॥

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी वामा स्वादुपयोधरा प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।

भक्ताभीष्टकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥८॥

चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशी चन्द्रांशुबिम्बाधरी चन्द्रार्काग्निसमानकुण्डलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी।

मालापुस्तकपाशसाङ्कशधरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥९॥

क्षत्रत्राणकरी महाभयहरी माता कृपासागरी सर्वानन्दकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी।

दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥१०॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे । ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥ ११ ॥

माता च पार्वती देवी पिता दैवो महेश्वरः । बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥ १२ ॥

॥ इति श्रीमच्छङ्करभगवत् कृतम् अन्नपूर्णा स्तोत्रम् ॥

9.3. श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्-

ॐ श्रीपरमात्मने नमः ।

ॐ शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ १ ॥

यस्य द्विरदवक्त्राद्याः पारिषद्याः परः शतम् ।विघ्नं निघ्नन्ति सततं विष्वक्सेनं तमाश्रये ॥ २ ॥

व्यासं वसिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम् ।पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम् ॥ ३ ॥

व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे ।नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः ॥ ४ ॥

अविकाराय शुद्धाय नित्याय परमात्मने ।सदैकरूपरूपाय विष्णवे सर्वजिष्णवे ॥ ५ ॥

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात् ।विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ॥ ६ ॥

नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते ।अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ॥

ॐ नमो विष्णवे प्रभविष्णवे ॥

श्रीवैशम्पायन उवाच

श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः । युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥ ७ ॥

युधिष्ठिर उवाच

किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम् । स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ॥ ८ ॥

को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः । किं जपन्मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात् ॥ ९ ॥

भीष्म उवाच

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम् । स्तुवन् नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ॥ १० ॥

तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम् । ध्यायन् स्तुवन् नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ॥ ११ ॥

अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम् । लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत् ॥ १२ ॥

ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम् । लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ॥ १३ ॥

एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः । यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा ॥ १४ ॥

परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः । परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम् ॥ १५ ॥

पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम् । दैवतं दैवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता ॥ १६ ॥

यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे । यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥ १७ ॥

तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते । विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयापहम् ॥ १८ ॥

यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः । ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥१९ ॥

ऋषिर्नाम्नां सहस्रस्य वेदव्यासो महामुनिः । छन्दोऽनुष्टुप् तथा देवो भगवान् देवकीसुतः ॥ २० ॥

अमृतांशूद्भवो बीजं शक्तिर्देवकीनन्दनः । त्रिसामा हृदयं तस्य शान्त्यर्थे विनियुज्यते ॥ २१ ॥

विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम् । अनेकरूपदैत्यान्तं नमामि पुरुषोत्तमम् ॥ २२ ॥

पूर्वन्यासः

ॐ अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य । श्रीवेदव्यासो भगवान् ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः ।

श्रीमहाविष्णुः परमात्मा श्रीमन्नारायणो देवता । अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजम् ।देवकीनन्दनः स्रष्टेति शक्तिः । उद्भवः क्षोभणो देव इति परमो मन्त्रः । शङ्खभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकम् । शार्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम् । रथाङ्गपाणिरक्षोभ्य इति नेत्रम् । त्रिसामा सामगः सामेति कवचम्। आनन्दं परब्रह्मेति योनिः ।

ऋतुः सुदर्शनः काल इति दिग्बन्धः । श्रीविश्वरूप इति ध्यानम् । श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थे सहस्रनामस्तोत्रपाठे विनियोगः ॥

अथ ध्यानम् ।

क्षीरोदन्वत्प्रदेशे शुचिमणिविलसत्सैकते मौक्तिकानां मालाक्लृप्तासनस्थः स्फटिकमणिनिभैर्मौक्तिकैर्मण्डिताङ्गः । शुभ्रैरभ्रैरदभ्रैरुपरिविरचितैर्मुक्तपीयूषवर्षैरानन्दी नः पुनीयादरिनलिनगदाशङ्खपाणिर्मुकुन्दः ॥ १ ॥

भूः पादौ यस्य नाभिर्वियदसुरनिलश्चन्द्रसूर्यौ च नेत्रे कर्णावाशाः शिरो द्यौर्मुखमपि दहनो यस्य वास्तेयमब्धिः । अन्तःस्थं यस्य विश्वं सुरनरखगगोभोगिगन्धर्वदैत्यैः चित्रं रंरम्यते तं त्रिभुवनवपुषं विष्णुमीशं नमामि ॥ २ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥ ३ ॥

मेघश्यामं पीतकौशेयवासं श्रीवत्साङ्कं कौस्तुभोद्भासिताङ्गम् ।

पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षं विष्णुं वन्दे सर्वलोकैकनाथम् ॥ ४ ॥

नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते ।अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ॥ ५ ॥

सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् ।

सहारवक्षःस्थलकौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ॥ ६ ॥

छायायां पारिजातस्य हेमसिंहासनोपरि आसीनमम्बुदश्याममायताक्षमलंकृतम् ।

चन्द्राननं चतुर्बाहुं श्रीवत्साङ्कितवक्षसं रुक्मिणीसत्यभामाभ्यां सहितं कृष्णमाश्रये ॥ ७ ॥

स्तोत्रम्-

हरिः ॐ ।

ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः । भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥ १ ॥

पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः । अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥ २ ॥

योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः । नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ॥ ३ ॥

सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः । सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥ ४ ॥

स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः । अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥ ५ ॥

अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः । विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥ ६ ॥

अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः । प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलं परम् ॥ ७ ॥

ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः । हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ॥ ८ ॥

ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः । अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥ ९ ॥

सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः । अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥ १० ॥

अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः । वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः ॥ ११ ॥

वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्माऽसम्मितः समः । अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥ १२ ॥

रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः । अमृतः शाश्वतस्थाणुर्वरारोहो महातपाः ॥ १३ ॥

सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः । वेदो वेदविदव्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित् कविः ॥ १४ ॥

लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः । चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥ १५ ॥

भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः । अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥ १६ ॥

उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः । अतीन्द्रः सङ्ग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः ॥ १७ ॥

वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः । अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥ १८ ॥

महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः । अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥ १९ ॥

महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः । अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः ॥ २० ॥

मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः । हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः ॥ २१ ॥

अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान् स्थिरः ।अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥ २२ ॥

गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः ।निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥ २३ ॥

अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान् न्यायो नेता समीरणः । सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात्

॥ २४ ॥

आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः । अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः ॥ २५ ॥

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः । सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ॥ २६ ॥

असङ्ख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः । सिद्धार्थः सिद्धसङ्कल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः

॥ २७ ॥

वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः । वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ॥ २८ ॥

सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः । नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥ २९ ॥

ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः । ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥ ३० ॥

अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः । औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ॥ ३१ ॥

भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः । कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः ॥ ३२ ॥

युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः । अदृश्यो व्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ॥ ३३ ॥

इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः । क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥ ३४ ॥

अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः । अपांनिधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥ ३५ ॥

स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः । वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः ॥ ३६ ॥

अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः । अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥ ३७ ॥

पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत् । महर्द्धिर्ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः ॥ ३८ ॥

अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः । सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिञ्जयः ॥ ३९ ॥

विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः । महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥ ४० ॥

उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः । करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥ ४१ ॥

व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः । परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥ ४२ ॥

रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयोऽनयः । वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः ॥ ४३ ॥

वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः । हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ॥ ४४ ॥

ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः । उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥ ४५ ॥

विस्तारः स्थावरस्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम् । अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥ ४६ ॥

अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामखः । नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥ ४७ ॥

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः । सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥ ४८ ॥

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत् मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥ ४९ ॥

स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत् । वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥ ५० ॥

धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम् । अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥ ५१ ॥

गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः । आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः ॥ ५२ ॥

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः । शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः ॥ ५३ ॥

सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुसत्तमः । विनयो जयः सत्यसन्धो दाशार्हः सात्वताम्पतिः

॥ ५४ ॥

जीवो विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः ।अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः ॥ ५५ ॥

अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः । आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ॥५६

महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः । त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्गः कृतान्तकृत् ॥ ५७ ॥

महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी । गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ॥ ५८ ॥

वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः सङ्कर्षणोऽच्युतः वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः

॥ ५९ ॥

भगवान् भगहाऽऽनन्दी वनमाली हलायुधः आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः ॥ ६० ॥

सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः ।दिवस्पृक् सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः ॥ ६१ ॥

त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक्। संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम्

॥ ६२ ॥

शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः ।गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ॥ ६३ ॥

अनिवर्ती निवृत्तात्मा सङ्क्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः ।श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतांवरः ॥ ६४ ॥

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः ।श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः

६५ ॥

स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः ।विजितात्माऽविधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः

॥ ६६ ॥

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः ।भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥ ६७ ॥

अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः ।अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥ ६८ ॥

कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः ।त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः

॥ ६९ ॥

कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः ।अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनञ्जयः ॥ ७० ॥

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद् ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः ।ब्रह्मविद् ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ॥ ७१ ॥

महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः ।महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥ ७२ ॥

स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः ।पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः

॥ ७३ ॥

मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः ।वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ॥ ७४ ॥

सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः ।शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥ ७५ ॥

भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः ।दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः ॥ ७६ ॥

विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् । अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥ ७७ ॥

एको नैकः सवः कः किं यत् तत्पदमनुत्तमम् । लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥ ७८ ॥

सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी । वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः ॥ ७९ ॥

अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक् । सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥ ८० ॥

तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः । प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृङ्गो गदाग्रजः ॥ ८१ ॥

चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः । चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥ ८२ ॥

समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः । दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥ ८३ ॥

शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः । इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥ ८४ ॥

उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः । अर्को वाजसनः शृङ्गी जयन्तः सर्वविज्जयी ॥ ८५ ॥

सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः । महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥ ८६ ॥

कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः । अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥ ८७ ॥

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः । न्यग्रोधोऽदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ॥ ८८ ॥

सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः । अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥ ८९ ॥

अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान् । अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्धनः ॥ ९० ॥

भारभृत् कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः । आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥ ९१ ॥

धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः । अपराजितः सर्वसहो नियन्ताऽनियमोऽयमः ॥ ९२ ॥

सत्त्ववान् सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः । अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत् प्रीतिवर्धनः ॥ ९३ ॥

विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः । रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥ ९४ ॥

अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः । अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥ ९५ ॥

सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः । स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्वस्ति स्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः

॥ ९६ ॥

अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः । शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ॥९७ ॥

अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणांवरः । विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥ ९८ ॥

उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः । वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः ॥ ९९ ॥

अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः । चतुरश्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ॥ १०० ॥

अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः । जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः ॥ १०१ ॥

आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः । ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः

॥ १०२ ॥

प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवनः । तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥ १०३ ॥

भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः । यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥ १०४ ॥

यज्ञभृद् यज्ञकृद् यज्ञी यज्ञभुग् यज्ञसाधनः । यज्ञान्तकृद् यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥ १०५ ॥

आत्मयोनिः स्वयञ्जातो वैखानः सामगायनः । देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः

॥ १०६ ॥

शङ्खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः । रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥ १०७ ॥

सर्वप्रहरणायुध ॐ नम इति ।

वनमाली गदी शार्ङ्गी शङ्खी चक्री च नन्दकी । श्रीमान् नारायणो विष्णुर्वासुदेवोऽभिरक्षतु ॥ १०८ ॥

श्रीवासुदेवोऽभिरक्षतु ॐ नम इति ।

उत्तरन्यासः, फलश्रुतिः

भीष्म उवाच

इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः । नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् ॥ १ ॥

य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् । नाशुभं प्राप्नुयात्किञ्चित्सोऽमुत्रेह च मानवः ॥ २ ॥

वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात्क्षत्रियो विजयी भवेत् । वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात् ॥ ३ ॥

धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात् । कामानवाप्नुयात्कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात्प्रजाम् ॥ ४ ॥

भक्तिमान् यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः । सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत्प्रकीर्तयेत् ॥ ५ ॥

यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेव च । अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् ॥ ६ ॥

न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति । भवत्यरोगो द्युतिमान्बलरूपगुणान्वितः ॥ ७ ॥

रोगार्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् । भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः ॥ ८ ॥

दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम् । स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ॥ ९ ॥

वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः । सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ॥ १० ॥

न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् । जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ॥ ११ ॥

इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः । युज्येतात्मसुखक्षान्तिश्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः ॥ १२ ॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः । भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥ १३ ॥

द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः । वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः ॥ १४ ॥

ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम् । जगद्वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम् ॥ १५ ॥

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः । वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च ॥ १६ ॥

सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्प्यते । आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥ १७ ॥

ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः । जङ्गमाजङ्गमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम् ॥ १८ ॥

योगो ज्ञानं तथा साङ्ख्यं विद्याः शिल्पादिकर्म च ।वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात्॥ १९ ॥

एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः । त्रींल्लोकान्व्याप्य भूतात्मा भुङ्क्ते विश्वभुगव्ययः ॥ २० ॥

इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् । पठेद्य इच्छेत्पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च ॥ २१ ॥

विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभुमव्ययम् । भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम् ॥ २२ ॥

न ते यान्ति पराभवम् ॐ नम इति ।

अर्जुन उवाच

पद्मपत्रविशालाक्ष पद्मनाभ सुरोत्तम । भक्तानामनुरक्तानां त्राता भव जनार्दन ॥ २३ ॥

श्रीभगवानुवाच

यो मां नामसहस्रेण स्तोतुमिच्छति पाण्डव । सोहऽमेकेन श्लोकेन स्तुत एव न संशयः ॥ २४ ॥

स्तुत एव न संशय ॐ नम इति ।

व्यास उवाच

वासनाद्वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम् । सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥ २५ ॥

श्रीवासुदेव नमोऽस्तु त ॐ नम इति ।

पार्वत्युवाच

केनोपायेन लघुना विष्णोर्नामसहस्रकम् । पठ्यते पण्डितैर्नित्यं श्रोतुमिच्छाम्यहं प्रभो ॥ २६ ॥

ईश्वर उवाच

श्रीरामरामरामेति रमे रामे मनोरमे । सहस्रनामतत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥ २७ ॥

श्रीरामनाम वरानन ॐ नम इति ।

ब्रह्मोवाच

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।

सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः ॥ २८ ॥

सहस्रकोटियुगधारिणे नम ॐ नम इति ।

सञ्जय उवाच

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः । तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ २९ ॥

श्रीभगवानुवाच

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ ३० ॥

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ ३१ ॥

आर्ता विषण्णाः शिथिलाश्च भीता घोरेषु च व्याधिषु वर्तमानाः । सङ्कीर्त्य नारायणशब्दमात्रं विमुक्तदुःखाः सुखिनो भवन्ति ॥ ३२ ॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्

करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥ ३३ ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यामानुशासनिके पर्वणि भीष्मयुधिष्ठिरसंवादे श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों
वेद पाठशालाएँ तथा गुरु-शिष्य परम्परा इकाइयाँ

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

Vedavidya Marg, Chintaman Ganesh, Post. Jawasia, Ujjain 456006 (M.P.)

दूरभाष/Phone : (0734) 2502255, 2502254

E-mail : msrvvpujn@gmail.com, Website - www.msrvvp.ac.in